प्राच्य-भारती

कला, संस्कृति
और साहित्य विषयक मासिकी

वर्ष १ ● अंक ७—१२

शंकरदेव के नाटक

सम्पादक
डॉ० कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध'

प्राच्य-भारती

वर्ष—१ अंक—७-१२



सम्पादक :

डॉ० कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध'



व्यवस्थापक :

बासुदेव गोस्वामी



सहायक :

पीताम्बर मिश्र 'निर्भीक'

बसन्त सिंह 'भारती



मुद्रक :

अजय प्रिण्टर्स

वाराणसी



सम्पर्क-सूत्र :

प्राच्य-भारती कार्यालय

फैंसी बाजार, गौहाटी—१



इस अंक का मूल्य—आठ रुपये

पत्नीप्रसाद-नाट

श्रीकृष्णाय नमः

श्लोकः

लक्ष्म्या श्रोक नतो नतः तव पदे भवभवां भञ्जके।
वन्दे नन्दनिवासवास दनुजश्रीकच्छदागर्वितम्।
पद्मामोदन सुन्दरेन्दु दलितप्राय प्रकाश प्रभो।
भोगव्यालवलावलेप परमाकेनामृतं देहि भोः ॥ १ ॥

[लक्ष्मी के निवास-स्थल (कमल) के समान आप के भव-भंजक चरणों को नमस्कार करने वाले मुझ (सेवक) को, हे नन्द-निवास-वासी, दनुजों के ऐश्वर्य को चूर्ण करने वाले, लक्ष्मी के आमोदकर्ता, पूर्ण चन्द्र के प्रकाश को अपनी प्रभा से दलित-प्राय करने वाले, (सांसारिक) भोग रूपी सर्प को मर्दन करने वाले, परम शक्तिमान प्रभु, आप अमृत (अमरत्व) क्यों नहीं प्रदान करते ?]

सूत्रधार—आहे सामाजिक लोक, जोहि जगतक परम गुरु, पुरूषोत्तम, सोहि नन्दनन्दन रूपे कहों अन्न प्रार्थना छले विप्रसवक कर्म गर्व दूर कयल, पत्नीसवक प्रसाद देलह, बालक सबक षढरस अन्न भोजन करावल; सोहि पत्नीप्रसाद नाम नाट ओहि सभा मध्ये कौतुके करब, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग-कानड़ा -- परिताल

आवत द्विज सब कयो परबेस। तप उपवासे सरिर भेल क्लेस ॥ ध्रु० ॥
हाते गले सिरे रूद्राच्छ झोँटा झोट। भोबकार दाढ़ि गोफ चराचर फौंट ॥
उचारत वेद मंत्र अल्प करि हास। चाँदक जोति दसन परकास ॥
बिन हरि-भकति विफल स्वर्गकाम। हरिक हृदये धरि बोला राम राम ॥१॥२॥

सूत्रधार—ऐसन प्रबेस कय बिप्रसब जज्ञ करिते लागल। तदनन्तरे राम-कृष्ण गोपगन सहिते जैसे प्रवेस कयल, ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग-आसोआरि (आसावरी ?)—एकताल

आवत कानु बेनु बजाइ। चललि संगे गोप हरि गुन गाइ ॥ध्रु०॥
स्याम मुरुति दीपित पीत वास। कण्ठे कदम्ब-माला कयो लय लास ॥
हार मुकुट मनि कुण्डल डोल। कृष्ण-किंकर शंकर ओहि बोल ॥२॥३॥

सूत्रधार—श्रीकृष्ण ऐसन प्रवेस कयेकहों, बलभद्र सहिते, अशोक-मूले रहल। तदन्तर बालकसब गोवर्त्ससबक जलपान करावल। आपुनो जलपान कयल। परम क्षुधातुर हुयो रामत कृष्णत जँसे गोचर कयल, ताहे देखह्-सुनह।

बालकसब -हे राम, हे कृष्ण, तोहों हमार परम जीवन। आजु परभाते भोजन करये नाहि। हामु दधि-अन्न संगे नाहि आनल। क्षुधाये परम पीड़ित हये अछि। इहा जानि क्षुधा निबारन उपाय चिन्तह।

सूत्रधार—बालकसब वचन सुनिये श्रीकृष्ण बिहसि बोलल।

कृष्ण—आहे सखिसब, आः भल्ल कहल। हामो जे बोलों ता सुनह। ओहि आश्रम मध्ये विप्रसब स्वर्गकामे जज्ञ करिते छे। बेद-शास्त्रत पार्गत, परम सम्पन्न। तारासबक आगे, ददार हमार नाम धरि, अन्न प्रार्थना कर गिया।

सूत्रधार—ओहि बुलि श्रीकृष्ण मौने रहल। बालकसब श्रीकृष्ण आज्ञा सिरे धरिकहों, जज्ञसाला प्रवेस भेल। विप्रसबक देखिये नमस्कार करि, कर जोरि जे बोलये लागल, ता सुनह।

बालकसब—आहे गुरुसब, तोरा सब परम पण्डित, जज्ञदान ब्रते परम निर्मल हुया छ। ओहि अशोक-मूले गोपगन सहिते राम-कृष्ण, परम क्षुधातुर हुया, अन्नप्राथि पठावल। जब श्रद्धा आछय अन्न-व्यंजन प्रचुर देवह। अन्न दाने जे पुण्य आपुने जानह, अज्ञान को सिखावह। तोरासबक आगे हामु कि कहब?

सूत्रधार—ओहि बोलि, बारम्बार गोपगने अन्न-प्रार्थना कयल। गुरु सब सुनये नाहि। ओ सुनियो गनागन करये नाहि। सोहि समये एक चन्द्रभारती नामे ब्राह्मण परम क्रोधे जे बोलल, ताहे सुनह।

चन्द्रभारती—आहे गोवालसब, हामु बेद-शास्त्रत परम पार्गत, जज्ञ-व्रत-दाने परम पवित्र, ओ हामु भू-देवता; हामाक सर्वलोके पूजय। नन्दसुत कृष्ण हमाक आगे कोन हय।

सूत्रधार—ओहि बोलि बाह्मण मौने रहल। तदनन्तर सिसुसत्रे अन्यो अन्ये खेद करिते लागल।

बालकसब—आहे सखिसब, ओहि विप्रसब सकल जज्ञ-मूर्त्ति देवक देवता कृष्णक जानये नाहि। ओहिसब परम मुरुख।

सूत्रधार—ओहि बोलि सिसुसबे गयाकहों, कृष्ण आगु जे बोलल, ता देखह्-सुनह।

बालकसब—हे कृष्ण, तोहों हामाक कदर्थना कयल; हेनो अवैष्णव थाने पठावल। आरा कर्म गर्वे परम दाम्भिक। ओ तोम्हार कथा गनये नाहि।

सूत्रधार—ओहि बोलि सिसुसब मौने रहल। तदनन्तर श्रीकृष्ण सिसुसबक जे बोलल, ताहे देखह्-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग-श्री—परिताल

सुनिया सिद्धान्त पाछे दिलन्त माधव। कोन नो प्रार्थिके नाहि पावे पराभव॥
तथापि प्रार्थना नेरे सुना सखिगन। बिप्र-पत्नीसबत मागियो गैया अन्न॥
सितो स्त्रीसब मोर भक्त बिपरीत। देहमात्र गृहत मोतेसे प्राण चित्त॥
ता सम्बात कैबा आमि आसिवार कथा। लागे माने पाइवा अन्न-व्यंजन सर्वथा॥
हेन सुनि लबड़ि गैल गोपगन पाछे। देखिला सकले द्विज-भार्या जेत आछे॥
सबे सालंकृता सुचरिता बर नारी। बुलिबे लागिला गोपसब जानु पारि॥३॥४॥

सूत्रधार—ब्राह्मणीसबक देखिये करजोरि नमस्कार कय, सिसुसब जे बोलल, ता देखह-सुनह।

बालकसब—हे मातासब, ओहि राम-कृष्ण बालकसब सहिते ओहि अशोक-मूले थिक। परम क्षुधातुर हुया तोरासबत अन्न-व्यंजन प्रार्थि पठावल।

सूत्रधार—ओहि सुनि ब्राह्मणीसब परम हरिसे उल्लासि उठल। आगबाढ़ि परम सादरे पुछये लागल। ता देखह-सुनह।

ब्राह्मणीसब—हे बालकसब, सोहि नन्देनन्दन कृष्णक, हामु ओहि चक्षुबे देखब ?

बालकसब—हे मातासब, आः देखब।

सूत्रधार—ओहि सुनि ब्राह्मणीसब परम हरसित मने, श्रीकृष्णक प्रति, परम सुगन्धि अन्न-व्यंजन, पिठा पनस, परमान्न-सुक्लचिनि वहुविध षडरस विचित्र पात्र भरि लैयाकहों जैसे चलल, ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—धनश्री—एकताल

हासि हासि चले माइ, हरि दरसन लाई।
प्रेमे पुलक काइ नयन भुराइते जाइ॥ ध्रु०॥
जाहे नाम सुनि सती न छाड़े भकति रति रे।
पेखवों कमलापति नाचे जैसन सति॥
चले सब सखिगण आनन्दे मगन मन रे।
कृष्ण-किंकर भन गति मेरि नारायण॥ ४॥ ५॥

सूत्रधार—ऐसन प्रकारे ब्राह्मणी श्रीकृष्णक देखिते चलल। सोहि समये, ब्राह्मणसबे जैसे निषेधल, ता देखह-सुनह।

ब्राह्मणसब—आहे ब्राह्मणीसब, तोरासब कि देखल, कि सुनल ? जज्ञ-कार्य परिहरि गोवालक पाछु-पाछु कतिहों जाव ? हा हा तोरासब भ्रष्टा भेलि।

सूत्रधार—ऐसन प्रकारे ब्राह्मणसबे बहुविध बाधा कयल । पितृ-पुत्र-भ्रातृसबे निषेध बोलय । हरि भक्ति रसे, आकुल हुया, तारासब सुनिये नाहि । सोहि समये एक ब्राह्मण ब्राह्मणीक गृह मध्ये आछिते जानि, द्वार बन्ध कय राखल । तदन्तर कृष्ण-दरसन आशा भंगे, ब्राह्मणी कृष्णक चरणे हृदय धरिये जैसे प्राण तेजल, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—वेलोवार——ताल रूपक

हरि पद पेखले न पावलि भाइ । फोकारये घने-घन नयन भुराइ ॥ध्रु०॥
बन्धु बियोग-आगि प्राण फुटि जाइ । अरुण चरण मने रहलि धियाइ ॥
छोड़ि परल प्राण धरि हरि पावे । पावलि गति सती शंकरे गावे ॥५॥६॥

सूत्रधार—ऐसन प्रकारे ब्राह्मणी प्राण तेजल । तदनन्तर ब्राह्मणे देखिये, हा हा बुलि हृदये मुठि हानि ब्राह्मणीक गले बाँधिये, गुन बनाई, जैसे कान्दिते लागिल, ता देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि । इ कथा रहोक । तदनन्तर जे ब्राह्मणीसब, कृष्ण-दरसन आसे चलैछे, तारासबक बहुविध बाधा कय राखिते नाहि पारल । हरि भकतक, जैसे बिघिन लंघये नाहि । तारासब, परम हरिसे, कृष्णक समीप, पावल ।

भटिमा

अशोक बन मह रहल मुरारि । पेखल गैया सब द्विज कुमारि ॥
स्याम सरीर बसन तथि पीत । नव घन जैसे चमके तड़ित ॥
निन्दि इन्दु कोटि वयन बिकास । बन्दुलि अधिक अधर परकास ॥
नासा उन्नत तिल फूल भ्रान्ति । उत्तम मोतिम दसनक पाँति ॥
अरुण नयन दुहुँ पंकज पाता । रुचिकर कर दुहुँ उतपल राता ॥
माथे मयूर पुच्छ अलक कपोल । कर्ने नव दुहुँ उतपल डोल ॥
लम्बित बाहु दुहुँ रतन मोलान । बहल हृदये गेरु करु परिधान ॥
कर कंकन केउर झातिस्कार । गले बनमाला रतनमय हार ॥
रतनक मेखला सोहे कटित । माटि लोट पाट धुति पीत ॥
अरुण चरण दोहों पंकज कोस । रतन मंजीर करय तथि घोस ॥
मानिक उझाइ अंगुलिक पाँति । नखसब चाँद करय तथि कांति ॥
पदतल आरकत पेखि मन मोहे । यव पंकज ध्वज अंकुश सोहे ॥
त्रिभुवन मोहन नटवर बेस । चौभिति बेढ़िया रहु गोप निसेस ॥
लीला पद्म फुरावत हात । पेखल द्विज-बधु सब साक्षात ॥
कोटि मदन आगे नुहि थिव । पेखि जुड़ावत तन मन जीव ॥
अमृत पाने जैसे मिलल आह्लाद । पावल द्विज-बधु परम प्रसाद ॥

कयलि आगु दण्ड परनाम। पूरल सबहु आपुन मन काम ॥
कृष्ण-किंकर कह धरम उपाम। डाकि सबहि बोलहु राम राम ॥६॥७॥

श्लोकः

श्यामं हिरण्य परिधिं वनमाल्यबर्हधातु प्रवाल नट वेशमनुव्रतांसे।
विन्यस्तहस्तमितरेण धुनानमब्जं कर्णोत्पलालककपोल मुखाब्जहासम् ॥२॥८॥

[(भगवान् श्रीकृष्ण) श्याम वर्ण हैं; उनके (शरीर की) दीप्ति-परिधि सुवर्णमयी है; उन्होंने वनमाला, प्रवाल धातु और मयूर-पंख धारण कर नट-वेश का अनुकरण किया है। वे एक हाथ कन्धे पर रखे हुए हैं और दूसरे से लीला-कमल हिला रहे हैं; उनके कर्णोत्पल और अलक युक्त कपोल तथा मुखारविन्द पर हास्य (विद्यमान) है।]

सूत्रधार—ऐसन रूप पेखिये, ब्राह्मणीसब षडरस अन्न कृष्णक आगे निवेदल। दण्डवते पड़ि नमस्कार कयल। उठिकहुँ आनन्द मूर्तिक नयने निरेखिये, हृदये आलिंगन कयकहुँ, परम प्रेमत मौने रहल। तदनन्तर तारासबर प्रेमभक्ति देखिये, श्रीकृष्ण जे बोलल, ताहे देखह-सुनह।

श्रीकृष्ण आहे ब्राह्मणीसब, कुसले आवल। तोहोसब परम भाग्यवती। हामु तोहार कोन कार्य साधों? ताहेक सत्वरे कह। पति-पुत्र-सुहृदसबर बाधा न गनिकहुँ हामाक देखिते आवल। आः तुमिसब भकतर हेनय लक्षण। परम चतुर महा बिबेकी जारासब, तारासव हामाक निष्कामे भजय। तोरासबर प्रेमभकति हामाक बस्य कयल। इदानीक तुमिसबे ब्राह्मणसबर जज्ञस्थाने जाब। हामार ओहि सम्मत।

सूत्रधार– ओहि बोलि श्रीकृष्ण मौने रहल। तदनन्तर ब्राह्मणीसब नैरास बचन सुनि श्रीकृष्णक जे बोलल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग–आसोआरि—मान एकताल

तोहारि चरणे मन मजाइलों मधुसूदन।
कतिना बोलसि नाथ कठिन बचन घन ॥ ध्रु०॥
गृह पति सुत धन सुहृद सोदर जन।
पेखि·बिष सम मन तेजलोहों नारायण ॥
तोहारि किंकरिजन पुनु न करबि छन्न।
कृष्ण-किंकर भन गति मेरि नारायण ॥७॥९॥

ब्राह्मणीसब—हे श्रीकृष्ण! तोहों भक्तवत्सल। वेद-शास्त्रत हामु सुनैछि भकतर नष्ट नाहि। सोहि बचन सफल करह। हामाक तेजब नाहि। सोहि पति-पुत्र सबे हामाक

थान नाहि देव । हामु गृहे कमने बंचब । तोहारि चरण-निर्माल्य तुलसी, ताहेक शिरे धरिकहुँ कहों, दासी हुया रहों ।

सूत्रधार—ओहि बुलि ब्राह्मणीसब, श्रीकृष्ण आगे बहुबिध कातर कय मौने रहल । तदनन्तरे श्रीकृष्ण तारासबक जे बोलल, ताहे देखह-सुनह ।

श्रीकृष्ण—हे ब्राह्मणीसब, तोरासबक पति-पुत्रे असूया करब नाहि । हामु हृदये थाकि अनुमति देउँ । जबे प्रत्यय, ताहाँ जाब, तबे देवतासबक वाक्ये प्रमाण हव ।

सूत्रधार—ओहि बुलि श्रीकृष्ण, देवतासबक आनिये, प्रत्येके जैसे देखावल, ताहे देखह-सुनह ।

देवता—आहे मातासब, तोरासबक काहु ए असूया करब नाहि । हामु देवतासबे जानों ।

सूत्रधार—ओहि बुलि, देवतासब अन्तर्ध्यान भेल । ब्राह्मणीसब देवक बचने कृष्णक छाड़य नाहि । पुनः श्रीकृष्ण बिहसि बोलल ।

श्रीकृष्ण—हे ब्राह्मणीसब, बिदूरे थाकिये श्रवण-कीर्त्तन भक्तिये हामाक जैसे बस्य करय, निकटे थाकिते से मते भकति करिते नाहि पावय; जैसे अमृत पान करिते-करिते मुखे रुचये नाहि । इहा जानि तोरासब शीघ्रे चलह ।

सूत्रधार—ओहि बुलि श्रीकृष्ण मौने रहल । ब्राह्मणीसब कृष्णक बचन बाधिते नाहि पारि । प्रेमे क्रन्दन कय जैसे गृहे चलल, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग–गौरी–ज्योतिमान

मोहे माधव कयलि बंचित, दहे देहासब आगिया ।
लहु लहु धाइ नयन झुराइ, न चले चित्त गृह लागिया ॥ध्रु०॥
कृष्णर चरण तेजि जाइते जैसन जीव जाइ ।
बहुरि नयन चाँद बयन पुनु-पुनु चाहे माइ ॥
कंज-लोचन दुखमोचन कतिहु चरण चलाइ ।
हा हरि हरि बुलिया रहलि कृष्ण-किंकर गाइ ॥८॥१०॥

सूत्रधार—ऐसन प्रकारे ब्राह्मणीसब गृहे गैयाकहुँ, कृष्णक हृदये धरि, अन्येअन्ये कृष्ण गुन श्रवण कीर्त्तन करिये रहल । तदनन्तर ब्राह्मणसब पत्नीसबर परम प्रेमभाव भकति पेखिये, जैसे आपुनाक धिक्कार कयल, ता देखह-सुनह ।

बिप्रसब—हे मिश्र, हे कन्दलि, हे आचार्य, हे भारती, ओहि ब्राह्मणीसब शौचाचारहीन बेद-शास्त्र जानय नाहि । गुरु-सेवा परम धर्म वर्जित । आरासबर श्रीकृष्णत परम प्रेमभकति भेल । आः हामुसब स्त्री तो अधम भेलों । कर्म गर्त्ते अन्ध

हुया, कृष्णक जानिते नाहि पारलों । जे कृष्ण सर्व यज्ञमूर्ति, बेदरो उद्भव भूमि, लक्ष्मी जाहेर चरण-किंकरी, आपुने निजानन्दे पूर्ण, सोहि कृष्ण हामात अन्न माँगि पठावल । हामुसब ताहेर प्रार्थना भंग कयलों । हामुसब ब्रह्मचर्य ब्रत धरि गुरुक शुश्रुषा करि जे बेदसब पढ़लों, इहाक धिक्कार रहोक । आः निज कर्मे बुद्धिहत भेलों । पर उपदेशत बोलछि, इहाक धिक्कार आसोक । आः हामुसब ब्रजक जाइ, कृष्णक देखब । पावे धरिये, कातर करिये, मिनति करब । सोहि भक्तवत्सल देव, हामार अपराध क्षमा करब ।

सूत्रधार—ओहि बुलि, ब्राह्मणसब चलिते निस्चय कयल । सोहि समये एक वृद्ध ब्राह्मण लाठित भार दिये, गृह हन्ते बाझ हुया, जैसे निषेधि बोलल, ता देखह-सुनह ।

वृद्ध ब्राह्मण—हे ब्राह्मणसब, तोरासब गोकुले जाइते चाव ? तोरासब नष्ट भेला । राजा कंसे इहाक जानि सहब नाहि । तोरासबक निग्रहि सर्वस्व आग्रह करि लवब, जाति-कुल नष्ट करब ।

सूत्रधार—ओहि सुनि ब्राह्मणसब भीति हुआ जाइते नाहि पारल । कृष्णर चरणे शरण लैया, कर्म गर्व सब छोड़ि, श्रवण-कीर्त्तन करिये, गृहे रहल । तदनन्तर श्रीकृष्ण बालकसबक षडरस अन्न भोजन करावल । भकत कामद कृष्ण आपुनो भोजन कयल । तदनन्तर परम कौतुके गोपगन सहिते, जैसे गोकुले चलल, ता देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग–श्याम—परिताल

गोपाल संगे चले गोकुल लाइ । बाबे गोपे वेणु धेनु चराइ ॥ध्रु०॥
स्यामल अंग पीत पिचोरा । नव घन जिनि जैसे बिजुरी उजोरा ॥
माथहि खण्ड शिखण्डक लूले । हेरिते हासि भुवन तीनि भूले ॥
गले गुंजा-हार त्रिभंग भाये । अधर मधुर बेणु बजाइते जाये ॥
चरण-पंकज मनि मंजीर बोल । ताहेक मजोक मन शंकर बोल ॥६॥११॥

सूत्रधार—आहे सामाजिक लोक, ऐसन प्रकारे श्रीकृष्ण अन्न-प्रार्थना छले बिप्रसबक कर्म-गर्ब दूर कयल । पत्नीसबक प्रसाद दिहल । ओहि "पत्नीप्रसाद नाम नाट" सम्पूर्ण भेल । इहाक जे सबलोके भक्ति भावे गावे, जे भावना करय, तारासबर कृष्ण-चरणे परम भकति बाढ़व । इहा जानि कृष्णचरणे शरण सार कयकहों । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

इति पत्नीप्रसादनाटकं समाप्तम्

कालिदमन-यात्रा

श्लोकः

मेघश्यामलमूर्तिमायतमहाबाहुं महोरः स्थल—
मारक्तायत कंचलोचनयुगं पीताम्बरं सुन्दरम्।
मुक्ताहीरकहेमहारवलयालङ्कारकान्तिद्युतिम्
कृष्णां शारद-सान्द्र चन्द्र सदृशं हृतपङ्कजेऽहं भजे ॥१॥

[मेघ के समान श्यामल मूर्ति, पुष्ट एवं अजानु बाहु, विशाल वक्षःस्थल, ईषद् रक्त एवं दीर्घ कमलवत् नेत्र-युगल वाले सुन्दर पीताम्बरधारी, मुक्ताहीरक युक्त स्वर्ण-हार एवं वलय (कंकण) नामक अलंकार की कान्ति से सुशोभित, शरद् के पूर्ण चन्द्र के सदृश कृष्ण को अपने हृदय-पंकज में (मैं) स्मरण करता हूँ।]

अपिच

येनाकारि महाहिदर्पदलनं क्रीड़ा हृदित्याजले
येनाभाजि भुजङ्गभोगनिखिलं पद्भ्यां मुदामर्दितम्।
येनामारि महामहासुरचमूश्चक्रं परं लीलया
तस्मै श्रीकरुणामयाय महते कृष्णाय नित्यं नमः ॥२॥२॥

[जिस कृष्ण ने हृदयहारी यमुना-जल मे विशाल सर्पदर्प-दलन की क्रीड़ा की; जिसने भुजंग की सम्पूर्ण सुख-सामग्री को अपने दोनों चरणों से लीला करते हुए—मर्दित कर दिया; जिन्होंने बड़े-बड़े असुरों की विशाल वाहिनी को परम लीला से विनष्ट कर दिया, उस करूणामय महान् श्रीकृष्ण को (मेरा) नित्य नमस्कार है।]

सूत्रधार—ओहि अरकारे श्रीकृष्णक परनाम कयेकहु, सभासद लोकक सम्बोधि बोलल।

श्लोकः

भो!भो सामाजिका यूयं शृणुध्वं मधुरं वचः।
कृष्णस्य कालिदमनं यात्रावार्ता निबोधत ॥३॥३॥

[हे सामाजिक, आप लोग मधुर वचन को श्रवण करें एवं कृष्ण की कालिदमन-यात्रा की वार्त्ता का मनन करें।]

सूत्रधार—आहे सभासद लोक, चे परम पुरुषोत्तम, सनातन नारायण श्रीकृष्ण, ओहि सभा मध्ये कालिदमन-लीला यात्रा, परम कौतुके करब, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

अथ भटिमा

जय जय यदुकुल कमल प्रकासक नासक कंसक प्राण ।
जय जय जगतक भकतक भीति नित्त करु, निरजान ॥
जय जगनायक मुकुति दायक सायक सारंग-धारि ।
दुष्ट अरिष्टक मुष्टिक मोड़न छोड़न बन्ध मुरारि ॥

धरू गोवर्धन बारन बरिषण भेलि इन्द्र मद दूर ।
तृभुवन कम्पक कालि सर्पक दर्पक कयलि चूर ॥
नन्दक नन्दन बंदन देवक सेवक जाकेरि सर्व ।
गोपमुखे अन्न माँगल भाँगल द्विज निज कर्मक गर्व ॥

गोकुल जन जत तारक मारक कुवलय धेनुक-नासि ।
पूतनिका तन सोसन मोसन तोषन मन व्रजवासि ॥
ए दुख दाहक पावक भावक पूरन पुनु मनकाम ।
जग जन जातक पातक घातक जाकेरि ए गुन नाम ॥

जाकेरि भकति रकति सकति तारन ओहि संसार ।
कीट पतंगम जंगम संगम भकतक पाइ निस्तार ॥
सोहि कृष्णक ओहि नाटक उत्पाटक दुख मूल ।
कलिमल-अनल जानल मानल नाहि ओहि तूल ॥

सुन सब लोई होई नोई देखहु बचन बिचारि ।
इह संसारे सार नहि आर चिन्तहु चरण मुरारि ॥
ब्रह्मा महेश्वर चाकर जाकर ताकर गुण मुँह लेहू ।
बान्धव माधव मुकुति साधव ताहे चरण चित देहु ॥

ओहि ईश्वर तारक मारक कारक सब संसार ।
ताहे करू सेव देव नाहि केअ नाहि हरि बिने आर ॥
जत ये परमा धरमा करमा सबकहूँ राजा राम ।
कृष्णक किंकर किंकर शंकर कहसब बोलहु राम ॥१॥४॥

सूत्रधार—आहे सभासदलोक, जे जगतक परम गुरु परम पुरुष पुरुषोत्तम सनातन, ब्रह्मा महेससेवित चरन-पंकज नारायण श्रीकृष्ण ओहि सभा मध्ये, कालिदमन नाम लीलायात्रा, कौतुके करब; ताहे सावधाने देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि । [आकासक कर्ण दिया ।]आहे संगी, कोन वाद्य सुनिये ।

संगी सखि, मृदंग बंसि ध्वनि सुनिये । आः मिलल मिलल ।

श्लोकः

गोवत्सान् पुरतः कृत्वा गोपालः पालकः सताम् ।
प्रवेश मकरोत् गोपैः सह वेणुं निनादयन् ॥४॥५॥

[सज्जनों के रक्षक गोपाल (कृष्ण) ने बछड़ों को आगे करके वेणु बजाते हुए ग्वालों के साथ प्रवेश किया ।]

सूत्रधार—आहे सामाजिक लोक, हामु जे कहल, सोहि ईश्वर श्रीगोपाल वत्स-वत्सपाल सहित एथा प्रवेसिकहुँ, जैसे लीला कौतुके करव, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग-सिंधुरा—एकताल

आवत ए कानु सुरभि चराई । रंजित धेनु रेनु बेनु बजाई ॥ध्रु०॥
सिरे सिखराडक गराड कुराडल डोलावे । उरे हेमहार हीर मंजिर झुरावे ॥
बालक बेढ़ि खेड़ि खेलाइते जाय । कहतु शंकर गति गोविन्द पाय ॥२॥६॥

सूत्रधार—ऐसन लीला कौतुक नृत्य करिते, गोपाल सहित, सिसुसव कालिन्दि ह्रदक समीप पावल । से बिष मय पानि न जानि, परम पिपासे से पीड़ित हुया, सबहु ह्रदक जल उदर भरि पान करल । तत्काल दुर्घोर विष-ज्वाला लागिये चेतन हरल; शरीर कम्पि-कम्पि प्राण छाड़ि, वत्स-वत्सपालसव कालिन्दि तीरे परल ।

श्लोकः

वत्सकान् बालकान् कृष्णो विलोक्य मृतकांस्तदा ।
चकारं प्रचुरं खेद्मद्भुतं भक्तवत्सलः ॥५॥७॥

[तब भक्तवत्सल कृष्ण ने मृत बछड़ों और बालकों को देख कर प्रचुर एवं अद्भुत खेद किया ।]

सूत्रधार—तदनन्तर, वत्स-वत्सपालसब विष जल पाने मृतक पेखि, श्रीकृष्ण हा हा कि भेलि बोलि धरिकहु, उलट-पालट करि देखल । निरन्तर प्राणे मरल, हा हा हामार भकतक ऐसन अवस्था बोलि, से भक्तवत्सल गोपाल, बहुत खेद कयकहुँ, अमृत-दृष्टि निरेखि, ततकाल जियावल ।

श्लोकः

कृष्णस्यामृतदृष्ट्यालम् लब्धप्राणाः कुमारकाः ।
प्रीतास्ते चरणौ नेमुर्यथा स्वप्नात् समुत्थिताः ॥६॥८॥

[कृष्ण की अमृत-दृष्टि- निक्षेप से ही मृत गोपगण पुनरुज्जीवित हो उठे और उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक कृष्ण-चरणों में इस प्रकार नमस्कार किया, मानों स्वप्नावस्था से उठे हों।]

सूत्रधार—कृषक अमृत निरखन पाइ, पुनर्बार प्राण आवल। वत्स-वत्सपालसव स्वप्नर जागि , जैसे उठि बैठल। अन्यो अन्ये कहै छे।

वालकसब—आहे सखिसव, देखो ओहि विष जल पाने प्राने छाड़ि मरल। कृषक प्रसादे पुनर्बार वर्त्तल।

सूत्रधार- ओहि बोलि, परम प्रीति हुया, कृष्णक चरणे परनाम कय बोलल।

बालकसब—आहे स्वामि! ओनि विष पानी पिये प्राने मरल। हामि तोहाक प्रसादे पुनर्बार उपजल। तोहारि चरन-सेवाक महिमा कि कहब स्वामी।

सूत्रधार—श्रीकृष्ण सबा के आलिंगि आश्वास कयल।

श्लोकः

तत्रकालियभुजगं भगवान् भवभावनः।
दूरीकर्त्तुं मनश्चक्रे ह्रदाद्दैत्यनिषूदनः ।।७।६।।

[उस समय दैत्य-विनाशक, जगत्प्रिय भगवान् कृष्ण ने कालिय नाग को (यमुना-जल से) दूर करने का निश्चय किया।]

सूत्रधार- दुरन्त विष-वीर्य प्रतापे प्रचण्ड कालि सर्पक दूर करते प्रवन्ध कयकहुँ पीत वस्त्र कटित मेह्लावल। कदम्ब वृक्षे चड़िकहुँ, विषमय कालिह्रदत झाम्प कयल। से अनन्त वीर्यक प्रचण्ड प्रतापे, ह्रदक उर्मि उठलि, आन्दोलन मिलल। श्रीकृष्ण परम कौतुके जल माझे जैसे केलि करल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग-कान्हड़ा —परिताल

कालिन्दि जल मँह खेले यदुराया।
बालके बेढ़ि बंसि बजाया। नाचे जैसे कानु चरण चलाया ।। ध्रु० ।।
नील तनु तथि पीत पिचोरि। नव घन जैसे चमक बिजोरि ।।
कौस्तुभ कराठ कोटि नव सूर। कुराडल झलमल झनके केयूर ।।
जल माझे दुहु बाहु आस्फालि। क्रीड़ा करतु बारि बनमालि ।।
उर्मि उथलि ह्रद करू, रोले। कृष्ण-किंकर शंकरे बोले ।।३।।१०।।

सूत्रधार—श्रीकृष्ण ऐसन जल केलि करिते, ह्रदक परम आन्दोल मिलल। प्रचण्ड उर्मिक रोल बहुत दूर गेल।

श्लोकः

निशम्य ह्रदनिह्लादं सम्वादमियमद्भुतम् ।
आगत्य त्वरितं कालिः क्रोधेनादंशदच्युतम् ॥८॥११॥

[ह्रद-आह्लाद (के) इस अद्भुत संवाद को सुनकर कालिय नाग ने शीघ्र ही आकर क्रोध से श्रीकृष्ण को दंशित कर दिया ।]

सूत्रधार—तदनन्तर ह्रदक आन्दोल-कल्लोल-रोल सुनिये, कोपे कम्पमान, परम दर्पे सर्पराज कालि कोपे; जैसे खेदि असिकहुँ, मर्मस्थाने श्रीकृष्णक दंसि, लाजे मेह्लावल, आहे लोक, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग-आसोआरि-परिताल

आवे काल कालि बलिआरा । करतु तोलि फेट फोतकारा ॥ध्रु०॥
गरजि दर्पे सरप बिसाल । पेखि निरेखय रूप गोपाल ॥

सूत्रधार—घनश्याम पीतवास, श्रीवत्स-कौस्तुभ, किरीट-कुण्डल, केयूर-रंजित गोपालक परम कमनीय रूप निरेखि, खंगे जैसे मर्म थाने श्रीकृष्णक दंसल, ता देखह ।

कौतुके करतु केलि बनमालि । मरम थाने खेदि दंसल कालि ॥
बेढ़ल लांजेहि भुजंग प्रबन्धे । रहल गोपाल पड़ि सर्पक बन्धे ॥४॥१२॥

सूत्रधार—परम ईश्वर श्रीगोपाल, मनुष्य चेष्टादरसि, बिष लागि मृतक स्वभावे, सर्पक बन्धने पड़ि रहल । ताहे पेखि सिसु सब प्रान अन्तरिक्ष भेल । हा हा स्वामि, कि भेलि, हामाकि प्राने जियाइ तोहों आपुनो मरल, तोहों विने कैसे हामु जीवन राखव बोलि, कृष्णक मुख निरेखि, बहुत बिलाप करिये, ह्रदक तीरे रहल ।

श्लोकः

ततो नानाभुतं दृष्ट्वा ब्रजे नन्दादयस्तदा ।
कृष्णो मृतः इति मत्वा तं द्रष्टुं ययुराकुलाः ॥९॥१३॥

[तदनन्तर, ब्रज में नन्द आदि इस अद्भुत वार्ता को सुन कृष्ण को मृतक समझ कर उन्हें देखने को व्याकुल होकर (वहाँ) गये ।]

सूत्रधार—तदनन्तर, गोकुल नाना विमंगल मिलल । घन घन भूमिकम्प जाइ, निर्घात पड़े, घरे-घरे फेरुआ आराव करे, अनबायु वृक्षसब उभरि परे, स्त्रीक दक्षिण पुरुषक बाम फन्दे । ताहि पेखि सब लोक महाभीत भेल । जसोदाक हृदय काम्पे, हा हा प्राण-पुत्र गोपालक मरन मिलल बोलि, हृदये मुष्टि हानियेकहु श्रीकृष्णक देखिने, गोप-गोपी सहित नन्द-जसोदा वृन्दावन प्रवेसि, जैसे चलिलि, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—श्रीगौरी—परिताल

जसोदा आवे आकुलि सोके । फोकारे दुखिनी, जते गोपिनी संगे चललि तापे ।।ध्रु०।।
ध्वज बज्र पंकज देखिते दहे आगि । डाके रे गोपाल प्रान गयो काहां लागि ।।
न रहे संतापे प्रान देखु अँधिआरि । कहतु शंकर गति मुकुति मुरारि ।।५।।१४।।

सूत्रधार—ऐसद परम संतापे विलाप करि, गोपालक खोजगोड़ि जाहिते, गोप-गोपी सहित नन्द जसोदा ह्रदक तीरे पावल। बिदूरते देखल गोपसिसु सब ह्रदक निरेखि, आरावे क्रन्दन करै छे। ताहे पेखि- परमआकुल भावे, लवणि जाइ देखल, कि भयंकर सर्पक वन्धे पड़ि, श्रीकृष्ण मृतक भावे रहै छे। चक्षुत निमेष नाहि, दसन निस्पान नासात बाउ खेले नाहि, ताहेक पेखि, गोप-गोपीक धातु अन्तरिक्ष भेल। हा कृष्ण हा कृष्ण बोलि, परम उर्मि कये, क्रन्दन करिते लागल। नन्द-जसोदा मृतक पुत्रक मुख निरेखि, प्रान अन्तरिक्षे दिस दस आँधारि पेखि, सोक झमके मूच्छित हया पड़ि रहल।

श्लोकः

ततः कृष्णमुखं वीक्ष्य गोप्योविरहकातराः।
रुरुदुः सस्वरंतीव्रं शोकशल्येन धर्षिताः ।।१०।।१५।।

[इसके उपरान्त गोपियाँ कृष्ण-मुख को देख विरह-कातर हो शोक-शल्य से पीड़ित होकर उच्च स्वर से विलाप करने लगीं।]

सूत्रधार—तदनन्तर, गोपीसब कृष्ण शोकशाल्ये पोड़ित हुया, प्रान धरये न पारि। प्रान गोपालक मुख निरेखिते नयनक नीर धारे बहि जाइ। आर्त्तरावे माटि लोटि क्रन्दन करिये बोलल।

गोपीसब—हे प्राने-बन्धु माधव, हामु किंकरीसबक छोड़ि, कैसे चलै छे ! हे नाथ, हामाक संगे निआ जाव। तोहों बिने जीवन नाहि धरब। स्वभावे मरब। कि निमित्ते हामाक छाड़ह ? ओहि चाँद वदन ना देखिये, कैसे प्रान राखब ?

सूत्रधार—ओहि बोलि, कृष्णर मुख निरेखि, जैसे विलाप कयल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—कौ—परिताल

देखो रे देखो, बन्धु माधव हे, तुहु बिने जीवन न रहे।
तेरि सोकानल सरीर बिकल, बन्धु बिरहे हृदय दहे रे ।। ध्रु० ।।
गृह मोहि हेरि सब तेजिये, तेरि चरने सरन लैलों।
कयो सब नास तुहुँ तेजि आस अब अनाथिनी भैलों रे ।।

बंसी स्वन सुनि आसिये गोपिनी काहेरि हेरब मुख।
कमल नयने निरेखिये कोने हरब दुख रे॥
कृष्ण सोकानल सरीर बिकल अधिके दगधे प्रान।
चेतन हरय मुरुछि परय कृष्ण-किंकर एहु भान रे॥६॥१६॥

सूत्रधार—ऐसन परम संतापे विलाप कय गोपीसब, कृष्णक सोके अचेतन होई, मूर्च्छित हया परल।

श्लोकः

यशोदा चेतनां प्राप्य पतिना सह सा भृशम्।
रूरोद दुःखशोकार्त्ता पुत्रस्य पश्यतीमुखम् ॥११॥१७॥

[चैतन्य होने पर यशोदा पतिसहित दुख-शोकार्त्त पुत्र-मुख को देखती हुई विलाप करने लगी।]

सूत्रधार—तदन्तर किंचित चेतना लभिये, जसोदा पुत्र सोकानले सरीर दाह करे, पुत्र मुख निरेखि बोलल।

यशोदा—आहे प्रान-बन्धु मधाइ, कत तपसायि तोहाक पुत्र पावलों। अल्पते अनाथिनी कय, हमाकं काहे तेजल ? देखो, तोहारि सन्तापे जीव रहये नाहि। हा हा ओहि चाँद बदनक, काहेक निआ देलां। हामार पुत्रक के निआ जाई ? गोधूलि आजु बंसी बजाइ, के ब्रजक जावब ? काहेक धूला झाड़ि, बोके बान्धि कोले धरब ? काहेक गोरस पान कराअब ? कि भेलि आजु कृष्णक, मोर बाप ? काहा गेलि, एड़ाओं ओहि तोहारि सन्ताप।

सूत्रधार—ऐसन पुत्र-शोके, तापित हुया जसोदा जैसन करुन विलाप कयल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—कौ—जोतिमान

ए सुत माधव! हे कि मेरि कपाल ?
कहरि दारुन सर्पे तेरि भैल काल॥ ध्रु०॥
काहा जाअ अगिनि जालिया मेरि गाव ?
के ना आसि हामाक बोलब अब माव ?
धूला झाड़ि काहाक धरब बुके तुलि ?
हृदय धाकुड़े जसोमति ओहि बुलि॥
ए गृह गोधन धन संचो कार तरे ?
के ना पान करब गोरस मेरि घरे ?
मधुर अधरे धरि बजाइते बेनु ?

चारब बिहाने के ना मेलि मेरि धेनु ?
किना दोसे प्रानुपुत्र तेजलि हामारि ?
हरइ चेतन दिस देखों आँधिआरि ॥
तोहारि जननि हेरा मरि जा तापे ।
कहतु शकर जसोमतिक सन्तापे ॥७॥१८॥

सूत्रधार—ऐसन परम बिलाप कय, जसोदा डाकि बोलल ।

यशोदा—अये क्रूर पापी सर्प, पुत्रक प्रान लेलि । आहेक संगे दंसि हामाक मारह ।

सूत्रधार—ओहि बोलि, कृष्णक सोके प्रान धरये नाहि पारि । गोप-गोपी सहित नन्द-जसोदा, हा कृष्ण हा कृष्ण बोलि, ह्रदत झाम्प दिते जाइ, ताहे पेखि बलभद्र रह-रह आगभेंटि निवारि बोलल ।

बलभद्र—आहे पितृ-मातृ, गोप-गोपीसव, कि करिते चाव ? रह रह, किछो चिन्ता नाहि । तुहुँसब किछो जानये नाहि । ओहि दुष्ट सर्पक दण्ड करिये, एथा हन्ते खेदाया श्रीकृष्ण एइ क्षण आवब । तोहोंसब कौतुक देखह, बैठि रह ।

सूत्रधार—तदन्तर बलोक वाक्के व्रजबासीसव, किछो सान्त हया परिवर्त्ति, निझम परिये, कृष्णक मुख निरेखिये रहल ।

श्लोकः

दृष्टवा विषादं गोविन्दो भक्तानां भक्तवत्सल ।
आस्फोटय सहसोत्तस्थौ विमुक्तः सर्पबन्धनात् ॥१२॥१६॥

[भक्तवत्सल गोविन्द भक्तों का विषाद देख कर सर्प-बन्धन को तोड़ उससे विमुक्त होकर सहसा उठ बैठे ।]

सूत्रधार—मनुष्य चेष्टा दरसिये, श्रीगोपाल दुइ दण्ड सर्पक बन्धने पड़ि रहल । तदन्तरे गोप-गोपीसबक परम बिषाद-दुख देखिये, श्रीकृष्ण आचोट कय उरूफाल देहल । कालि सर्प परम चोट पाइ, कृष्णक छाँड़ि उफड़ि पड़ल । हजार फन तुलि, कृष्णक चाइ फोफाइ, कोपे चक्षू आरकत जिह्वए कवारि छेलेकय, नाके-मुखे बिष-बह्नि बरिसब पेखि श्रीकृष्ण परम आटोपे कालिक आस्फालल । ताहेक बेढ़ि; चक्राकारे, चमत्कारे, पाक फुरिते लागल से । अनन्तवीर्य कालि महा फोत्कार करिये कृष्ण सम्मुखे भरमय । ताहेक पेखि जगतनाथ लीलाये कालिक माथे आडम्बरे चढ़ल ।

श्लोकः

ततः शिरांसि सर्पस्य पद्भ्याभामादर्य माधवः ।
ननर्त्त लीलया सर्व्वकलादिगुरीश्वरः ॥१३॥२०॥

[तदनन्तर सभी कलाओं के आदि गुरु के स्वामी श्रीकृष्ण नाग की शिराओं को चरणों से मर्दित करके लीला से नर्त्तन करने लगे ।]

सूत्रधार—तदन्तर कालिक माथे चढ़ि, श्रीकृष्ण दुइ पावे फनाक मर्दिये नृत्य आरम्भल । से समये गन्धर्व विद्याधर सब आसिकहुँ, ताल करताल ठुकि मृदंग बजावय । ताहेक भाव लया श्रीकृष्ण जँसे कौतुक नृत्य कयल, ता देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—गौरी—दोमानि परिताल

काला कानु नाचे चरन चलाइ ।
करतु कौतुक नृत्य केशव, अरुण चरण चलाय रे ।
देव मुनि सिरे सिरिस बरसे, हरिसे हरिगुन गाय रे ।। ध्रु० ।।
काल कालिक माथे चढ़ि भरि पीड़ि क्रीड़ि कानु नाचे रे ।
मृदंग दिमि दिमि नाद दुन्दुभि सिद्ध सब बाय काचे रे ।
पाक फिरि फिरि भिरि भिरि पाये सिरे सिरे पारे डेव रे ।
अंग भंगिम रंग कौतुके नाचत ए आदि देव रे ।।८।।२१।।

सूत्रधार—ऐसन जगतक परमगुरु नारायण श्रीगोपालक भार सहिते न पारि, कालि अचेत भेल । परम पीड़ात घाड़ ओलमल, नाके-मुखे रुधिर छान्दे, महादुखे अन्धकार देखे । जत मद गर्व-दम्भ-दर्प सर्पक सब चूर भेल । वाक्य मुखे हरल । ऐसन परम गुरुक आपद-औषद पाइ, कालिक मन निर्मल भेल । नयनर नीर निझरय । कृष्णक परम ईश्वर पुरुष जानि मन शरण लेलह ।

श्लोकः

नागपत्न्यः पतिं वीक्ष्य मुमूर्षुं गतचेतनम् ।
तुष्टवुः कृष्णमभ्येत्य भर्त्तुविरह कातराः ।।१४।।२२।।

[नाग-पत्नियाँ अपने चेतनाशून्य पति (कालिय) को देख कर मूर्छित हो गईं और प्रिय-विरह से कातर गोपियाँ कृष्ण को पाकर (जीवित देखकर) प्रसन्न हो उठीं ।]

सूत्रधार—कालिक भार्या, जत नागनारी सब स्वामि मरय देखि, परम सन्तापे आकुलमति हुया, हृदये मुष्ठि हानय, नयनक नीर झुराये, हा स्वामि हा स्वामि बोलि, सिसु सब आगु करिये, जँसे बिलाप करिते आवे, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—बेलोवार—ताल रूपक

नागनारी आवयी अवनत काइ ।
तापित तनु मनु नयन झुराइ ।। ध्रु० ।।

पिउक सन्ताप ताप प्रान फुटि जाइ।
फोकारय घने मन चेतन नाइ॥
परिये हरिक आगु कर, परनाम।
कहतु शंकर गति गोविन्द नाम॥ ९॥ २३॥

सूत्रधार—ऐसन परम सन्तापे, कृष्णक आगु पड़ि, परनामि, नाग-पत्नी सब कर जोड़ि, स्वामिक दुख-मोक्षन मने तुति आरम्भल।

पयार

घोर अपराध आचरल ओहि चण्ड।
दिहिला इहाक हरि समुचित दण्ड॥
पुरान पुरुष तोहों सनातन हरि।
आछा देव दुष्टक दण्डिते अवतरि॥

इतो दण्डे स्वामि ओहि एड़ाइला पातक।
बरतो अधिक देखों तोहारि क्रोधक॥
इतो पाद-पंकजर पाइला धूलाचय।
कि हेतु इहार हेन भेल भाग्योदय॥

लक्ष्मी ब्रह्मा महेस प्रभृति देवगने।
इतो पद-रज खुजि न पावे जतने॥
तामसिक क्रूर क्रोधि कालि सर्प जाति।
कि मते पाइलेक इतो पद-धूला आति॥

नमो नमो अनन्त सर्कात नारायन।
कारनरो कारन तुमिसि अकारन॥
नाहि आदि अन्त मध्य परिछिन्न जार।
पूर्णानन्द देव हेरा करों नमस्कार॥

नमो नमो अतर्क महिमा देव हरि।
जगत के बियापि आयुनि आसा धरि॥
तुहों सर्व साखि राखियाछा प्राणिचय।
तोहातेहें हन्ते होवे सृष्टि स्थिति लय॥

जाहेर चारिओ मुख्य मूर्त्ति अनुपाम।
राम काम अनिरुद्ध वासुदेव नाम॥
हेन भगवन्त कृष्ण देवतार देव।
तोहारि चरने करों लक्ष कोटि सेव॥१०॥ २४॥

सूत्रधार—ऐसन तुति करिकहुँ, नागनारी सब सकरुन भावे, कृष्णक कार्पन्य करिते लागल ।

नागनारी—हे परम ईश्वर, तोहारि पद-प्रहारे स्वामि मरि जाइ । ओहि दुर्जने, तोहाक न जानि दंसल । इहाक दोष बारेक मरस गोसाँइ । तोहारि आगु क्षुद्र पतंग, आहेक मारि कौन जस साधय । देखो, स्वामिक प्रान रहे नाहि । जत लागे माने सास्ति पावल । हे परम ईश्वर श्रीकृष्ण, अब कृपा करू, हामाक अनाथ करबि नाहि । तोहाक आगु आँचोल पाति, पति-दान मागों ।

सूत्रधार—ओहि बोलिते नयनक नीर झुरे । पतिक सन्तापे नागिनी सब जैसे बिलाप कयल, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—सुहाइ—जतिमान

अब करुणा करू कृपाल गोपाल ।
तेजइ जीवन स्वामिक मिले काल ।। ध्रु० ।।

तोहों नाहि जानिये दंसल ओहि चण्ड ।
समुचित ओहिक कयलि देव दण्ड ।।
तुआ पावे विदित सतिक पति प्रान ।
आँचोल पातिया आमि मागों स्वामिदान ।।

तेजइ जीव पिव प्रान टुटि जाइ ।
पापिक दोष सब मरस गोसाँइ ।।
करि कातर विलपति परि नारि ।
कह शंकर अब उद्धारु मुरारि ।। ११ ।। २५ ।।

सूत्रधार—नाग-नारी सब ऐसन स्वामिक सन्तापे, बिलाप करिकहुँ, कृष्णक आगु परि रहल । नयनक नीर झुरे, 'हा स्वामि बोलि', हृदये मुठि हानि, आर्त्तराव करिये थिक ।

श्लोकः

निशम्य नागनारीणां करुणां कमलेक्षणः ।
कालिय-शिरसः कृष्णः कृपयावततार सः ।। १५ ।। २६ ।।

[नाग-नारियों के करुण विलाप को सुनकर कमल-नयन कृष्ण कृपापूर्वक कालियनाग के सिर से उतर गये ।]

सूत्रधार—तदन्तर नागवधू सबक परम सन्तापे देखिये, श्रीकृष्णक कृपा उपजल । से नागनारी सबक सम्बोधि बोलल ।

कृष्ण—आहे कालि-भार्या, नागिनी सब, सन्ताप छोड़ह ।

सूत्रधार—आहि बोलि, डेव दिआ नामि, सर्पक फना हन्ते, अन्तर हुया रहल ।

श्लोकः

ततो विमूर्च्छितः कालिः शनैः सम्प्राप्य चेतनाम् ।
तुतोष शिरसा नत्वा मत्वाकृष्णं महेश्वरम् ।। १६ ।। २७ ।।

[तदनन्तर संज्ञाहीन कालिय नाग धीरे-धीरे चेतना प्राप्त करके कृष्ण को महेश्वर समझकर नतमस्तक प्रणाम करके सन्तुष्ट हुआ ।]

सूत्रधार—यमपुर पाइ, कथंकथमपि प्राने निबर्तल । महापीड़ा पाइ, फोफाअत । आपद-औषधि पाइ, सर्पक दर्प चूर भेल । चित्त शान्त हुया । आँखि मेलि, कृष्णक आगु देखिये बोलल । ओहि कोटि ब्रह्माण्ड ईश्वर नारायन जानि, 'त्राहि-त्राहि स्वामि कृष्ण बोलि', सिरे चरन परसिये, परनाम कयल । पश्चात् जानु पारि, कर जोरि, स्तुति आरम्भल ।

पयार

जय जय जगत महेश्वर । ब्रह्मा संकर जाहे किंकर ।।
जय भकतक भय-हारि । नमो हरि चरन तोहारि ।।
तव पावे अतए साधि । मञि पापी अपराधी ।।
दंसलु देव न जानि । मरसु दोस पद्म-पानि ।।
क्रूर सर्प अहंकारि । स्रजना तोहारि मुरारि ।।
मोहल मन तुव माया । आजु कयलि देव दाया ।।
गरब गुचावलि मोर । बिसय आपद घोर ।।
दूर कर अब मोइ । चिन्तों चरनक तोइ ।।
देहु हरि मोहि ओहि सिच्छा । माँगिये भुंजब भिच्छा ।।
भरमो तुआ गुन गाइ । करहु अतए करूणा गोसाइँ ।।१२।।२८।।

कालि—हे परम पुरुष नारायन श्रीकृष्ण, ओहि परम आपद बिसय-जंजाल दूर रहु । गले कन्या बान्धि, भिक्षा माँगि, तोहारि चरन चिन्ति, गुन नाम गाइ ड़ाओं ।

सूत्रधार—ऐसन बोलि, कालि त्राहि-त्राहि बोलि, कृष्णक आगु परल ।

श्लोकः

वीक्ष्य भक्तितस्तस्य तुष्टः कृष्णो जगाद तं ।
मा भैर्भुजग तीर्णोऽसि ममामायां दुरत्ययाम् ।।१७।।२९।।

[तदुपरान्त कालियनाग के भक्तिभाव से प्रसन्न हो कृष्ण उससे बोले—हे भुजंग, अब भय मत करो। तुमने मेरी दुर्लंघ्य माया को पार कर लिया।]

कृष्ण—आहे कालि, सर्पराज, तोहों भय करबि नाहि। हामाक प्रसादे, ओहि माया-संसार तोहों निस्तरल। साम्प्रत ओहि यमुनाक ह्रद छोड़ि तोहारि पूर्व स्थान रमनक द्वीप, ताहेक लागि सपरिवारे चलह। एइ चलह। गरूणक किछो संका करबि नाहि। हामारि चरनक चिह्न ध्वज-वज्र-पंकज-यव तोहारि फनात लागि रहल। ताहे पेखि, हामाक भये, गरूड़े किछो करब नाहि। विलम्ब छोड़ि, एइ चलह।

श्लोकः

निशम्य निर्भयां वाणीं कृष्णस्य भुजगस्तदा।
नत्वा सपरिवारेण ययौ रमणकं मुदा ॥१८॥३०॥

[तदुपरान्त कालिय नाग कृष्ण से अभय वरदान पा सपरिवार उन्हें प्रणाम कर सानन्द रमणक द्वीप को चला गया।]

सूत्रधार—श्रीकृष्णक परम निर्भय वाणी सुनिये, महा हरिसे कालि सपरिवारे, कृष्णक प्रनाम कयल। चरणक धूलि लेलह। हे स्वामि कृष्ण बिदाय कयल बुलि, प्रेमे सलोतक नयने, जैसे चलल ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—कान्हड़ा

कृष्णक चरने करिये बिदाइ।
चललि कालि रमनक लाइ ॥ ध्रु० ॥
फना मनि झिकमिक करि परकासे।
नाग-रमनि चलय लय लासे ॥
जाहिते हरिसे हरिगुन गावे।
कह शंकर गति गोविन्द पावे ॥१३॥३१॥

सूत्रधार—ऐसन परकारे कालिक दमिये, ह्रद हन्ते दूरि करिकहुँ, श्रीकृष्ण कौतुके कालिन्दि तीरे आवल। देखि आनन्दे गोपीसब जय कृष्ण बुलि बेढ़ल। मुख-पंकजक, जैसे नयन-भ्रमरे पान करैछे। नन्द-यशोदा बाहु मेलि, गले बाँधि धरल। छने छने सिर सूँघि, लोत के सरीर तियावल। गदगद वाक्ये बोलल।

यशोदा—आहे पुता, कि निमित्ते ह्रदक झाम्प देलह? अ: हामाक मारिते चाअल? तोहारि सन्तापे आजु प्रान छाड़ल होइ।

सूत्रधार—ओहि बुलि, मृतक पुत्रक पाइ, परमानन्दे नन्द यशोदा रहल। तदनन्तर कृष्णक प्रभाव जानि, हासि हासि आसि, बलभद्रे आलिंगि धरल। ऐसन

परकारे कृष्णक आवरि कौतुके हासिते मातिते, दिवस अवसान भेल। राति मिलल। ताहे पेखि, श्रीकृष्ण बोलल।

कृष्ण—हे माता, हे पिता, हे गोपगोपीसव, आज रात्रि व्रज जाइते पारये नाहि। जव सवेहि भल्ल देखह, तवे एथाते रजनि वंचह।

सूत्रधार—श्रीकृष्णक ऐसन वाक्य अनुमानि, जत गोकुलवासी सब यमुनाक तीरे सुति रहल। क्षुधाये तृसाये, हारासास्थि हुया, निर्भय निद्रा गेलह।

श्लोकः

ततो लोकाः समुत्तस्थु वेष्ठिता वनवह्निना।
चुक्रुशुः कृष्ण: कृष्णेति त्राहि त्वं निजकिङ्करान् ॥१६॥३२॥

[रात्रि में उस स्थल को वनाग्नि से परिवेष्ठित देख सब उठ बैठे और पुकारने लगे कि हे कृष्ण, अपने सेवकों की रक्षा कीजिए।]

सूत्रधार—तदन्तर, निद्राते व्रजवासिक वनाग्नि बेढ़ल। ताहेक प्रचण्ड सबद सुनिये, निद्रा भंग भेल। विस्मय हुया जागल। प्रचण्ड बह्नि देखिये सरीर काम्पे। परम तस्त्र हुया, त्राहि-त्राहि कृष्ण बोलि, सब कोलाहल करिते लागल।

गोपगोपीसब—हे अनाथक नाथ, हे दीनदयाल स्वामि कृष्ण, हामाक ओहि सरीर अवश्यक परब; इहाक चिन्ता नाहि नाथ। ओहि संसार-तारक तोहारि अरूण चरण ताहे पुनर्बार नाहि देखब। ओहि दुखानले हृदय दाह करे।

सूत्रधार—ओहि बोलि, जैसे आर्त्तरावे क्रन्दन कय लागल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—श्रीगांधार—परिताल

आबे हरि हरि गोपाल, प्रान मिले मरन हामारू रे।
अरन्य अनले दहे, मधाइ उद्धारू रे॥ ध्रु०॥
नाहि नाहि दुख, मोहि जीव जब जाइ।
ना चिन्तित हामु, ओहि मरनक लाइ॥
अरूण चरन आरू, न देखों तोहारि।
ओहि दुख दहे देहा, मधाइ हामारि॥
आरावे कातर करे, ए बन्धु मधाइ।
बाप चाप समिप खानिक थाको चाइ॥
आजु आसा दुर गेल तुव दरसने।
कहतु शंकर गति गोविन्द चरने॥१४॥३३॥

गीत

राग—भाठिआलि [भटियाली !]

त्राहि त्राहि हेर, प्रान नारायन; हरि, ए बाप, सरने पसिलों ।
बन बन्हि दहे, न रहे जीवन; आबेसे नासिलों ॥ ध्रु० ॥
नाहि ओहि सोक, मरन मिलोक; आरे ना चिन्तिहों हामि ।
तोमार अरुण, चरण-पंकज; पुनु ना देखब स्वामि ॥
सन्निहित चाप, गोपाल ए बाप; खानिक देखिये थाकों ।
कमल नयन, ए ब्रज-जीवन; तोरे भृत्य सबे डाकों ॥
रूपे मदन, ए चाँद बदन; देखिते न पाइबों आर ।
तोहारि बियोग-, आगि पिड़े पान; अधिके करि हामार ॥
आपदे मगन, गोपगोपीगन; आराबे कातर करे ।
माधव बान्धव, उद्धार करहु; कहय कृष्णकिंकरे ॥१५॥३४॥

सूत्रधार—भकतसवक ऐसन आर्त्तराब सुनिये, श्रीकृष्णक परम करूणा उपजल; हृदय आकुल भेल ।

श्लोकः

ततोऽतिभीतान् भगवान् गोपानाश्वास्य सत्वरम् ।
मुखेन बह्निमपिबत् महायोगेश्वरो हरिः ॥२०॥३५॥

[तदुपरान्त महायोगेश्वर भगवान् कृष्ण ने अति भयातुर गोपालों को आश्वस्त कर शीघ्र ही मुख से वनाग्नि को पी डाला ।]

सूत्रधार—भगतक भीति देखिये, श्रीकृष्ण बोलल ।

कृष्ण—आहे गोपगोपी सब, हामु विद्यमान थाकिते, कोन चिन्ता थिक । निर्भय रह ।

सूत्रधार—ओहि बुलि, ईश्वर-चेष्टा देखाइ, तत्काले से प्रचण्ड बह्निक मुखे पान कयल । दुघोर बह्नि जैसे जल परिये तत्काले निर्बान गेल । ताहे पेखि, गोपगोपीसब जय कृष्ण जय कृष्ण बुलि, जोकार पारल ।

श्लोकः

श्रीकृष्णस्याद्भुतं कर्मदृष्ट्वा सर्व्वेऽपि विस्मिताः ।
अन्योऽन्यमिति प्रत्यूचुर्न नरो नन्दनन्दनः ॥२१॥३६॥

[श्रीकृष्ण के (इस) अद्भुत कर्म को देखकर सभी आश्चर्य में पड़ गये और परस्पर कहने लगे कि नन्दनन्दन मनुष्य नहीं (साक्षात् ईश्वर) है ।]

सूत्रधार—श्रीकृष्णक आश्चर्य महिमा देखिते, परम विस्मय हुया, अन्योअन्ये सम्बोधि बोले ।

ब्रजवासी—आहे भाइसब, देखो देखो, ओहि नन्द-नन्दन मानुष नोहे। प्रचण्ड वह्निक ततकाले मुखे पान कयल। ओहि कि मनुष्यक काम ? अः जानलों। जे परम पुरुष पुरुषोत्तम सनातन नारायन, से भूमिक भार-हरन निमित्तो अवतार हये थिक। इहात किछो संका नाहि। अः हामाक भाग्यक महिमा कि कहव। ओहि जगतक गुरू नारायन सहित हामाक संग भेल। हामु निस्तरल।

सूत्रधार—ओहि बोलि, श्रीकृष्णक प्रसंसिये, आवोरि गोपगोपी सव, नयन-भ्रमरे मुख-पंकजक प्रेमे पान करिये रहल।

श्लोकः

गोविन्दो वादयन् वेणुं गोकुलं गोपगोपिभिः।
सार्धं ययौ जगन्नाथो हर्षयन् सुहृदान् मुदा ॥२२॥३७॥

[जगन्नाथ गोविन्द कृष्ण वेणु-बजाते गोप-गोपियों के साथ आनन्दपूर्वक मित्रों को हर्षित करते हुए गोकुल को चले।]

सूत्रधार—तदन्तर, कालिदमन बनवह्निपान परम ईश्वरलीला दरसिये, श्रीकृष्ण गोपगोपी सहित धेनु सब आगु कय चलय। कृष्ण-गुण गाइ, वंसि-संख-सिंगा बजाइ, गोपसब जाइ। गोपी सब परम प्रेमभावे हरिगुन गाइ, कृष्ण-मुख-पंकज कटाक्षे निरेखिये, गोकुल चललि। ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—कल्याण--खरमान

गोकुल चले रे मुरारू।
नील सरीर, रंजित पीत जोति; चारु हीर हेम हारू ॥ध्रु०॥
बावत बेनु धेनु रेनु तनु, कानु कौतुक कय जाई।
गोपसिसु संग अंग त्रिभंगिम, रूपे भुवन भुलाई ॥
संगिनी रंगिनी गोपिनी गावे, भावे नीर भुरावे।
कानुक कमल अमल मुँह हेरि, चललि लहु लहु पावे ॥
श्रीराम राया हरि रस पाया, माया करु निरजान।
एकु कृष्णक चरन परायन, शंकर हरि गुन गान ॥१६॥३८॥

सूत्रधार—ऐसन परम कौतुके केलि कय, श्रीकृष्ण गोपगोपीसहित गोकुल पाइ परम आनन्दे रहल। ओहि गोपालक, कालिदमन-वनाग्निपान लीलायात्रा, जे सबलोके सुने-भने, ताहेक कृष्ण-चरने परम प्रेम-भकति बाढ़व। इहा जानि, निरन्तरे हरि बोल हरि।

श्लोकः

कृष्णस्य कालिदमनं नामयात्रा च कारिता ।
यन्न्यूनमधिकं दोषं क्षमतां भगवन् प्रभो ॥२३॥३९॥

[(नाटककार शंकरदेव कहते हैं कि मैंने) कृष्ण की कालिदमन नामक यात्रा की रचना की । इसमें जो न्यूनाधिक दोष हो उसे भगवान प्रभु क्षमा करें ।]

नमः कृष्णाय रामाय कामाय महतेनमः ।
नमोऽरविन्दनेत्राय सदानन्दाय भास्वते ॥२४॥४०॥

[मैं कृष्ण को नमस्कार करता हूँ; काम रूप बलराम को नमस्कार करता हूँ । कमल-नयन, सदानन्द प्रकाश रूप भगवान् को नमस्कार करता हूँ ।]

भटिमा—मुक्तिमंगल

देबकि उदरे उदय जेहि देवा कयलि भकतक त्रान ।
अघ बक धेनुक केसि सबंसक कंसक ध्वंसल प्रान ॥
बिरिन्दा बिपिन बिहार बिसारद सारद चन्द्र समान ।
सोहि जगतगुरु तेरि सतते करू मुकुति मंगल विधान ॥
जोहि गोपवधु विविध विध्वंसल परिरम्भल भुज मेलि ।
जोहि जमुना जल कामिनी मिलि करय रँग केलि ॥
दुष्ट अरिष्टक मुष्टिक मोड़ल संखचूड़ लेल प्रान ।
सोहि जगतगुरु तेरि सतते करू मुकुति मंगल विधान ॥
जोहि भूमिकहुँ भार उतारल निजजन पुरियो काम ।
पापी पापक मूल उपारय उच्चरि जाकेरि नाम ॥
जाहे नाम सुनि नीच स्वपच मुनि होवय एकु समान ।
सोहि जगतगुरु तेरि सतते करू मुकुति मंगल विधान ॥
सोहि वैकुंठक कृष्णक नाटक उत्पाटक दुख मूल ।
पुन्यक संचन कलिमल ध्वंसन नाहि नाहि ओहि तूल ॥
सुन सभासद देखु बिचारि भेलहु लोक एकाकार ।
धरमक करमक आसा दूर कर हरि बिने गति नहि आर ॥
श्रीराम राय हरि बिने नाइ जाहेरि हृदये धियान ।
भकतिक सकति जाहेरि मिलल परम ईश्वर गियान ॥
पाखण्ड दण्डन मण्डन भकतक हरिरस रसिक सुजान ।
कालि-दमन करावत नाटक कृष्ण-किंकर ओहि भान ॥
सुन सब लोइ वचनक मोइ सब तेजि भज हरि पाव ।
ओहि भव दुर्गम सागर तरन कृष्ण-पद-पल्लव नाव ॥
देवक ऊपरि राजा माधव धरमक ऊपरि नाम ।
कोटि कल्पक पातक नासक डाकि बोलहु राम राम ॥१७॥४१॥

॥ इति कालिदमन यात्रा नाटकम् समाप्तम् ॥

●

केलि गोपाल नाट

श्लोकः

शरच्छशाङ्कद्युति कोमलासु निशासु पश्यन् सह गोपिकाभिः
चकार केलिं कलगीतकण्ठः स गोपसूनुर्जयतीह कृष्णः ॥१॥

[रात में शरद्चन्द्र की कोमल महाद्युति को गोपियों के साथ देखते हुए कल-गीतकन्ठ वृन्दावन में श्री कृष्ण ने (रास-) क्रीड़ा की। ऐसे गोपसुत श्रीकृष्ण की जय हो।]

अपिच

वीक्ष्येन्दुमण्डलमखण्डमकुण्ठ बोधो वृन्दावने सुकलवेणुमवादयद्यः
सम्मोहनाय मधुरं ब्रज सुन्दरीनाम् तं गोपवेशमनिशं प्रणतोऽस्मि कृष्णम् ॥२॥

[पूर्ण चन्द्र-मण्डल को देखकर पूर्णज्ञानी श्रीकृष्ण ने वृन्दावन में ब्रजसुन्दरियों को मोहित करने के लिए मधुर वेणु-वादन किया। (मैं) उस गोपवेशधारी श्रीकृष्ण को सदा नमस्कार करता हूँ।]

गीत

राग-सुहाइ—एक ताल

जय जय गोपीनाथ करु परनाम। पुरल कय केलि गोपिनीक काम ॥ध्रु०॥
सरत ससि निसि धवलि अधिक। लहु लहु मलय पवन तथि थिक ॥
बिरिन्दा विपिन कुसुम परकास। पेखि करल रास-केलि विलास ॥
पंचम पुरि पुनु गावत गीत। मोहित हुयो ब्रज-योसित चित ॥
हरलि चेतन मन मनसिज बान। कृष्ण-किंकर एहु शंकर भान ॥१॥३॥

नान्द्यन्ते सूत्रधारः—प्रविशति। अलमति विस्तरेण। प्रथमतः माधवो माधव इत्युक्त्वा हरिं प्रणम्य सभासदजनान् प्रत्याह।

[नान्दी के अन्त में सूत्रधार प्रवेश करता है। अधिक विस्तार की आवश्यकता नहीं। प्रथम माधव! माधव! कह (वह हरि को प्रणाम कर सभासदों को लक्ष्य कर बोला।]

श्लोकः

भो भोः सभासदो यूयं शृणुत सावधानतः।
केलिगोपालनामेदं नाटकं मुक्ति साधकम्॥३॥४॥

[हे सभासदों, आप इस मुक्ति-साधक केलिगोपाल नामक नाटक को सावधानी से सुनें।]

भटिमा

परम पुरुष पुरातन पापी-पावन ईश्वर देव।
ब्रह्मा रूद्रादिक दिगपाल जासु करत नित सेव॥
जन्न रन्न विपन्न लन्न लन्न न्नयंकारी।
दुष्ट दैत्य दानव-दलन दीन दरिद्र दुख भयहारी॥
अव बक कुबलय धेनुक केशी कंस-नास बनमाली।
गोपी पीन पयोधर धरिसन चंचल कर युग शाली॥
आनन्दसिन्धु साधुजन बन्धु मधुर मुरुति मुर-नासी।
विरिन्दा विपिन विहार विसारद सरद इन्दु-परकासी॥

कोटि मदन मन मोहन रूपी परसने परमानन्द।
सिद्ध मुनिवृन्द सादरे वन्दित जाकर ए पद द्वन्द॥
पालन प्रलय स्रजन जग तक जाहेरी परम बिहार।
जासु नाम धरि अधमा पापी पावत भव-नदी पार॥
सोहि गोपालक केलि नाटक ओहि मुकुति निदान।
भो भो सभासद साधु जन सब सुन मन कय सावधान॥
कलि को पापहर नाहि अतः पर जानि तेजहु आनकाम।
कह कृष्ण-किंकर आपुनु उद्धर डाकि बोलहु राम राम॥२॥५॥

सूत्रधार—भो सभासद साधुजन सब, जे सकल सुरासुर बन्दित पादपद्म, सयल संसार जाहेरि स्रजना, जाहेरि नामे महामहापापी सब संसार निस्तरे, सोहि परमेश्वर श्रीगोपाल सकल गोपीजन सहित ओहि सभामध्ये परम कौतुके नृत्य करब, ताहे सावधाने देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि। [आकाशे कर्णांदत्वा] आहे संगी कि वाद्य बाजत।

संगी—सखि, देव दुन्दुभि बाजत।

सूत्रधार—आहे देव दुन्दुभि बाजत। आः मिलल।

श्लोकः

अथ प्रवेशमकरोत् कृष्णः सद्यः कन्दर्पदर्पहा।
मोहयन वादयन् वेणु स्त्रीभिःसह स कौतुकी॥४॥६॥

[तदन्तर कन्दर्प-दर्प को विनष्ट करने वाले कौतुकी कृष्ण ने वेणुवादन के साथ सबको मुग्ध करते हुए स्त्रियों के साथ प्रवेश किया]

सूत्रधार—भो सभासद, गोपीजन सहित श्रीगोपाल ए आवत, ए आवत थिक।

[इति संगी निष्क्रान्तः]

गीत

राग–श्याम—एक ताल

श्याम मुरुति पीत-अम्बर लास । नयन-पंकज ज्योति ईषत हास ।।ध्रु०।।
आवत गोबिन्द गोपिनी पिउ । संगे चलल गोपी भुलल जिउ ।।
अधर मधुर बेनु पंचम गान । कृष्ण-किंकर एहु शंकर भानु ।।३।।७।।

श्लोकः

निरीक्ष्य रात्रिं शरदिन्दु शुभ्रां । तद्रोचिषा चारुवतं विकासम् ।।
गीतं जगौ गोकुल कामिनीनाम् । मोहं वितन्वन् नितरां मुरारिः ।।५।।८।।

[शरद पूर्णिमा की सुन्दर चन्द्रकिरणों से विकसित रात्रि को देखकर मुरारी (कृष्ण) ने गोकुल की कामिनियों के मोह का भलीभाँति विस्तार करते हुए गीत गाया]

सूत्रधार—श्रीगोपाल प्रवेस दिये कहुँ , अधरे पंचमपुरि बेनु बजाइते लागल । ताहे सुनिये गोपीसब बिमोहित हुया, श्रीगोपालक समीप आवल; ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

पयार

अखण्ड मण्डल ससि सरत रातित ।
ससांके कोमल वृन्दावन विकसित ।।
लहु लहु बहे मन्द मलय पवन ।
रासक्रीड़ा करिते कृष्णार भैला मन ।।

उच्चाया पंचम पुरि हरि गाइला गीत ।
सुनि ब्रजबाला सब भैला बिमोहित ।।
पति सुत तेजल मजल प्रेम-सिन्धु ।
हृदय धरल माधवक बुलि वन्धु ।।
कृष्णक देखिते अलखित गोपजाया ।
चले सचकिते पति सुत उपेखिया ।।
हांठिते कुण्डल डोलि डोलि गण्ड लोले ।
कृष्णार चरण चित्ते परसय भोले ।।

सुहृद सोदरे बाधे स्वामी निषेधय ।
तबहुँ विमुखि सखि कबों नाहि हय ।।
उपेखिया बाधा धाया गयो रे गोपिनी ।
भकतक लंघे नाहि कबहों बिघिनि ।।

हरिक भकिति ओहि परम सम्पद।
दहे दोस सब मिलावय मनोरथ॥
परम बान्धवर माधवर गुननाम।
जानिया लोकाइ डाकि बोल राम राम ॥४॥६॥

श्लोकः

या गोप्यः पार्श्वमप्राप्ता निरुद्धाः पतिदेवरैः।
हृदि गोविन्दचरणं विचिन्त्य विजहुस्तनुः ॥६॥१०॥

[जो गोपियाँ पति और देवरों से निरुद्ध होने के कारण गोविन्द के समीप न पहुँच सकीं उन्होंने हृदय में गोविन्द-चरणों का ध्यान करके अपना शरीर त्याग दिया।]

सूत्रधार—आहे सामाजिक लोक, जे गोपीसब कृष्णक देखिये न पावल, स्वामी-देवरे द्वार बन्ध कय राखल, से सब विरह-तापे तापित हुया, हृदि प्राण माधवक निविड़ ध्याने आलिंगिकहु जैसे प्रियतम तनु छाड़ल, ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—केदार—ताल ज्योति

हरि को गोपिनी पेखिये न पाइ।
× × × × × × × × × ॥ध्रु०॥
अधिक मिलल मोह विरह दहनु दहे, तनु धरन न जाइ।
घन घन स्वास फोकारे बरबाला, हरि को रहलि धियाइ॥
एकु मने प्रेम भकति भावइ, हृदि पद-पंकज धरय झुरय नीर।
प्रेमे पुलक भेलि काइ, भकति करम-बन्ध कयो क्षीण॥
कह शंकर परमाना, बिरहे मुँदि रहो दुहो नयना।
कृष्णर चरण चिन्ति पाये परम गति, छोड़ि परल गोपी प्राना ॥५॥११॥

सूत्रधार—आहे लोकाइ, पेखु-पेखु, अज्ञानी अनाचारी गोपीसब कामभावे केवल कृष्णचरन चिन्ति तत्काले परम गति पावल। हरि भकतिक महिमा कि कहब? इहा जानि निरन्तरे हरि बोल हरि। तदनन्तर जे गोपीसबक वन्धु-बान्धवे राखये नाहि पावल, वृन्दावने गैयाकहुँ, सकल सुरासुरेश्वर-शिर-शिखर-चूड़ामणि विराजित-पाद-पंकज परमेश्वर श्रीगोपालक समीप पावल, ताहेक वृतान्त सुनह। सेसबक हरि परिहासे स्वभावे पूछ्ये लागल।

श्रीकृष्ण—हे सखिसब कमन उतपात गोकुले मिलल? कि निमित्ते रजनी लवड़ि-कहुँ वनमध्ये इहाँ आवल?

गोपीसब— हे परमेश्वर! नाहि नाहि किछो संका।

श्रीकृष्ण—(बिहँसि बोलल) हे सखि, सब कुसले आवल ? हामात कमन प्रयोजन थिक ? सत्वरे कहु, ता साधो ।

सूत्रधार—सुनि गोपीसब परम लज्जित हुया हेठ माथ कय रहल ।

श्रीकृष्ण – (बिहँसि बोलल) तोरार पति-पुत्र, पिता-मातासब तोहाक भेंट न पाइ, परम चिन्तित हुयाछे । तासबार अति सत्वरे दुख दूर करगिया, बिलम्बक योग्य नोहे । ए चलह, ए चलह ।

सूत्रधार—गोपीसब परिहास नाहि बूझल । कृष्णक कटाक्षे कोपे निरेखिये गर्जये लागल ।

गोपीसब – हे सखिसब, श्रीकृष्ण कि कहइछे ? उनिकर चित्त बूझये नाहि पारि ।

सूत्रधार—पुनु हरि बिहँसि बोलल—

श्लोकः

दृष्ट्वा वनं विकसितं शीतलं शशिशोभितम् ।
यमुनाजलवातेन प्रतियात वनाद्द्रुतम् ।।७।।१२।।

[यमुना के जल को स्पर्श करनेवाली हवा से शीतल और शशिशोभित विकसित बन को देखकर बनप्रदेश से शीघ्र लौट चलो ।]

श्रीकृष्ण—हे सखिसब, वृन्दावन जदि देखिते आवल, विकसित वृन्दावन देखल । अब सत्वरे चलह, एइ चलह ।

गीत

राग–श्रीगान्धार – एक ताल

ए सखि ! चलहु बहुरि गोरी गोकुल गोआरि ।
करबि ना कामिनी कलंक हामारि, नाहि परसों पर नारि ।।ध्रु०।।
आकुल मति पति सुत सोदर हे चाहे चकित दिस पासा ।
होइ कुल-कामिनी जामिनी कैसे तेजल निज पियु पासा ।।
स्वामी जानये जब मिलब मरन तब चलहु पातकमति छोड़ि ।
कृष्ण-किंकर कह शंकर हरि को ऐसन बचन चातुरि ।।६।।१३।।

सूत्रधार—श्रीकृष्णक परम विप्रिय वाणी सुनिकहों, गोपीसब दुरन्त चिन्ता पावल । परम दुख भर पाइ, हेठ माथ कयल, घन घन निश्वास फोकारिते अधर सुखावल । मुख मलिन भेल, जैसे शिशिरपरि पद्म संकोचित भेल, हृदये मरम चड़ल ।

गीत

राग–बेलोवार—ताल रूपक

चिन्तित गोपिनी पेखये नैरासा ।
लम्बित आनन फोंकारे निश्वासा ।।ध्रु०।।

तनु मन भामरि नयने झुरे वारि । पद नख खिते लेखु देखु आँधिआरि ॥
कुच दुहु कुंकुम लेपत्ति लोले । तापित ब्रज-बधु शंकरे बोले ॥७॥१४॥

सूत्रधार—तदनन्तर कथंकथमपि सोकक तम्भाइकहुँ, आँचोले आँखि मुख मूचल । आशाछेद दुखे दीर्घ निश्वास छाँड़ल । प्रेम कोपे वाक्य गद्गद् कण्ठ, कटाक्षे कृष्णक निरेखि, गोपीसब जे बोलल, ताहे देखह-सुनह ।

गीत

राग-सुहाइ—जोतिमान

हरि हे ! बुझलोँ तुहों बर निदया ।
निकारून वाणी-वान मारल हानि, दारल हामाकेरि हृदया ॥ध्रु०॥
पति-सुतसब अब छोड़ि परल नाथ, तुआ पद-पंकज आगु ।
भकत कृपाल गोपाल तेरि कैसे, टूटल नव अनुरागु ॥
तोहे बिने माधव देहा नाहि राखब, बिरहिनी छोड़ब प्रान ।
न करहु नैरासा तोहो जगतवासा, कृष्ण-किंकरे एहु भान ॥८॥१५॥

गोपीसब—हे स्वामि ! तोहारि गीते मोहित हुया पति-सुतसब छोड़ि, तयु पद समीप पावलुँ । तोहों दारून वाक्य बोलइछ । हे परमेश्वर तयु मुख-पंकज छोड़ि, हामार चक्षु आन पेखये नाहि । तुया कथा छोड़ि कर्ने आन किछो सुनये नाहि । तयु चरण छोड़ि, हामार पाव खोजेको चलय नाहि । ब्रज गैया कि करब स्वामि ? जे लक्ष्मी गोसानि हृदये थान लभिकहों, तथापि ओहि पद-पंकज-रेनु आसा करियेछे, ओहि चरन सेवा करिते धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारि पदारथ सुखे पाइ, ऐसन तव पद-पंकज । इहा छाड़िते हामाक प्रान छूट जाइ । हे परमेश्वर स्वामि ! तव पद-पंकज नाहि पारिये, नाहि पारिये ।

श्लोकः

न पारयामस्तव पादपङ्कजं वयं विहातुं नवकञ्जलोचन ।
स्वनेन ते मोहित मानसाभृशं त्यजस्व मा माधव नः कृपां कुरु ॥८॥१६॥

[हमलोग आपके चरण-कमल और नवीन कमल के समान नेत्रों को त्यागने में असमर्थ हैं । हे माधव आपके गीत से हमारा मानस अत्यन्त मोहित है । अतः, आप हमें त्यागिये नहीं, हम पर कृपा कीजिए ।]

गीत

राग-श्रीगांधार—जोतिमान

नाहि पारय पाय-पंकज, तेजय जादवराई ।
हरि हरि, कुसुम धनु मन मोहन मुरुति, पेखिते मुकुति मिलाई ॥ध्रु०॥

हामु अनुचरि चरण अनुसरि, परमु प्रेम रसे आस ।
कठिन वचने हरसि चेतन, कैसे करसि नैरास ।।
मोहन बंसरि स्वन सुनिकहु, जीवन धरन न जाय ।
राख रे प्रान बन्धु माधव, मधुर अधर सुहाय ।।
बिरह दहनु तावे तनु मन, दूर करहु ताहे हासि ।
कृष्ण-किंकर कहय शंकर, चरन-रेनु अभिलासि ।।९।।१७।।

सूत्रधार—गोपीसबक ऐसन कारुण्य विलाप सुनिकहो, श्रीकृष्णक स्नेह-रसे आकुल कयल । कमल-लोचनदुहों लोतके पूरल । ततकाले उठिकहों, गावे गावे आँखि-मुख आपुने पीतवस्त्र मुचिकहों, प्रबोध कयल ।

श्रीकृष्ण—हे सखिसब, तोहोसब परम भकत । हामार प्रानतो अधिक । हामु परिहासे केलि-कौतुक कयल, ताहं नाहि बूझल । दुख छोड़ह, दुख छोड़ह । तोरासबक मनोरथ पुरि, क्रीड़ा-कौतुक करब । प्रानसखिसब, उठह-उठह ।

सूत्रधार—ऐसन आस्वास सुनि, गोपीसब कृष्णर वाक्यामृते बिरह-ताप ततकाले दूर कयल । जैसे बनाग्नि वृष्टिजले निर्वान भेल । परम उत्सुके उठिकहों, कृष्णक आवरि क्रीड़ा कय लागल । तदनन्तर श्रीगोपाल परमेश्वर गोपीसबक काम वढ़ायाकहो, केलि कय लागल ।

गीत

राग—श्रीगांधार

देखो सखि ! ऐसन निकरून कानु । पयोधर अधर दसन नख हानु ।।ध्रु०।।
खसाइल केस-पास टुटाइलो हार । फोड़ल कछुआ कुचक हामार ।।
कयल आलिंगन घन घन बाहु । जैसे चान्दक गरसि रहे राहु ।।
हरिक सुरति रसे न रहे गियान । कृष्ण-किंकर शंकर एहु भान ।।१०।।१८।।

श्लोकः

अथापि ताः स्वया वाचा स्वाश्वास्य स्नेहयन्त्रितः ।
गोपीनां वर्द्धयन् कामं रमयामास केशवः ।।९।।१९।।

[तदनन्तर स्नेह से आबद्ध उन गोपियों को अपनी वाणी के द्वारा भली प्रकार आश्वासन देकर उनके काम् को बढ़ाते हुए केशव ने उनके साथ, रमण किया ।]

गीत

राग—पुहाइ—परिताल

गोविन्द करत केलि—
केशव करत केलि गोपिन संगे रंगे ।
काहाकु हेरये हासि आँखि भंगे, लो राम ।।ध्रु०।।

काहाकु चुम्बइ बनमाली लागि मुख ।
आलिंगने गोपीक मिलत रति सुख ॥
उच्च कुच करो खत नखेर परसि ।
गोपालक केलि कृष्ण-किंकर कहसि ॥११॥२०॥

सूत्रधार—एवंविध नाना खेला श्रीगोपाले कयल । गोपीसब मनोरथ पुरि आनन्दे मन मग्न हयाछे । से समये कुबेरक एक अनुचर, एक यक्ष, तनिकर नाम शंखचूड़, से पापी कामातुर हया, गोपीक हरिनिवाक प्रति प्रवेस कयल, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

श्लोकः

अथ प्रवेशमकरोत् यक्षोरक्ष इवापरः ।
शङ्खचूड इति ख्यातो नाम्ना गोपी भयंङ्करः ॥

[तदन्तर गोपियों को भयभीत करनेवाले शंखचूड़ नामक यक्ष ने दूसरे राक्षस (के रूप में) प्रवेश किया ।)

गीत

राग—कान्हड़ा—ताल चूटा

आवत शंखचूड़ उड़िवाहु । जैसे चाँद गरसिते मिलल राहु ॥ध्रु०॥
काया थूल सूल तुलि हाते । कम्पित मेदिनी चरन आघाते ॥
आरकत आँखि चाहे दिश पास । शंकर कह ओहि केशव-दास ॥१२॥२२॥

सूत्रधार—से शंखचूड़ गोपीसबक भय जनिकहों, वीभत्स रस भावना कय थिक । भयंकर रूप यक्षक पेखिये, गोपीसब भये कम्पये लागल । त्राहि कृष्ण, घन घन जम्पत । ताहे पेखिये, भकतक भयहारी हरि गोपीसबक आश्वास आलिंगन कयल । विक्रम दरसिये यक्षक खेदावल, ताहे देखह । इत्यादि ।

ततः पुनर्बार श्रीकृष्ण गोपीसब सहित अनंग-केलि कय लागल, ताहे देखह-सुनह ।

गीत

राग – श्याम

रमाया का करु मदन खेला । खेले संगे रंगे गोप-रमनी मेला ॥ध्रु०॥
काहाकु हरि हासि करुमान । काहाकु चुम्बन चर्चन दान ॥
काँचुरि छोड़ि कुच परकास । हाथे धेरि गोरी करत हास ॥
काहाकु लेला हरि अम्बरि छोड़ि । रहल लाजे गोपी अंग मोड़ि ॥
सबहु बेकत गुपुत अंग । वचन चरपटि बढ़ाया ढंग ॥
जाकेरि सेवा कयो सुरासरे । सो हरि गोपिक मनोरथ पुरे ॥
भकत बान्धव माधव प्रान । कृष्ण-किंकरे कहय परमान ॥१३॥२३॥

सूत्रधार—जे परमेश्वर श्रीकृष्ण, ब्रह्मा रुद्रादि देवता जाहेर पद-पंकज सदाये सेवत, ऐसन जगतगुरुक, वनचरि अनाचारि गोपनारी काम भकतिये बस्य कयल। हरि-भकतिक महिमा कि कहब ? आहे लोकाइ, पेखु पेखु हरि-गुन-नाम श्रवन-कीर्तन बिने कलित गति नाहि नाहि। जानि निरन्तरे हरि बोल हरि।

श्लोकः

गोप्यो गोविन्दसम्मानमदमोहितचेतसः।
गर्व्वेण खर्व्व वाक्येन चक्रुस्ता हरि हेलनम् ॥११॥२४॥

[गोविन्द के सम्मान-मद से मोहित चेतना वाली गोपियाँ गर्व के कारण खर्व वाक्यों से हरि की अवहेलना करने लगीं।]

सूत्रधार—तदनन्तर, स्त्रीक दुर्जन भाव सुनह। जे पूर्णानन्द श्रीकृष्ण, तनिकर कुत्सित विसय-सुखे कोन अभिलास थिक ? नाहि नाहि; जैसे कामधेनुवृन्द अधिकारिक छागलीत कि प्रयोजन थिक ? गोपीसब ताहे नाहि जानिये, माधवत महामान पाइकहों, बुद्धि अन्ध भेल। कृष्णक अवहेला कय लागल। अन्यो अन्ये कहइ।

गोपीसब—हे सखिसब, हमार रूप जौवन पेखि, श्रीकृष्ण भोलल; हामार कोल छाड़य नाहि, वाक्य बाधय नाहि।

सूत्रधार—ओहि बोलि, बाहु लाड़ि, मदगर्वे भ्रमये लागल। श्रीकृष्ण ताहे देखिये, पाछु-पाछु चाटु बोलि चलइछे।

श्रीकृष्ण—हे सखिसब, हामाक कैसे प्रिय सभाषन नाहि करत ? हामो कोन अपराध कयल ? प्राण गोपीसब, प्रेम कटाक्षे निरेखि हामाक आस्वास करह।

सूत्रधार—गोपीसब परम गर्वे पीठि दियेकहो चलय। किछु सुनये नाहि। ताहे देखि श्रीकृष्ण हासि हासि लीलाये, प्रेमे कय लागल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—सुहाइ

ए सखि ! कतनो कयलो हामु दुख रोस छोड़।
देहु दहे काम-आगि आलिगन कोर॥ ध्रु०॥
नव प्रेमरस बिघुरन कैसे होइ।
बंकिम नयने हेरहु हासि मोइ॥
धरये न पारि मन मनमथ भोले।
हरि को चरित्र कृष्ण-किंकरे बोले ॥१४॥२५॥

श्रीकृष्ण—हे प्राण-सखिसब ! कोन अपराधे हामाक प्रेम छोड़ल ? ताहाक निमित्त हामार मन मदने मर्दय जानि प्रेम निरेखि आलिंगह ।

सूत्रधार—कृष्णक वाक्य गोपीक कर्न-पथे जाय नाहि । अधीन कृष्ण बुलि गनये नाहि, जैसे सेड़ुया स्वामीक पेड़ा पायेक झिव कटाक्षे गनये नाहि । वाहु लाड़िकहों, लीलाये भरमय लागल ।

श्लोक:

निशम्य गर्व्वं गोविन्दो गोपीनां प्रेमवृद्धये ।
राधां विधाय हृदये तत्याज ब्रजयोषितः ।।१२।।२६।।

[गोविन्द ने गोपियों के गर्वपूर्ण वाक्य सुनकर उनके प्रेम की वृद्धि के लिए हृदय में राधा को धारण कर (शेष) ब्रजांगनाओं को त्याग दिया ।]

सूत्रधार—तदनन्तर, श्रीकृष्ण गोपीसबर आति गर्व भाव नाहि सहल । हा हा कि भेल, गोपीसब हामाक गनय नाहि ! आरासब हामाकु न पाइ प्रेम-भकति होक बुलिकहों, राधानाम एक गोपीक हृदये बान्धिकहों, तथाये अन्तर्धान भेल ।

श्लोक:

तत्र कृष्णमपश्यन्त्यो रजन्यां ब्रजयोषितः ।
रुरुदुः सस्वरं भीता हरेर्विरहविह्वलाः ।।१३।।२७।।

[उस रात्रि में कृष्ण को न देखकर उसके विरह में कातर ब्रज की स्त्रियाँ भयभीत होकर सस्वर रोदन करने लगीं ।]

सूत्रधार—तदनन्तर, गोपीसब आगु-पाछु जाइ कृष्णक देखिये नाहि; बृन्दावने बिचारि न पाइ, ततकाले गरब चूर भेल । बिरह-कातर हुया कृष्ण-दर्सन प्रार्थय सब ।

गोपीसब—हे स्वामि कृष्ण, स्वभावे चंचल स्त्रीक दोस धरबि नाहि । हामु किंकरि तोहाक, इहा जानि दरसन देहु ।

सूत्रधार—अनेक प्रबन्धे कृष्णक भेट न पाइ, परम आकुल हुया, जैसे क्रन्दन कये लागल बालासब, ता देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—कल्याण—यतिमान

काहे गयो काहे गयो रे हामारि बन्धु मधाइ ।
फोकारे निश्वास झुरये नीर नयना बयना हाथ छड़ाइ ।।ध्रु०।।
हा हरि हा हरि करय कामिनी मिलि, बिरिन्दा बिपिन बिचारि ।
घन घन मुरुछि परये बरबाला, दिस दस देखु आँधिआरि ।।
प्रान गोपाल पिउ बिने नाहि रह जिउ, बिरह-दहनु दहे प्रान ।
करत बिलाप गोपाल गुन गावे, कृष्ण-किंकर गुन गान ।।१५।।२८।।

गोपीसव - हे कमललोचन, दुख-विमोचन स्वामि, हामु पापिनीसव, तोहात गरब कयल। वर अपराध आचरल, से दोस सब मरस स्वामि। हामु किंकरीक दरस देहु, दरस देहु।

सूत्रधार—ओहि बुलि, आर्त्तरावे क्रन्दन कये लागल।

श्लोकः

तथालपन्त्यो गोप्यस्ता अलब्ध्वा माधवं धवम्।
मत्ताः प्रविश्य विपिनं पप्रच्छुस्तरुराजिषु ॥१४॥२६॥

[तदन्तर विलाप करती हुई गोपियाँ अपने पतिरूप माधव को न पाकर, उन्मत्तावस्था में बन में प्रविष्ट हो वृक्षावलियों से पूछने लगीं।]

सूत्रधार— ऐसन कृष्ण गुण गाइ, कान्दिते गोपीक प्रेम-भकति उपजल। सरीर पुलकित, नेत्रक नीर झुरये। मत्त हुया कतिहों, कृष्ण-चेष्टा कयल, कतिहों कृष्णक क्रीड़ा सुमरि मने मरम चड़ल। हा हा कृष्ण बुलि ढलिये पड़ल। कतिहों बन्मत्त मने, बृन्दाबन पसिये, पुनु कृष्ण, कृष्ण बुलि विचार कये लागल। जे श्रीकृष्ण जगतक बाहिरे-भीतरे थिक, से कृष्णक बिरिख समीप चापिये, जैसे कान्दि-कान्दि पुछये लागल, ता सुनह।

गीत

राग—गौरी—जोतिमान

पुछतु हों माधवी बान्धव मधुसूदन।
कतिन रहलि हरि गोपिनी-जीवन ॥ध्रु०॥
बकुल कदम्ब बन्दुलि बक तुलसी, तुहुँसब पर उपकारि।
कह काहेआ गेलो बन्धु मधाइ,बिरहिनी जीवन धरये ना पारि॥
चम्पक चून आँचोर पाति माँगों, प्राण बन्धु देहु देखाई।
पहु बिने तनु धरये न जाइ, रहइ न प्राण कृष्ण-किंकरे गाई॥१६॥३०॥

सूत्रधार—ऐसन परकारे तरुसबत कृष्णक गुन गाइ, गोपी पुछिते परम प्रेम उपजल। सरीर बिछुरल, अबिछेद धाराये नयनक नीर निगड़े। कृष्णक चरन हृदये धरि-कहो, आनन्दे मगन मन, कतिहों मौन हुया थिक। भकतिक महिमाए कृष्णमय देखये, हामु कृष्ण मानि प्रेमे मत्त हुया, कृष्ण-चेष्टा करये लागल।

श्लोकः

भक्त्या प्रमत्तास्ता गोप्यो मत्वाऽत्मानंहि माधवम्।
अन्योन्यममिसम्भाष्य विचक्रुः कृष्ण चेष्टितम् ॥१५॥३१॥

[भक्ति से प्रमत्त वे गोपियाँ अपने को ही माधव मान कर एक दूसरे से भाषण करते हुए कृष्ण की सी चेष्टाएँ करने लगीं ।]

सूत्रधार – कृष्ण भकतित मत्त हुयाकहों, सब शोक बिछोड़ल । अन्यो अन्ये सम्भाषिया कृष्णलीला आपुन कय लागल गोपीसब, ताहे देखह-सुनह ।

गीत

राग—कान्हड़ा–पयार परिताल

मझि कृष्ण बुलि करे भावना । तन पाने सुसि मारे पूतना ।।ध्रु०।।
हामु कृष्ण बुलि ठोकावे बुक । मारे अघ बक वत्स धेनुक ।।
काहु बोले हामु गोपिनी-नाथ । मर्दय कालिक चड़िया माथ ।।
ओहि ह्रद छोड़ अरे दुराचार । दुष्टक दंडिते हामु अवतार ।।
नाहि भय काहु गोपिनी बुलि । एक हाते धरि मन्दर तुलि ।।
चाप गोप-गोपी हामार पास । इन्द्रक गर्ब कैलों सब नास ।।
हामु से कृष्ण देख कहों बोले । गोपिनी देहो आलिंगन कोले ।।
अबहु नाहि परिचय बाला । देखिहुँ पीतवस्त्र बनमाला ।।
बोलय काहुँ आइलों हामु हरि । बेनु बजावत अधरे धरि ।।
गोपिनी कण्ठे काहु बाहु सेलि । करे लीलागति दरसे केलि ।।
काहु बोले बिलाइ दधिक मोर । धरिलौं कृष्णक लवनुचोर ।।
तोइ माथा खाइबों बोलय बानि । गोपीक बान्धय उरले टानि ।।
भकति प्रमत्त गोप-अंगना । ऐसन करतु हरि भावना ।।
कृष्णर किंकर शंकरे बोले । पवित्र कर, हरि हरि बोले ।।१७।।३२।।

सूत्रधार—परम भाग्यवती गोपीसब हरि-भकतिक महोदय मिलावल । ऐसन कृष्ण भावना करिकहों, मत्त हुया रहल । जे गोपी (राधा) कृष्णक संगे जाइ, तनिकर दुर्जन भाव सुनह । श्रीकृष्ण से गोपीक कतिहुँ उरूत बैसाइ, कुसुमे लास करावल; कतिहुँ क्रीड़ा-कौतुक करिते जाइ । तदनन्तर, श्रीकृष्णक से गोपी (राधा) बोलल ।

गोपी (राधा)—हे स्वामि कृष्ण ! हामाक पदतले कण्टके बेधल । चलये नाहि पारि

श्रीकृष्ण—हे प्राणराधे ! हामाक बोके चड़सिया ।

सूत्रधार—ओहि बुलि, गोपीक बोके तुलि, श्रीकृष्ण बहय लागल । ता देखह सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—सुहाइ–मान ज्योति

गोपीनाथ लीला जानब कोइ । बिपरीत कौतुक तोइ ।।ध्रु०।।
चौधय भुवन अधिकारी । सो बोके बहय गोपनारी ।।

जो रहे गरुड़ आसने। सो हरि गोपिनी बाहने ।।
भकत बांधव किना भेलि। शंकर कह कृष्ण-केलि ।।१८।।३३।।

सूत्रधार ऐसन क्रीड़ा कय, कृष्ण कामातुर पुरुषक देखावल। स्त्री भेल राजा, कामातुर तनिकर दास। स्त्रीक आज्ञा पालि सर्वथा थिक, इहा जानब।

श्लोकः

कृष्णेन सह सा याति गोपी तन्मानदर्पिता।
कृष्णस्य स्कन्धमारुढं गता सा दुःस्वभावतः ।।१६।।३४।।

[(कृष्ण-प्रदत्त) मान से दर्पित वह गोपी (राधा) दुःस्वभाव से कृष्ण के कन्धे पर चढ़ने के लिए साथ जाती है।]

सूत्रधार—तदनन्तर से स्त्रीक (राधा) दुर्जन्य भाव सुनह। वोका हन्ते कृष्णे नमावल। राधा हांठिये चले। कृष्णक सम्माने गर्व उपजल। बोले, सब गोपी तेजि हामाक आनल। आः मोहि सम कोन सौभागिनी थिक! दर्पे ठेस कये बैठल, ताहे पेखि श्रीकृष्ण बोलल।

श्रीकृष्ण—हे प्राणराधे! तुहुँ कि निमित्ते रहल ?

राधा—हे कृष्ण, तुहुँ वड़ दारुण पुरुष! हामु भुमि पावे चलइछि। तोहों देखये नाहि, अब चलये नाहि पारि। जे मन कये, निया जाव।

सूत्रधार—स्वभावे चंचल स्त्री, लाड़ पाइ ईश्वर कृष्णक गनय नाहि। सुनि श्रीकृष्ण कटाक्षे बोलल।

श्रीकृष्ण—हे प्राणराधे! अतक्षण केने नाहि कह ? जदि चलये नाहि पार, हामाक कान्धे चड़सिया।

सूत्रधार—गोपी कटाक्ष नाहि बूझल। वस्त्र काक्षि कान्धे चड़िते, रंगे चलल। ताहे पेखि कृष्ण अन्तर्धान भेल। गोपी कृष्णक नाहि पेखि, भय-विह्वल हुया, हा कृष्ण! हा कृष्ण! बुलि, जैसे दर्शन प्रार्थल, ता सुनह।

गीत

राग—सुहाइ—मान जोति

दरसन देहु दआल, मेरि बन्धु मधाइ।
कैसे करसे दासिक रोस रे, दोस मरस गोसाइँ ।। धु० ।।
निसि एकेश्वरि नारि अनाथिनी, करो करुना मुरारि।
तुहु बिने पारय जीवन रहय ना, दहे हृदय हामारि।।
करलु गर्ब नाथ तोइ, हामु पापिनी आन्धा।
कह शंकर नर हरि बोल रे, छोड़ विषयक धान्धा।। १९।। ३५।।

सूत्रधार—ऐसन आर्त्तनाद कये रहल बाला। जे गोपीसब कृष्ण-भावना कये थिक; पुनु प्रान कृष्णक सुमरि, तापित हुया, वृन्दाबन पसि बिचारल। तदनन्तर कृष्णक खोज पेखिकहो; काहु गोपी सखिसबक जे बोलल, ता सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग–श्रीगांधार—एकताल

ओरे सखि ! पेखो रे, हामार जीवन कानु, ओहि पथे गेल लीलाइ।
ध्वज-बज्र-पंकज खोज हेरलों रे, कमन रमनि संगे जाइ ।। धु० ।।
सतिनिक खोज देखि हृदये न सहे रे, अधिको मिलल दुख मोर।
सब गोपिनीक धन बन्धु अधर मधु, पिये एकुश्वरी करि चोरि।।
देखो सखि सतिनिक कोले करिया रे, कुसुमे करावति लासा।
बहे गोपिनिक कानु बोके तुलिया रे, कहतु शंकर कृष्णदासा ।।२०।।३६।।

सूत्रधार—ऐसन खोजगुड़ि आइते, गोपीसब से सतिनिक क्रन्दन सुनिया, बेगे आसिकहों, राधाक बेड़िया बात पुछत।

सखिसब—हे सखि ! कि भेल, कि भेल ? प्राण कृष्ण कौन भिति गेल ? सत्वरे कह।

राधा—(आखि, मुख मुचि, निश्वास तेजिकहों, कहल) सखिसब, कि पुछह ? हामु अभागिनी स्वामी कृष्णक कौन मान नाहि साधल ? कृष्णे बोके बान्धि हामाक फुरावल, से गर्बे अन्ध भेलों—कृष्ण कान्ध बगाइते गेलों, से अपराध बान्धव कृष्ण हामाक छारि कौन भिति गेल, इहा नाहि जानो।

सूत्रधार—ओहि बुलि, क्रन्दन कये लागल बाला।

श्लोकः

निशम्य तद्वचो गोप्यो निराशाः कृष्ण दर्शने।
पुनः पुलिनमागत्य जगुर्गोविन्दचेष्टितम् ।। १७ ।। ३७ ।।

[उस वचन को सुनकर गोपियाँ कृष्ण-दर्शन से आशा-रहित हो पुनः यमुना के तट पर जाकर गोविन्द का गुण गाने लगीं।]

गीत

राग–आशोवारी—एकताल

गोपिनोक कैसे केसव जिय लेहु।
अबहु बहुरि नाथ दरसन देहु ।। धु० ।।
तुआ पद-पंकज जोवन आधारू।
ताहे ना हेरि हरि रहये ना पारू ।।
दरस सरस मुख-कमल मधाइ।
करहु करुणा कृष्ण-किंकरे गाइ ।। २१ ।। ३८ ।।

गोपीसव—हे बन्धु माधव, तोहारि जनम निमित्तो गोकुल अधिक सम्पूर्ण भेल। सर्व लोक सुखे रहइछि। हामाक कैसे मदन के हाते मारयत थिक ? हे सखि, तोहों यसोदानन्दन न ह। जगत राखिते ब्रह्माए प्रार्थल, से निमित्तो तोहों सर्व अन्तर्यामी श्रीकृष्ण वेकत हुयाछ। हामरासवक अघ-वत्स-पूतना-वृष्टि-बह्नी हन्ते रक्षा करइछ। अखन कि निमित्तो रजनीकहो वनमध्ये हामाक तेजल ? स्वामि ! जे ईश्वर नारायण तुमि, ऐसन भकतक त्याग, तोहाक उचित न हे। हे नाथ ! जे भकतक मनोरथ पुरे, से हस्त पद्म हामार माथे थोसिया स्वामी। जाहेर स्मरने जगतक पाप हरे, सोहि पद-पंकज हामार स्तन उपरे अपह नाथ। देखो देखो, तोहारि किंकर मरि जाञँ। अधरामृते जियाउ, आसि स्वामी।

सूत्रधार—ओहि बुलि, पुन जैसे क्रन्दन कये प्रार्थल, ताहे देखह-सुनह।

गीत

राग-आशोवरी—एकताल

करुणा-सिन्धु जीवन लेहु कति लाइ।
मोहन बंसिर स्वने निसि विपिन आनि, कैसे तेजलि मधाइ ॥ध्रु०॥
पति सुत सब तेजि तेरि किंकरि हयो, हामु मुगुधि गोपनारी।
तुहुँ कपट कय कैसे न देसि हे, दरसन मेरि मुरारी ॥
तोहों परम धन गोपिनी-जीवन, जानि कयलु तसु आसा।
तोहों दआल दीन जन बान्धव, कहतु शंकर हरिदासा ॥२२॥३९॥

गोपीसब—हे स्वामि कृष्ण ! तोहार जे चरन-पंकज कठिन तन उपरे, हामु लासे लासे थञों। गोसाञि ! से सुकोमल पावे कैसे कण्टक वने बेड़ाव ? इहाक सुमरिते, प्रान-बन्धु, हामार प्रान फुटि जाइ।

सूत्रधार—ओहि बोलिते प्रेम उपजल। लोतक झुरि माटि लुटि पड़ल। अतिसय मरम चड़ल। दीर्घ निश्वास तेजि डाकि बोलल—हे स्वामि ! तोहारि दासीसब मरिये जाञों। नाथ, दरसन देहु। ओहि बुलि, हा कृष्ण ! हा कृष्ण घन घन जम्पिये, आर्त्तरावे क्रन्दन कय लागल गोपीसब। से क्रन्दनक उर्मिगगन मण्डल बेड़ल।

श्लोकः

गोपीप्रेमाकुलः कृष्णो वारिपूरितलोचनः।
आविर्बभूव तन्मध्ये साक्षात्मदनमोहनः ॥१८॥४०॥

[गोपियों के प्रेम से आकुल हो श्रीकृष्ण नेत्रों में जल भरे हुए साक्षात् मदनमोहन उनके मध्य आविर्भूत हुए।]

सूत्रधार तदनन्तर, गोपीक प्रेम-भावना देखिये, श्रीकृष्ण परम आकुल भेल; हृदय द्रविल। ततकाले गोपीसब मध्ये, कोटि कन्दर्प-दलन-रूपे जैसे बेकत भले, ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि वोल हरि !

गीत

राग—धनश्री

बेकत भेल मुरारि।
गोपिनी-प्रेम-सुधा रस आकुल, कमल नयन झुरे बारि ।।ध्रु०।।
हार मुकुट मनि कुण्डल मण्डित, स्याम रुचिर पीत बासे।
मनमथ कोटि मथन मन मुरति, इन्दु कोटि परकासे ।।
अधर मधुर बेनु बावत आवत, कण्ठे कदम्ब माला डोले।
पद जुग मंजिर झुरय शंकरे कय, एहु रूपे त्रिभुवन भोले ।।२३।।४१।।

सूत्रधार—ऐसन कोटि इन्दु परकास, कृष्ण-रूप पेखिये, गोपीक ताप ततकाले दूर गेल। आः पावल पावल बुलि, अति सत्वरे उठिकहों प्रान-माधवक देड़ि धरल गोपीसब।

श्लोकः

इन्द्रियाणां यथा प्राणमायान्तं वीक्ष्य गोपिकाः।
जगृहुः सहसोत्थाय कृष्णं प्रेमरसाकुलम् ।।१६।।४२।।

[इन्द्रियों में जैसे प्राण आ जायें वैसे ही कृष्ण को आते हुए देखकर गोपियों ने प्रेम-रसाकुल हो उनको सहसा गले से लगा लिया।]

सूत्रधार—गोपीसव काहु कृष्णक आलिंगि धरल; काहु पद-पंकज, काहु काहु बाहु कान्धे लैया सुंघय। तदनन्तर, प्रानबन्धु माधवक सन्मान कये, आँचोर पाति बैसाया, परम भकति करये लागल। काहु धरि हस्त-पाव मर्दय, काहु ताम्बुल जोगावय, काहु आँचोरे विचिकहुँ, प्रनय-कोपे जे बोलल, ता सुनह।

गीत

राग—गौरी

जानलुँ रे प्रान पिउ रे, तेरि जैसन रीत।
नाइ एकु तिल तेरि तिरी-बध मीत ।।ध्रु०।।
प्रान टुटत तेरि चरन ना हेरि।
कैसे ना देसि दरसन एति बेरि ।।
अतये कठिन कैसन चित्त तोइ।
शंकर कह हरि बिने गति नाहि कोइ ।।२४।।४३।।

सूत्रधार—हे स्वामी ! तोहों कपट कय, निशि हामाक बन मध्ये तेजल । ओहि बुलिते नयनक नीर झुराइ, हेठ माथ कय गोपीसब ।

श्लोकः

निरीक्ष्य करुणां कृष्णां गोपिनाम् पीतवाससा ।
मार्ज्जयन्मुखमाश्वास्य प्रोवाच साश्रुलोचनः ॥२०॥४४॥

[गोपियों की करुण दशा देखकर कृष्ण साश्रु हो अपने पीताम्बर से उनके अश्रु पोछते हुए उन्हें आश्वासन देते हुए इस प्रकार बोले ।]

सूत्रधार गोपीक करुण देखिये, श्रीकृष्ण सजल नयन भेला । ततकाले उठिकहों, पीत वस्त्रे सखिसबक मुख मुचिकहों, प्रबोध कयल ।

श्रीकृष्ण हे सखिसब, तोमार सबक ऐसन प्रेम भकतित, हामु परम आकुल । अतये कठिन वचन नाहि बोलब । हामाक निमित्ते विलाप छाड़ह । हामु वचनेक बोलों, ता सुनह ।

गीत

राग—केदार

सखि सब ऐसन बचन ना बोल ।
तोहरि परम प्रेम-भकति सहजे पेखि, न सहे हृदि मोर ॥ध्रु०॥
तोहाक भकति सुझये नाहि पारों, ... ।
रहल धार मोहे गोपिनी, सुन सखि स्वरूप कहों बानि ॥
अब जब दाय सुन्दरि सब आपुन, छोड़बह तब अरिनि ।
तोहोंसब बिने नाहि बन्धु हामारि, प्रान अधिक प्रिय मानि ॥
अब सखि बिलाप ताप तेजहु, भकत-वतसल मोक जानि ।
भकतक दुख देखि हृदि सहे नाहि, शंकर कहु, हरि बानि ॥२५॥४५॥

श्रीकृष्ण—हे सखिसब, विलाप छाड़ह । तोरासब जे प्रेमभकति कयल, ताहे सुझये नाहि पारि । हामु रिनि हुया रहल । ओहि सत्य वानी जानि असूया छोड़ह । हामाक सपत उठह उठह । परम उत्सुके रास केलि करसिया ।

सूत्रधार—ओहि बोलि, हाते धरि तुलिकहों, जमुनाक बालि नामि, रासक्रीड़ा आरम्भल । गोपीसब बिरह ताप तेजिये, कृष्ण वाक्यामृते तृपिति हुया, परम उत्सुके क्रीड़ाक प्रवेरल । हरि काहुक चुम्बय, काहुक हास्ये निरिखय, काहुक नखे तन परसय, काहुक आलिंगय । एवंविध अनंग खेलाये, गोपीक चित्त रंजि श्रीगोपाल क्रीड़ा कयल । गोपीसब कृष्णक सन्मान पाइ जैसे परम उत्सुके केलि कयल, ता देखह-सुनह ।

गीत

राग–माउर—ताल खरमान

ब्रज-रमनी संगे खेलत गोपाल, आनन्दे मन मगने ।
हरि को मकर कुण्डल लैला काहु, बिहसि हासि बदने ॥ ध्रु० ॥
काहु कर कंकन काढ़ि लैला काहु हासि बासि लैला गोरी ।
पीत अम्बर, बरमाला लैला हँसि काहु करय बरजोरी ॥
काहु कदम्ब माला बाला लैला हँसि कण्ठ कौस्तुभ काहु लैला ।
रमनीक विनये रमया माँगे शंकर कह हरि खेला ॥ २६ ॥ ४६ ॥

सूत्रधार –गोपीसब श्रीकृष्ण बेढ़ि धरिकहुँ; काहु वसन, काहु बंसी, काहु कंकन काढ़ि लेलह । कृष्णे विनये खोजिते, हासि हासि पुनु पिन्धावल । आहे लोकाइ, पेखो-पेखो, जाहेर चरन ब्रह्मा रूद्रादि ध्याने धरय, सोहि परमेश्वर अज्ञानी अनाचारी गोपनारीसब सहिते काम-केलि कय थिक । हरि भकतिक ऐसन महिमा ! इहा जानि निरन्तरे हरि बोल हरि ।

श्लोकः

ततोऽतिकौतुकोद्रेकं निशम्य ब्रजयोषिताम् ।
गोपीभिर्भगवान् कामक्रीड़ामारभताच्युतः ॥ २१ ॥ ४७ ॥

[तदन्तर ब्रज की स्त्रियों में कौतुक का उद्रेक देखकर अच्युत भगवान् कृष्ण ने गोपियों के साथ काम-क्रीड़ा आरम्भ की ।]

सूत्रधार—तदनन्तर श्रीकृष्ण संगे निया, रंगे अनंग केलि करिते, जमुनाक बालि नमि, रासमण्डल कयल । जत गोपी तत मुरूति हुया, बाहु मेलि गोपीक कण्ठ आलिं-गिकहो, जैसन क्रीड़ा कयल, ता देखह-सुनह ।

गीत

राग–गौरी—परिताल

भुवन भुलाइ आनन्दे गोविन्द नाचे, प्रभु नाचत चरन चलाइ ।
भुज मेलि केलि करत कण्ट आलिंगि, रंगिनी गोपी मिलाइ ॥ ध्रु० ॥
जत गोपी तत मुरूति माधव, चलति लय लासे हासे ।
जैसे हेम मनि माझे माझे, मनि मरकत परकासे ॥
करइते नृत्य कंकन झनकित, मंजीर रून झुन बोले ।
कह शंकर केलि हरि को हेरत, सुर रमनी सब भोले ॥२७॥४८॥

सूत्रधार—ऐसन कृष्ण समे नाना क्रीड़ा करिते गोपीसब आनन्द-समुद्रे मनमग्न हुया, सबहि बोले—हामाक मात्र कृष्ण आलिंगि रहे । ओहि बोलि कौतुक केलि

कयथिक। सोहि समय पुनु शंखचूण यक्ष, गोपी भय जनिते आवल। ताहे पेखिये, त्राहि-त्राहि बोलि, गोपीसब कृष्णत शरण लेल। विक्रम देखाया, कृष्णे यक्षक खेदावल। तदनन्तर पुनु क्रीड़ा कय लागल, श्रीकृष्ण गोपी समे जैसे; ता देखह-सुनह।

गीत

राग—नाट—परिताल

खेले मधुर मधाइ रे, संगे गोपिनी नाचे रे।
जैसे तड़ित जड़ित मेह-मराडलि प्रकासे रे॥ ध्रु०॥
चलिते चुम्बइ बाला, गावे गीत नीक रे।
गोपी गोपालक केलि मिलल अधिक रे॥
धरल गोपिनी कराठे बाहु मेलि केलि रे।
भुलि ससधर रथ तम्भित भेलि रे॥
हेरये सुर-रमनी मुरुछित भेलि रे।
गोबिन्द करत केलि शंकर बोल रे॥२८॥४६॥

श्लोकः

सुरसेवित श्रीकृष्ण क्रीड़ापीड़ातुराभृशम्।
शरीरमपि नोद्धर्तुं शेकुर्गोकुलयोषितः॥ २२॥ ५०॥

[सुरसेवित श्रीकृष्ण के साथ क्रीड़ा की पीड़ा से गोकुल की स्त्रियाँ इतना अधिक आतुर हो चुकी थीं कि अपने शरीर को संभालने में भी असमर्थ हो गयीं।]

सूत्रधार—श्रीकृष्णक क्रीड़ाये पीड़ित हया से गोकुल-कामिनीसब आकुल भेल। केश वेश खसल, वस्त्र सम्बरये नाहि, कण्ठक सातेसरि छिण्डि पड़ल, कटिक मेखला शिथिल भेल, कुच कु काँचुलि फाटलि पड़ल, सब शरीरे धर्म बहयँ, मुखे स्वास फोकारे। कृष्णक धरिकहों, महाश्रान्त हुया रहल। श्रीकृष्ण गोपीसबक जैसे श्रम दूर कयल, ता देखह - सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—गौरी--ताल यति

करत सुरत केलि गोपिनी दुरबलि भेलि।
धरि हरि कराठ रहत बाहु मेलि॥ ध्रु०॥
सुतल कामिनी काहु हरि को कोले।
काहु गोपीक पीत अम्बर डोले॥
श्रम - जल - बिन्दु इन्दु - बदन बिराजे।
हरि काहु कर - पंकजे मल माजे॥

काहुक केस केसव बान्धे हाते ।
शंकर कह खेले गोपिनी नाथे ॥२६॥५१॥

सूत्रधार—श्रीगोपाले काहु गोपीक केस, बान्धल, काहुक गावे अगर-चन्दन घसल, कर्पूर-ताम्बुल साजि जोगावल; एवंविध नाना खेला कयकहों गोपीसबक श्रम दूर कयल । आहे लोकाइ, पेखो-पेखो, कोटि ब्रह्माण्डक ईश्वर श्रीकृष्ण कैरे अनाचारी गोपी ताहे कृपाये श्रम दूर कयल । हरि भकतिक महिमा कि कहब ? इहा जानि निरन्तरे हरि बोल हरि ।

श्लोकः

ततः आगत्य तरसा गोपाले कृत कौतुके ।
जहार यक्षो गोपीनामेकां कामविमोहितः ॥२३॥५२॥

[श्रीकृष्ण जब क्रीड़ा में रत थे तभी सहसा वहाँ पहुँचकर कामान्ध यक्ष (शंखचूड़) ने एक गोपी का हरण कर लिया ।]

सूत्रधार—गोपीसब सहिते नानाविध केलि कये, श्रीगोपाल तथि थिक । तदनन्तर, परम कामातुर हुया यक्ष शंखचूड़, काले गरसल, रास-मण्डल हन्ते एक गोपीक धरिकहो, कोले करि बेगे कहो लवड़ि देल । ताहे पेखि, सब गोपी तरासे काम्पय । जो गोपीक यक्षे लया जाइ, से बाला त्राहि कृष्ण त्राहि कृष्णस्वामि, अनाथक बन्धु बुलि, आर्त्तराव कये जाइ । अनन्तरे भकतक दुख देखि कोपे गोपाल साल वृक्ष उत्पाटिकहो, ताहे तुलि, जक्षक ततकाले धाया चलल, ताहे देखह-सुनह ।

श्रीकृष्ण—अरे पापी, कहा जावय ? रह रह ।

पयार

छोड़ छोड़ पापी गोपी हमारा । गरजय जक्षक नन्दकुमारा ॥
त्राहि त्राहि कृष्ण गोपिनी रावे । पाछु पाछु तसु माधवे धावे ॥
नाहि नाहि भय बोले गोपाल । जक्षक खेदे धरि तरु साल ॥
रे रे संखचूर तिरी - चोर । मोड़व घाड़ छोड़ गोपी मोर ॥
सुनि तरासे जिउ गेल उड़ि । पापी पलावत गोपिनी छोड़ि ॥
बेगहि जाइ जनि सर्व त्रास । जक्षक खेदे देव दिव पास ॥
रहि कोपे दाँत कामुड़ि खाइ । खेपल शूल माधवक लाइ ॥
पेखि हाते हरि करि आस्फाल । भाँगल शूल हानि तरु साल ॥
लबड़े संखचूर उड़ि प्रान । धावे पाछु पाछु पुरुष पुरान ॥
बाघक आगु पलाय जस छाग । धरल गोपाल पाई तसु लाग ॥
मारल कोपे मुष्टि गोपीनाथ । पड़ल जक्षक छिंडिकहो माथ ॥

ताहेक रत्न चूड़ामनि आनि। गोपीक अभय बुलिला बानि ॥
ताहे पेखि गोपी दाँत प्रकासि। साधु साधु कय पूजय हासि ॥
मारल संखचूर दुराचार। मिलल रंग ढंग गोपीकार ॥
सिरत कानुर कुसुम सिंचे। बेढ़ि काहु आँचोरे बिंचे ॥
मोचे श्रमजल कतो गोपिनी। कतोहो गावत गीत आपुनि ॥
कृष्णक भकति मोक्ष निदान। सुन सब लोक बेद प्रमान ॥
कृष्णक किंकर शंकर बोले। पवित्र करा हरि हरि बोले ॥३०॥५३॥

श्लोकः

निहत्य गोपीहर्त्तारं यक्षं स्त्रीभिस्ततो हरिः।
जलक्रीड़ां समारम्भे प्रविश्य यमुनाजलम् ॥२४॥५४॥

[गोपियों को हरण करने वाले यक्ष को मार कर हरि ने स्त्रियों के साथ यमुना के जल में प्रविष्ट हो जलक्रीड़ा प्रारम्भ की।]

सूत्रधार—तदनन्तर, संखचूड़ जक्षक मारिकहो, परमप्रिय गोपीजन सहित जमुनाक जल प्रवेसि; अति कौतुके जलक्रीड़ा आरम्भल। मत्त मातंग जैसे हस्तिनी सब सहित लीलाये खेलावत, सब गोपी बेड़िकहो श्रीकृष्ण जैसे जलक्रीड़ा करल, ता देखह-सुनह। निरन्तर हरि बोल हरि।

गीत

राग—गौरी–परिताल

करत गोपाल जल-केलि।
चौभिति गोपिनी पानी सिंचत हसि, रमया के मुह हेरि ॥ध्रु०॥
काहुक अम्बर छोड़ि लेला हरि, काहुक आलिंगन दान।
काहुक भोरे कोरे करि चुम्बन, काहुक कुच नख हान ॥
मत्त गज जैसन जल मह खेलतु, तरुनि करनि सब संगे।
लीला गोपाल पेखि सुर-सुन्दरि, दारल हृदय अनंगे ॥
जाहेरि चरन सुरासुर सेवत, सो हरि गोपिनीक पिउ।
शंकर कह हरि चरन सिरे धरि, तारु तारु जग-जिउ ॥३१॥५५॥

सूत्रधार—एवंबिध नाना खेलना करि जलकेलि समापल। तदनन्तर, गोपीसब कृष्णक सेवा कय लागल। काहो पीत वस्त्र परिधान कराये, काहो गन्ध-चन्दन गावे चड़ाये, काहो कदम्ब-माला गाँथि पिन्हावे, काहो ताम्बूल साजि जोगावे, काहो आँचोरे बिंचे, काहो सुरभि-सुरभि कुसुम सिंचे, काहो कृष्ण-मुख-पंकज नयन-भृंगे पिबत, काहो काहो बाला बेड़ि गोबिन्दर गुन गावत, काहुक प्रेम-रसे सरीर पुलकित; नयनक नीर

धाराये बरिसे। भाग्यवती गोपीसब महोदय पावल। आहे लोकाई, पेखो-पेखो, परम अनाचारी गोपनारी काम-भावे हरिगुन गाइ परमगति पावल। हरि भकतिक ऐसन महिमा; आचारी-अनाचारी बाचये नाहि। इहा जानि निरन्तरे हरि बोल हरि।

श्लोकः

एवं वृन्दावने तस्मिन् व्यतीतां क्रीडया निशाम्।
निरीक्ष्य भगवान्नाह व्रजं यातावलाद्रुतम् ॥२५॥५६॥

[इस प्रकार उस वृन्दावन में क्रीड़ा करते हुए रात्रि को व्यतीत होते हुए देखकर भगवान् ने गोपियों से कहा कि शीघ्र ही व्रज को लौट जाओ।]

सूत्रधार—निर्भय क्रीड़ा करिते सकल निसि समापल पेखि, श्रीकृष्ण बोलल।

श्रीकृष्ण—हे सखि सब ! जावत प्रसन्न नाहि होवे, तावे सत्वरे आजु व्रज जाव। बिलम्ब परिहर।

सूत्रधार—ऐसन बानी सुनि, गोपीसकलक माथे जैसे कलस भाँगल। निस्वास फोकारि मुखे बचन हरल। तबध नयने हेठ माथ कयल।

श्रीकृष्ण—हे सखिसब ! जावे नाहि प्रभात हय, लोके नाहि जानत, तावे सत्वरे गृहक चल। हामाक यदि राखब, बेगे जाव।

सूत्रधार – गोपीसब सुनि, निस्वास फोकारि, कृष्णक चरन-रेनु माथे माखि, परम मौने व्रज चलल। जैसे रजनीक गारी देइ, कुकरा कु सपय, ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—अहोर—यतिमान

बहुरि गोरी गोपाल प्रान नेहारि।
फोकारे निस्वासा चलये नाहि चरना, नयना पूरित बारि ॥ध्रु०॥
कुकुरा रावे जानि रयनि सेस, ताकु सपत पुत माथे।
आजु बैरिनी निसि निमिसे पोहावलि, हामाकु तेजल प्राननाथे ॥
भरि पाँच सात चलिते तनु तापित, हरि बिने देखो आँधियारि।
प्रेम परसे पुनु परये धरनी लुटि, शंकर उद्धार मुरारि ॥३२॥५७॥

सूत्रधार—श्रीकृष्णक तेजिते जंसे प्रान छूटे, माटि लोटि क्रन्दन करये बालासब। ताहे पेखि श्रीकृष्ण प्रबोधि बोलल।

श्रीकृष्ण—सखिसब ! उचित नोहे। आजु गृहे जाव। प्रान सखिसब ! हामाकु बचन राखह। उठह उठह।

सूत्रधार--गोपीसब सुनि, आखि मुख मुचि, श्रीकृष्णक प्रनामि, पुनु चलल। भरि आगु कु बढ़ये नाहि। कथं कथमपि व्रज जाइ, किछो कृत्य करये नाहि पारय। केवल कृष्ण-चरन चिन्ति रहल। कृष्णक बिरहे सबक देह दहय। एक थान हुया कृष्ण-गुन गाइ जैसे दिवस बंचल, ता सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग-अहीर—एक ताल

माइ! हरिक बिछुरि कत रहबि।
जाहे नेहारि सुर-रमनी मुरुछि परे, ताहे बिरह कत सहबि॥ध्रु०॥
बाम बाहुत बाम कपोले मिलाय केलि, कदम्बक मूले बेनु बाइ।
सुनि बेनु धेनु करत तृन दसनु, रहे नीर नयन झुराइ॥
सुनिय मोहन धुनि तम्भित तरंगिनी, पुलक कमलकुल दोले।
हरिनी हरावत चेतन ए तनु, बिछुरि रहत रस भोले॥
नील तनु पीत पट पेखि गगन घन, बोलि सुरुज करि मान।
छाया छत्र धरत करत मधुर धुनि, कृष्ण-किंकर रस भान॥३३॥५८॥

सूत्रधार—हे सखिसब! जेखने श्रीकृष्ण बाम बाहु कपोले थापि, कोमल अंगुलिचय चालि बेनु बजावय, ता सुनि सुर-सुन्दरीसब मुरुछि परय। धेनुसब तृन दन्ते, नयनक नीर झुरे, हरिनीसब चेतन हरावत, नदीसब कामे कम्पये रह; पेखु पेखु; बिरिख, पशु, से सबो कृष्ण-गीते मोहित हय। से प्रानवन्धु बिरहे हामु कैसे जीव राखब? ऐसन ं वहारे, कृष्ण-गुन गाइ, बिरह बिलाप कय दिन सब बंचय। संध्या समये, पूर्ववते वृन्दावने गैयाकहु, पुनु प्रान कृष्ण सहित समस्त सरतरात्रि रास-क्रीड़ा कय रहत गोपीसब। श्रीकृष्ण एवंबिध नाना खेलना कय गोपीसबक मनोरथ पूरल। ओहि कामजय, केलिगोपाल नाम नाटक सम्पूर्ण भेल। आहे लोकाइ, ओहि भारतवरिखे, नरतनु कोटि कलप अन्तरो जीव नाहि पाइ। बिशेषत कलिजुगे, कृष्ण-गुन-नाम-श्रवण-कीर्त्तन बिने गति नाहि। इहा जानि निरन्तरे हरि बोल हरि।

मंगल – भटिमा

मीन रूपे प्रलय पयसि सत्यव्रत जो तारिले।
कुरूम रूपे क्षीरसागर मथने मन्दर धारिले॥
सुकर रूपे हिरण्य विदारि देव-भय कयो त्रान।
सोहि हरि तेरि करतु नित्य मुकुति मंगल विधान॥

नरसिंह रूप प्रकटि आटोपे हिरण्यकसिपु दारिले।
वामन मुरुति बलिक छलिकहो इन्द्र जोहि तारिले॥

परसुराम नामे अवतरि क्षत्रिय कयो निरजान।
सोहि हरि तेरि करतु नित्य मुकुति मंगल विधान॥

दाशरथि राम रूप धरिकहो जलधि बान्धल सेतु।
सीता उद्धारल बधल वैरी ए दशस्कन्ध धूमकेतु॥
रामहलधर रूपे धेनुक द्विविद कय निरजान।
सोहि हरि तेरि करतु नित्य मुकुति मंगल विधान॥

बोध मुरुति जगत मोहिये कयल पाखण्ड रीति।
धरम दूर गेल भेल मलमति लोक सकल कलित॥
कलकि रूपे भकतक तारि करबि म्लेच्छ उछान।
सोहि हरि तेरि करतु नित्य मुकुति मंगल विधान॥

कृष्ण रूपे परम ईश्वर भेलि लीला अवतार।
जासु नाम गुन श्रवन कीर्तन. करत जगत उधार॥
जोहि अघ बक कंस कुवलय कयल मारि निरजान।
सोहि हरि तेरि करतु नित्य मुकुति मंगल विधान॥

जाहे महिमा ब्रह्मा शंकर कबहुँ अन्त न पाइ।
जासु नाम धरि मुनिबर पामर दुहों एक गति पाइ॥
जाहे भकतिक सकतिक ऐसन निगम सब परमान।
सोहि हरि तेरि करतु नित्य मुकुति मंगल विधान॥

श्री रामराया हरि को परमा भकत रसिक सुजान।
केलिगोपाल करावत नाटक कृष्ण-किंकर ओहि भान॥
सुनह बुधजन नाहि निन्दब मोहि नाहि दोस बखान।
जोहि सोहि बानि हरिगुन मिश्रित मुकुति मिलावत जान॥

देवक दुर्लभ भारते नर तनु हरि बिने बिफलेहि जाइ।
ओहि जनम-चिन्तामनि कैसे बेचहु काच कु लाइ॥
ओहि संसार सार नाहि हेरव हरि को बिना गुन नाम।
निस्तर निस्तर लोक निरन्तर डाकि बोलहु राम राम॥३४॥५६॥

॥ केलिगोपाल नामेदं नाटकं समाप्तम्॥

रुक्मिणी-हरण नाट

नमः श्रीकृष्णाय

श्लोकः

यत्पादपङ्कजरजः शिरसा सुरेशः शर्व्वादयो दिविषदोऽतिमुदोद्वहन्ति ।
यत् कीर्त्तनात् कलिमलं मनुजास्त्यजन्ति कृष्णस्य तस्य चरणं शरणं व्रजामः ।।१।।

[जिस कृष्ण के चरण-कमल-रज को सुरेश, महेश आदि अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक धारण करते हैं; जिसके कीर्त्तन करने से मनुष्य कलि-मल को त्याग देते हैं, उसी कृष्ण के चरणों की शरण में हम जाते हैं ।]

अपिच

चैद्यादीन्नृपतीन विजित्य तरसा येनाहृता रुक्मिणी ।
येनाजौ विनिजित्य दुर्ज्जयरिपू रुक्मी विरूपीकृतः ।।
वैदर्भ्यां विधिवद्विवाहमकरोत् यो द्वारवत्यां मुदा ।
तस्मै श्री परमातमने भगवते कृष्णाय कुर्मो नमः ।।२।।

[जिन्होंने शिशुपालादि राजाओं को जीत कर रुक्मिणी को शत्रुओं से छीन लिया; जिन्होंने दुर्जय शत्रु रुक्मी को युद्ध में जीत कर विरूप किया और जिन्होंने वैदर्भी (रुक्मिणी) के साथ द्वारावती में विधिवत् विवाह किया, उन्हीं परमात्मा भगवान् कृष्ण को हम नमस्कार करते हैं ।]

नान्दी गीत

राग–सुहाइ—एकताल

जय जय जग-जीवन मुरारू । पावे परनाम हमारू ।।ध्रु०।।
पंचमुहे जाहे तुति बुलि । सिरे हर धरु पद-धुलि ।।
जाहे सुरासुर करु सेवा । सोहि मोहि गति देव देवा ।।
रिपु नृपसब जोहि जिनि । हरल हरसे रुक्मिनी ।।
करल हरि बिबिध बिलासा । कहतु शंकर हरिदासा ।।१।।३।।

नाद्यन्ते सूत्रधारः । अलमति विस्तरेण । प्रथमं माधवो माधव इत्युक्त्वा नत्वा नारायणं सभासदान् सम्बोध्याह ।।

श्लोकः

भोभोः सभासदाः साधु शृणुध्वं श्रद्धयाधुना ।
रुक्मिणीहरणं नाम नाटकं मुक्तिसाधकम् ।।३।।४।।

भटिमा

जय जय जादव देव। आदि अन्त न पावत केव ॥
जाकेरि चरन–सरोरूह ब्रह्मा। शंकर करु नित सेव ॥
जोहिं भयो अवतार। हर्रलि भूमिकेरि भार ॥
कयलि नरसिंह मुरति दारुन। हिरण्यक हृदय बिदार ॥

निरमिये सयल संसार। करत बिबिध बिहार ॥
जो ब्रह्माण्ड भाण्ड भेदल। पदनख परस प्रहार ॥
कलि - मल - मोचन चित्र। जाकेरि परम चरित्र ॥
पद-पंकज-रज परसिनि गंगा। सुर नर करय पवित्र ॥

अघ बक धेनुक मारि। कंस केसि अन्तकारि ॥
मधु मुर नरक निवारन बारन। कुबलय जीवनहारि ॥
इन्द्र दरप करु चूर। ब्रज - जन भय भेलि दूर ॥
रास बिलास हास परिरम्भल। गोपी मनोरथ पूर ॥

मर्दिय बिसधर कालि। जमुना हृद निकालि ॥
कुबुजा काम मनोरथ पूरल। बरद बरद बनमालि ॥
जाकेरि ये गुन नाम। जग जन पूरल काम ॥
पापी पाप पराभव भंजे। जी मुहे लेहि अविराम ॥

सोहि कृष्णक नाटक। पाप मूल उत्पाटक ॥
सुन साधुजन जाकेरि इच्छा। जाहिते बैकुंठक बाटक ॥
कृष्ण चरित्र अति सार। रुक्मिनी - हरण बिहार ॥
ताहे सुनिते भनिते पावत। पाप - पयोनिधि पार ॥

भो भो साधु सभासद। आवे मरन महापद ॥
जानहु कृष्ण चरित मृत्यु-तारक। कारक मुकुति संपद ॥
धरमक राजा नाम। जानि न कर बिसराम ॥
कृष्णर किंकर शंकर कहइ। डाकि बोलहु राम राम ॥२॥५॥

सूत्रधार—भो भो सभासद, साधुजन, जे जगतक परम गुरु, नारायण, जाहेरि अंस अवतरि, बारम्बार भूमिक भार हरय, सोहि भगवन्त श्रीकृष्ण साक्षाते आपुने अवतरि, ओहि सभामध्ये रुक्मिणी-हरण बिहार-नृत्य परम कौतुके करब, ताहे सावधाने देखह-सुनह। प्रथमे उद्धव सहित श्रीकृष्णक प्रवेस, तदनन्तर सखिसब सहित रुक्मिनीक प्रवेस। इति ज्ञात्वा सर्वे सावधाने स्थीयताम। [आकाशे कर्ण दत्वा] आहे संगी! कि वाद्य सुनिये?

संगी—सखि, देव-दुन्दुभि वाजत ।

सूत्रधार—आहे देव-दुन्दुभि वाजत । आः, से परमेश्वर श्रीकृष्ण मिलल, आः मिलल ।

श्लोकः

प्रवेशमकरोत् कृष्णः स्वकान्तया कामकोटिजित् ।
जगतां जनको धाता सोद्धवः साधुबान्धवः ॥४॥६॥

सूत्रधार—आहे सभासद लोक, जाकेर कथा करैंछि, सोहि श्रीकृष्ण उद्धव सहिते ए आवत । ॥ इति संगी निष्क्रान्तः ॥

गीत

राग–सिंधुड़ा—एकताल

अये जगत गुरू कयो परबेस । जिनिये काम कोटि नटवर वेस ॥ ध्रु० ॥
स्यामल तनु पीत अम्बरु लासा । बदन इन्दु रुचि ईसत हासा ॥
नयन पंकज भुज लम्बित जानु । कण्ठे कौस्तुभ नव शोभित भानु ॥
हार मुकुट मनि कुण्डल डोले । चरन पंकज मह मंजीर रोले ॥
ससधर कोटि कान्ति परकासा । शंकर कह ओहि केशव दासा ॥ ३ ॥ ७ ॥

सूत्रधार—ओहि परकारे, श्रीकृष्ण प्रवेस कयकहु, एक पास हुया रहल । तदनन्तर रुक्मिनीक प्रबेस सुनह । ॥ संगी प्रवेस ॥

सूत्रधार—संगी, कि वाद्य वाजय ?

संगी अये, देव-वाद्य बाजत ।

सूत्रधार—आः, से गोसानि रुकिमिनी मिलल मिलल; अये लोक देखह ।

श्लोकः

रूक्मिणीं कारयामास प्रवेशं सखिसंयुताम् ।
मोहयन् हर्षयन् चारू रूपलावण्यकान्तिभिः ॥ ५ ॥ ८ ॥

सूत्रधार—सखिसब सहित, से रुक्मिनी जैसे प्रवेस कयल, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि वोल हरि ।

गीत

राग–सुहाइ—एकताल

आवत रुक्मिनी कय परसार । सखिसब संगे रंगे करत बिहार ॥ ध्रु० ॥
इसत हसित मुख चाँद उजोर । दसन मोतिम जस नयन चकोर ॥
मानिक मुकुट कुण्डल गण्ड डोल । कनक-पुतलि तनु नील निचोल ॥
कर कंकन केयुर झनकार । मानिक काँचि रचित हेमहार ॥
चलइते चरन मंजीर करू रोल । रूपे भुवन भुले शंकर बोल ॥४॥९॥

[सखि लीलावती, सखी मदनमंजरी सहित रुक्मिणी प्रवेश । संगी निष्क्रान्तः ।]

सूत्रधार—आहे लोकाइ, से गोसानि देवी रूक्मिनी ऐसन प्रवेस कयकहुँ नृत्य कये, एक पास हुया रहल । हे सामाजिक लोक, तदनन्तर प्रस्तुत कथा सुनह । सुरभि नाम एक भिक्षुक भाट, कुण्डिन नगरी हन्ते द्वारकापुर प्रवेस कयकहु, कृष्णक भेंट, पावल । [भिक्षुक प्रवेस] ताहे देखि, श्रीकृष्ण बात पूछत ।

श्रीकृष्ण—अए भिक्षुक, तुहु के ? कोथा हन्ते एथा आवलि थिक ?

श्लोकः

कस्त्वं कस्मादिहायातः पृष्टः कृष्णेन भिक्षुकः ।
प्रत्याह कुण्डिनान्नाथ त्वान्दिदृक्षुरिहागतः ।। ६ ।। १० ।।

[कृष्ण ने भिक्षुक से पूछा कि तुम कौन हो, कहाँ से और किस प्रयोजन से यहाँ आये हो । भिक्षुक ने उत्तर दिया कि हे नाथ ! मैं कुण्डिन नगर से आपके दर्शन करने आया हूँ ।]

भिक्षुक—हामो सुरभि नाम भाट, कुण्डिन हन्ते तोहाक दरसन निमित्ते, आवल थिक । आः तोहाक अपरूप रूप सम्पत्तिक महिमा कि कहब ! हे स्वामि कृष्ण ! हामार राजनन्दिनी रूक्मिनी जब तोहार गृहिनी हये, तबे तोहार गृह बास सफल हय । से रूक्मिनीक रूप-गुन किछो कहब, ताहे सुनह ।

भटिमा

पढ़ि पुनु भाट छपय कह बानी । कृष्णक आगु रूप बखानी ॥
जय जदुनन्दन देवक देव । तोहारि चरने करहु बहु सेव ॥
तोहि महिमा कहतु नाहि अंत । पूरल परम किरिति दिगन्त ॥
तुहु सम पुरुष कतहु नहि पाइ । सुन अब बचने बोलहों गोसाँइ ॥
हामाकु कुण्डिन नगरी अनुपाम । आथे कनया एक रुक्मिनी नाम ॥
भीष्मक राजनन्दिनी बर बाला । बाढ़य नव जिनि चाँदक कला ॥
कि कहब रमनीक रुप प्रचुर । बयनक देखि चाँद भेलि दूर ॥
नयनक पेखि पाइ बड़ि लाज । कयल झाम्प कमल जल माझ ॥
बन्दुलि अधिक अधर करु कान्ति । अोतिम मोतिम दसनक पान्ति ॥
सुबलित भुज जुग रतन मोलान । उरु करिकर कटि डम्बरुक ठान ॥
नवपल्लव रुचि पद जुग सोहे । पेखिते सुरनर मुनि-मन मोहे ॥
बानि आमिया रस गुने नोहे हीन । राजकुमारीक बयस नवीन ॥
कतनु जतने बिधि कय निरमान । से कन्या हवे तोहारि समान ॥
कहलु स्वरूप अब बचन बिचारि । होबय गृहिनी जब रुक्मिनी नारि ॥
तब गृहबास साफल होव नाथ । कहलु भाट ऊपर तुलि हाथ ॥
कृष्ण-किंकर आहि शंकर बोल । करू अब नर सब हरि हरि बोल ।५।।११।

सूत्रधार—तदनन्तर, रुकमिनीक रूप गुन सुनिये, श्रीकृष्ण हेठ माथ कय निश्वास फोकारि, घन घन रुकमिनीक मात्र, ध्यान कये रहल । श्रीकृष्ण उद्धवक बोलल ।

श्रीकृष्ण—हे सखि ! ओहि भल्ल भाट । उनिकर मन पूरिये बहुत प्रसाद देहु !

सूत्रधार—तदनन्तर, कृष्णक आदेसे, उद्धवे बहुत धन भाटक देलह । श्रीकृष्णक प्रसाद पाया, चिरंजीव चिरंजीव गोसाँइ बुलि, सुरभि सन्तोषे निज देशे गेल ।

श्लोकः

श्रुत्वा भिक्षुमुखात् कृष्णो रुक्मिण्या रूपमद्भुतम् ।
तामेव सततं ध्यायत् तस्यै व्याकुलमानसः ।।७।।१२।।

[भिक्षुक के मुख से रुक्मिणी के अद्भुत रूप-लावण्य को सुनकर कृष्ण लगातार उसी का ध्यान करते हुए व्याकुल मन हो वहीं ठहर गये ।]

सूत्रधार भिक्षुक मुखे रुकमिनीर रूप गुन सुनिये श्रीकृष्ण आन चिन्ता सब छोड़ि, रात्रि दिवसे, रुकमिनीक मात्र ध्यान कये रहल, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग–धनश्री—एकताल

प्रियाकेरि काहिनी सुनिये मुरारि ।
बिरहे दहनु चित आकुल किंचित, मानस मदन बिगारि ।।ध्रु०।।
जगत निवास स्वास घन फोकारय, चिंतिते रुकमिनी नारी ।
कमन उपाय पाइ पुनु परसन, दरसन राजकुमारी ।।
गुनिते कामिनी यामिनी जाइ, नयने नीन्द नाहि आवे ।
दिवस रयनि हरि रहलि धियाइ, कृष्ण किंकर रस गावे ।।६।।१३।।

सूत्रधार—ओहि परकारे श्रीकृष्ण प्रिया कु बिरहानले आकुल हुया, हा रुक्मिनी हा रुक्मिनी मात्र वाक्य फोकारिकहु रुक्मिनीमय मात्र देखिये, सर्वथा रहल । कृष्णक दुख कि कहब ? आहे लोक, तदनन्तर, रुक्मिनीक वृतान्त सुनह । द्वारिका हन्ते हरिदास नाम एक भिक्षुक भाट कुण्डिन गैया राजनन्दिनी रुकमिनीक दरसन भेल । ताहे देखिये, बात पूछत ।

रुक्मिणी—अये भिक्षुक, तुहु के ? कोथा हन्ते एथा आवलि थिक ?

श्लोकः

को भवानिह सम्प्राप्तः पृष्टो भिक्षुरभाषत ।
द्वारकानगरात् प्राप्तः प्रार्थकोऽहं नृपात्मजे ।।८।।१४।।

[भिक्षुक से जब पूछा गया कि तुम कौन हो तो भिक्षुक ने उत्तर दिया कि हे राजकुमारी ! मैं प्रार्थी हूँ और द्वारिका नगर से आया हूँ ।]

भिक्षुक—आः, हामु द्वारिका निवासी हरिदास नाम भिक्षुक भाट । हामार सुदिवस, तोहाक दरसन भेलु । आः, तोहाक अपरूप सम्पत्तिक महिमा कि कहव ! हामार द्वारिकानाथ श्रीकृष्ण, से जेबे तोहाक स्वामी हय तेवे ये रूप जौवन सफल हय । हा हा, हे राजनन्दिनी, से श्रीकृष्णक रूप गुन किछो कहुँ, ता सुनह ।

भटिमा

सुन सुन रुक्मिनी माइ । हरि गुन कहल न जाइ ॥
मुख-इन्दु कोटि परकास । दसन मोतिम मन्द हास ॥
नयन-पंकज नव पाता । करतल उतपल राता ॥
मदनक धनु भ्रुव भंग । भुज जुग बलित भुजंग ॥
बहल वक्षस्थल सिंह बन्ध । त्रिवलि बलित कटि कन्ध ॥
उरु करिकर अवभास । मृदु पद-पंकज बिकास ॥
नख चय चाँदक पाँति । पदतल अलकत भाँति ॥
ध्वज यव पंकज सोहे । पेखिते त्रिभुवन मोहे ॥
अभिनव तरुन मुरुति । कि कहव रूपक बिभूति ॥
गति गम्भीर मृगराज । कोटि मदन हेरि लाज ॥
तुहुँ नव तरुनी प्रधान । सो हरि नवीन जुवान ॥
दुहु एक बयस समान । कयलि बिधि निरमान ॥
भुवन निरूपम रूप । सुन धनि बचन स्वरूप ॥
जब तुव पति सोहि होई । सफल जनम तब होई ॥
कहलु भिक्षुक अब जानि । कृष्ण-किंकर बोल बानि ॥
तेजु सामाजिक काम । डाकि बोलहु राम राम ॥७॥१५॥

सूत्रधार—तदनन्तर भिक्षुक मुखे कृष्णक रूप गुन सुनिये, रुकमिनीक मने परम आनन्द मिलल । अति हरिसे सखिक सम्बोधि बोलल ।

रुक्मिणी—हे सखि मदनमंजरी, ओहि भल्ल भाट । उनिकर मन पूरिये बहु विध प्रसाद देहु ।

सूत्रधार—देवीक आदेस सुनिकहो, मदनमंजरी बहुतर रजत सुवर्ण आनि, भाटक देलह । चिरंजीव चिरंजीव माइ बोलि, उत्सुके भिक्षु भाट निज देशे गेला रुकमिनो भिक्षुक मुखे कथा सुनिये, मोहित हुया, श्रीकृष्णक स्वामी भावे वरल; कृष्ण ग्राहे हृदय धरल । कृष्णक चरन चिंतिये, मात्र सर्वथा रहल । आन चिन्ता सब छाड़ल ।

श्लोकः

कृष्णस्य रूपलावण्यश्रवणेन विमोहिता ।
दधौ तच्चरणाम्भोजं भजनीयं सतां सती ॥९॥१६ ॥

[कृष्ण के रूप-लावण्य को सुनकर और उससे विमोहित हो सती रुक्मिणी ने सज्जन-सेव्यमान कृष्ण के चरण-कमल का ध्यान किया ।]

सूत्रधार—से राजकुमारी रुक्मिनी, कृष्णक रूप-लावण्य सुनिये, मोहित हया, जैसे कृष्णक चरन चिन्तिये रहल, आहे लोक, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—आशोवारी—-जोतिमान

कैसन केसव दरसन होइ । हरि विने बिफल जनम अब मोइ ॥ ध्रु० ॥
बसति दिगन्तर नाथ हामारू । भेंट कमने होइ स्वामि मुरारू ॥
हामु किंकरी हरि नाथ हामार । कह शंकर रुक्मिनीक बेवहार ॥८॥१७॥

सूत्रधार—आहे लोक ! देखु-देखु, रुक्मिनी ऐसन कृष्ण-चरन चिन्तिये रहल । तदनन्तर, रुकमिनोक पिता, बृद्ध राजा भीष्मक, पात्र मंत्री ज्ञातिसबक आनिकहु, जे बोलल, ता देखह सुनह ।

[भीष्मक ज्ञातिसब सहित प्रवेश]

भीष्मक—आहे पात्र मंत्री, ज्ञातिसब ! हामार दुहिता रुक्मिनी बिवाहक योग्य भेलि । कन्याक सदृश वर कौन थाने थिक ? सबहि बिमरिस कये बोल । हामु जानु, एक देवकीनन्दन बिने कन्याक समान बर नाहि । जब सबहि भल्ल देखहु, तबे स्वहस्ते कृष्णक कन्या-दान करों ।

ज्ञातिसब—धन्य धन्य राजा, आः, तोहाक उत्तम मति थिक । अपेक्षा नाहि करब । परम पुरुष श्रीकृष्णक कन्या दान करह । पुरुष उद्धार होक ।

[शशिप्रभाक प्रवेश]

सूत्रधार—से राजमहिषी शशिप्रभा, तेहो स्वामीक बोलल ।

शशिप्रभा - परम ईश्वर श्रीकृष्णक कथा सुनिये । हमारो ओहि सन्मत । से यदुनन्दनक आनिये, सत्वरे कन्या दान करह ।

सूत्रधार—ऐसन परकारे, श्रीकृष्णक बिबाह दिते सबहि निश्चय कयल ।

श्लोकः

श्रुत्वा सखिमुखात्साक्षादमानन्दिता सती ।
रुक्मिणी क्रीडयामास स्मृत्वा हरिपदं हृदि ॥१०॥१८॥

[रुक्मिणी साक्षात् सखी के मुख से वार्ता सुनकर आनन्दित हुई और हृदय में भगवान् के चरणों को स्मरण कर विहार करने लगी ।]

सूत्रधार – समस्त वृत्तान्त सुनिकहु, सखि लीलावती रुक्मिनीत कहल ।

लीलावती हे सखि, तोहाक मनोरथ सफल भेल । श्रीकृष्णक बिवाह दिते निश्चय कयल । साक्षाते जानलु ।

सूत्रधार—ताहे सुनि रुक्मिनी आनन्दे जैसे नाचये लागल, आहे लोक, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग–श्रीगांधार—परिताल

सखि हे ! सुदिन भयो री । नाचे जैसन सखि संगे रंगे गोरी ।।ध्रु०।।
परम पुरुष पिउ भेलि मुरारू । जनम सफल सखि अबहि हामारू ।।
नाहि मोहे सम सौभागिनी सुन माइ । रुकनिक रंग कृष्ण-किंकर गाइ ।।९।।१९।।

रुक्मिणी—आः ईश्वर श्रीकृष्णक स्वामी पावलुँ । सखि हामाक सम सौभागिनी कोन थिक ?

सूत्रधार—ओहि बुलि रुक्मिनी परम उत्सुके जनि मने रहल थिक ।

श्लोकः

ततो रुक्मी सभां गत्वा गर्हयित्वाथ माधवम् ।
गर्व्वेण खर्व्ववाक्येन कन्यां दातुं न्यवारयत् ।। ११ ।। २० ।।

[तदनन्तर रुक्मिणी के भाई रुक्मी ने सभा में प्रवेश कर साहंकार अपशब्दों से कृष्ण की गर्हणा करते हुए कृष्ण के साथ होने वाले रुक्मिणी के विवाह को रोक दिया ।]

सूत्रधार—तदनन्तर, से सभामध्ये आसिकहु, रुक्मिनीक जेष्ठ भ्राता रुक्मी नाम मन्दमति, से पापी परम दर्प कय बोलल ।

रुक्मी—आः, हामार भगिनी रुक्मिनीक काहाक सकति कृष्णक बिबाह देवब । से यादव अनाचार; गो-वध, स्त्री-वध, मातुल-वध, कत पाप कय थिक । से हामार सम्बन्धक जोग्य हये नुहि । अये बृद्धराज ! तुहुँ किछो बूझये नाहि । जे महाराज सिंह शिशुपाल, से रुक्मिनीक जोग्य वर हय । निष्ठ ताहेक बिवाह देवब । हामु अंगीकार कये बोललु ।

सूत्रधार—तनिकर बोल बाधये नाहि पारि । पुनु भीष्मक जे बोलल, ता सुनह ।

भीष्मक—अये पुता ! बिबाहक निमिते, शिशुपालक सत्वरे आनह ।

सूत्रधार—रुक्मी ताहे सुनिये, कौतुके दूत पाँचिकहों, शिशुपाल प्रमुख्ये राजासबक आनावल । ताहे देखह-सुनह ।

श्लोकः

निशम्य रुक्मिण्युद्वाहं शिशुपालादयो नृपाः ।
गृहीत्वा सशरं चापमाययुः कुण्डिनं प्रति ॥१२॥२१॥

[रुक्मिणी का विवाह सुनकर शिशुपाल आदि राजे अनुपम बाण सहित कुण्डिनपुर में आये ।]

सूत्रधार—रुकुनिक बिवाह करये लागि, राजासब सहिते, जैसे शिशुपाल आवत, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग–कान्हड़ा—परिताल

आवे राजसिंह सिसुपाल । हाते तीर धनु वीर विसाल ।।ध्र०।।
कये आडम्बर बाजना बाजे । चले संगे साजि राज समाजे ।।
करत किरीट कुण्डल परकास । कहतु शंकर कृष्णक दास ।।१०।।२२।।

सूत्रधार—से राजासबक, भीष्मके सन्मान कयकहों, बासाघर दिये राखल । तदनन्तर; रुकमिनीक सखि मदनमंजरी ए सब वृत्तान्त जानि, अति सत्वरे रुकमिनीक गयाकहु, जानावल ।

मदनमंजरी – आहे प्रानसखि ! बिसम बिपाक मिलल, ता सुनह । तोहारि ज्येष्ठ भ्राता, रुक्मीकुमार; से पापी तोहाक श्रीकृष्णक बिबाह दिते निसेधल । तोहाक निमिते शिशुपाल नृपतिक बर अनावल । इहाक निष्ठे जानि हामु जानावलुं । सखि ! जे योग्य, ता करह । हा हा प्रानसखि ! श्रीकृष्णक स्वामि बंचित भेलि । हा हा ! बिधिक बिडम्बन कि भेलि ।

श्लोकः

निशम्भ विप्रियं बाला भीता भूमौ पपात सा ।
रुरोद हृदये ध्यायन कृष्णस्य चरणां चिरम् ।।१३।।२३।।

[बाला रुक्मिणी (कृष्ण के प्रति) दुर्वचन सुन कर पृथ्वी पर गिर पड़ी और हृदय में कृष्ण के चरणों का ध्यान करती हुई बहुत देर तक रोती रही ।]

सूत्रधार—तदनन्तर, परम विप्रिय बानी सुनिये, राजनन्दिनीक माथे जैसे कलस भाँगल । श्रीकृष्णक नैरासा सुनिये, दिस दिस आँधिआरि देखिये, मूर्छित हया ततकाले परल, जैसे कदलीक बाते उपाड़ल । श्रीकृष्णक बिरह तापे रुकमिनीक जैसे अवस्था मिलल, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग–गौरी—जोतिमान

हरि बिने रमनी देखत आँधिआरि ।
रहये ना देहा बिरह करु नारि ।। ध्रु० ।।
घन घन मुरुछि परय बर नारी ।
फोकारय स्वास नयन भुरे वारि ।।
कृष्णक चरन चितये चित लाइ ।
धन यदुनाथ जम्पगे पुनु माइ ।।
हरिक नैरासे ह्रास भेलि देहा ।
शंकर कह रमनीक नव नेहा ।।११।।२४।।

सूत्रधार—तदनन्तर, कृष्णक बिरह तापे तापित हुया, रुक्मिनी घन घन कृष्ण गुन जम्पइ । से दिश दश आन्धारि देखिये मुच्छित हुया परल । ताहे देखिये, सखि मदनमंजरी, सखी लीलावती हाहाकार कये अति सत्वरे बाहु मेलि धरल; सिरे जल सिंचल; आँचोरे बिंचिकहो आस्वासे बोलल ।

मदनमंजरी–लीलावती—हे प्रानसखि ! से पापी सिसुपाल तोहाक नाहि पावं । कि निमित्त आकुल भेलि ? से भकत-बान्धव माधव तोहाक अवश्य रक्षा करव । इहा जानि, प्रानसखि ! स्वस्थ हव ।

श्लोकः

लपन्ती कृष्ण कृष्णेति हरेर्विरहकातरा ।
रुरोद दुहिता राज्ञः सखीभिः सहिता सती।।१४।२५।।

[कृष्ण ! कृष्ण ! रटती हुई उनके विरह से व्याकुल रुक्मिणी सखियों के साथ रोने लगी ।]

सूत्रधार—तदनन्तर राजनन्दिनी चेतन लभिये, हा कृष्ण ! हा कृष्ण बुलि, दीर्घ निश्वास फोकारि, रुक्मीक गारी देइ ।

रुक्मिणी—हे पापी सोदर, तुहु सात शत्रु तो अधिक भेलि । प्रान कृष्ण सहित कैसे हामाक वंचित कयलि ? तोहो जनमि कि निमित्त नाहि मरल ?

सूत्रधार—ओहि बुलि रुकमिनी सखिदुहु सहित जैसे श्रीकृष्णक विलाप कयल, ता सुनह ।

गीत

राग–गांधार—ज्योतिमान

हरि हरि हामार करम किना भेलि ।
प्रान पिउ आस कैसन दूर गेलि ।।ध्रु०।।

पापी सोदर तुहु नाहि भेलि नास।
दुर्लभ बल्लभ कृष्ण कयलि नैरास॥
जग जन तारन चरन जाहारु।
बंचल कैसन कृष्ण बल्लभ हामारु॥
कृष्ण-चरन चिर जोहि कयो काम।
दूर गेल सोहि मोहि बिहि भेलि बाम॥
नाहि नाहि धरवहों हरि बिने प्रान।
बिकलि रुकमिनी कृष्ण-किंकर भान॥१२॥२६॥

सूत्रधार—ऐसन बिलाप कय, राजकुमारी मूर्च्छित हुया परल। सखिसबे बोध दिते स्वस्थ हुया, आँचोरे आँखि मुख मुचिकहो, निश्वास फोकारि बोलये लागल।

रुक्मिणी—अये पापी सिसुपाल, तुहु हामाक बिबाह करिते आवल? हा हा! जैसे सिंहक भार्याक शृगाल अभिलास कय थिक! हा हा! कृष्ण विने हामु जबे प्रान राखब, तबें हामारि जीवन धिक धिक! हे प्रानस्वामि! श्रीकृष्ण!! तोहो इ सब वृत्तान्त नाहि जानह। तोहाक समीप काहेक पठाजु?

सूत्रधार—ओहि बुलि, बाला हेठ माथ कय चिंतिते एक मित्र ब्राह्मणक मने पावल। सोत्साहे सखि लीलावतीक बोलल।

रुक्मिणी—हे सखि लीलावती, तुहु सत्वरे जाव। हामार महामित्र वेदनिधि कु आन गिया।

सूत्रधार—सुनि, लीलावती ततकाले चलिल! जाइ, कुमारीक कथा ब्राह्मनक जनावल।

श्लोकः

निशम्य त्वरितं प्रागाद्वाक्यं देव्या द्विजोत्तमः।
नाम्ना वेदनिधिः ख्यातो रुक्मिणीया प्रियकृत्तदा॥१५॥२७॥

[रुक्मिणी का शुभचिन्तक वेदनिधि नामक ब्राह्मण देवी रुक्मिणी की बात सुनकर शीघ्र ही चला आया।]

सूत्रधार—राजनन्दनिक बानी सुनिकहों जैसे वेदनिधि आवल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—कान्हड़ा—परिताल

आवत वेदनिधि द्विजराज। साधिवे राजकुमारीक काज॥ ध्रु०॥
रंजे तिलक कपालक छानि। धौत बास कुस सोभित पानि॥
चाँदक पाँति दसन परकास। शंकर कह ओहि केसव-दास॥१३॥२८॥

सूत्रधार—तदनन्तर, से राजकुमारी, हेठ माथे क्रन्दन कये थिक; नयनक नीर धारे वहि जाइ ! ताहे देखिये ब्राह्मन बोलल ।

वेदनिधि—हे माइ राजनन्दिनी ! कि अपमान मिलल ? कोन निमित्त क्रन्दन कये थिक ? हा हा हामाक सपत, जब सत्वर नाहि कह ! हामु थाकिते तोहार किमन दुख थिक ? हे माता, ताप छाड़ह ।

श्लोकः

निशम्य तद्वचो बाला विनिःश्वस्य पुनः पुनः ।
विप्रस्य चरणं मूर्ध्ना स्पृष्ट्वा शोकाकुलाब्रवीत् ॥१६॥२६॥

[उसकी बातों को सुन कर बार-बार दीर्घ निःश्वास लेती हुई बाला रुक्मिणी ब्राह्मण के चरणों को अपने मस्तक से स्पर्श कर शोकाकुल हो बोली ।]

सूत्रधार—तदनन्तर, रुकमिनी आँचोरे आँखि मुख मुचि, बिप्रक जानु परि, प्रणाम कयकहों बोलये लागल ।

रुक्मिणी—हे गुरु ! हामु मरि जाञु । हामात कि बात पूछह ? जे श्रीकृष्ण स्वामीत चिरकाल आसा कयेछिल, हा हा, ताहेक हामार पापी सोदरे दूर कयल ! हामाक दिते सिसुपालु वर अनावल । से पापी देखिते जीउ जाइ ! हे गुरु बाप ! कि कहव ? तुहुँ जब द्वारकापुरे गैया कृष्णक आनिते पारह, तवे हामाक प्रान दान देवब ।

श्लोकः

निशम्य तद्वचो विप्रो विहस्योवाच रुक्मिणीम् ।
कुमारि कुरु मा शोकं का चिन्ता ते स्थिते मयि ॥१७॥३०॥

[रुक्मिणी की बातें सुनकर ब्राह्मण (वेदनिधि) बोला—हे राजकुमारी ! आप शोक मत करें । मेरी उपस्थिति में आप को क्या चिन्ता है ।]

सूत्रधार—ताहे सुनि, वेदनिधि बिहसि वोलल ।

वेदनिधि—आः, हे माइ रुकमिनी ! कृष्णक आनिते कोन चिन्ता थिक ? तपक महिमाये आकासक चन्द्र आनिते पारु । हामु द्वारका एइ चललुँ; जे बात थिक, ता कह ।

सूत्रधार—ताहे सुनिये, कुमारी किछो स्वस्थ हुया वोलल ।

रुक्मिणी—हे गुरु ! श्रीकृष्ण स्वामीक चरने प्रथम हामार प्रनाम कहषि । तदनन्तर हामार दुख निबेदब । तोहारि किंकरि रुकमिनी, ऐसन बोलल—हे स्वामी कृष्ण ! भिक्षुक मुखे तोहाक रूप गुन सुनिये हामु काय-वाक्य-मने तोहाक पति भावे बरैछि ! तथि सिसुपाल पापिष्ठे हामाक निते चाहे । जानि प्राननाथ सत्वरे आसि, हामाक रक्षा करह । तोहोक छाड़ि हामार गति नाहि ।

गीत

राग–अहीर—जोतिमान

केसव हे ! हामाकेरि राखहु प्रान । निज किंकरीक जीवन देहु दान ।।ध्रु०।।
तुया पद-पंकज जीवन जग बास । कयलुँ कमल-नयन चिर श्रास ।।
बिपद पयोनिधि परलुँ मुरारु । दीन बान्धव देव उद्धार हामारु ।।
पापी सिसुपाल काल भेलो मेरि । तोहारि चरने सरन लेलों हरि ।।
गति गोविन्द बिने नाहि श्रान । रुक्मिनी करुना करु शंकर भान ।।१४।।३१।।

रूक्मिणी—हे स्वामी कृष्ण ! सिसुपाल पापीत हन्ते निज दासिक रक्षा करि नेवासिया [बिप्रक बोल] हे गुरु ! हामार एक गाछि खेड़ कृष्णक आगु दिया, कातर कये सत्वरे आनह । जब बिलम्ब हय, कृष्णक प्रान सम्पिये, हामु मरव । आः, विस्तर कि कहव । एक पातिया लेखि देञु, ताहे लोया जाव । जब विस्तर बिलम्ब हये, तबे हामु मरव ।

सूत्रधार—ओहि बुलि, रुक्मिनी स्वहस्ते पत्र लेखि, ब्राह्मनक हाते देलह । वेदनिधि हात पाति लेलह । राजकुमारीक प्रवोध बुलिये, विप्र चलल ।

वेदनिधि—हे राजनन्दनी ! किछु चिन्ता नाहि करवि । एक तिले कृष्णक आनबु । तुहु सुखे रह ।

सूत्रधार—ओहि बुलि, विप्र द्वारका चलल । ताहे देखह - सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग–श्री—परिताल

कुमारीक श्रास्वास बुलिये बचन ।
द्विज द्वारिकाक लागि करल गमन ।।ध्रु०।।
छाड़ल नगर गिरि श्ररण्य श्रासेस ।
भेल द्वारावती पुरी बिप्र परवेश ।।
मनोहर नगर सागर मह थिक ।
करे परकास सुरपुरीक श्रधिक ।।
जगत बिभूति तथि भेलि एकु थान ।
हरि-पुरी देखल कनक निरमान ।।
द्वारि द्वारपालक घोल पाइ लाग ।
कुरिडनक द्विज हामु कह कृष्ण श्रागु ।।
कृष्णत हामार थिक गोप्य प्रयोजन ।
राम राम बोलहु हरिसे सर्व कास ।।१५।।३२।।

सूत्रधार—तदनन्तर,, द्वारपालसव गया कृष्णक प्रनाम कय बोलल ।

द्वारपाल—हे स्वामी ! कुण्डिन हन्ते एक विसिष्ट विप्र हामार द्वारे रहये थिक। कि आदेस हय नाथ ?

सूधत्रार—ओह सुनि, श्रीकृष्णक ततकाले उठिकहु, गौरवे गैया ब्राह्मनक प्रनामि आलिंगिधरिये, अभ्यन्तर प्रवेस करावल । स्वहस्ते पाव पखालिये, पंचामृत भुंजावल। तदनन्तर विप्र स्वर्ण खाटत सुतल । श्रीकृष्ण निज हस्ते पान मर्दिये, श्रम दूर कयकहु बात पूछत ।

श्लोकः

कुशलं तव विप्रेन्द्र किमर्थमिह चागतः ।
पावित्रीकृतं चास्माकं त्वत्पादरजसा गृहम् ॥१८॥३३॥

[हे विप्र, आप सकुशल तो हैं ? यहाँ किसलिए आये हैं ? आपके चरण-रज से हमारा अपवित्र गृह पवित्र हो गया ।]

कृष्ण—हे गुरू ! तोहो कुसले आवल ? तोहारि पदरेनुये गृह सब पवित्र भेल। तोहारि भीष्मक राजा, कुसले थिक ? स्वधर्मे कि प्रजा पालय ? हामु कोन प्रयोजन साधों ? ता आज्ञा करह ।

श्लोकः

एवं सम्भाषितो विप्रो निशम्येश्वरभाषितम् ।
प्रहसंतं स प्रत्याह माधवं साधु बान्धवम् ॥१९॥३४॥

[भगवान् के द्वारा इस प्रकार कहे गये वचनों को सुनकर ब्राह्मण साधु-बान्धव से हँसते हुए कहने लगा ।]

सूत्रधार - ताहे सुनिये, वेदनिधि विहसि बोलल ।

वेदनिधि - हे स्वामी कृष्ण ! तुहु जगतक परम ईश्वर । तोहाक ए आँखिए देखलूं । अतः पर हामार कमन कुशल थिक । तुहु देवकीपुत्र नुहि, तुहुँ ब्रह्मा-महेस सेवित श्रीनारायण, से तुहु भूमिक भार हरन निमित्त अवतार भेलि थिक । आः तोहोक महिमा कि कहव ! हामु जदर्थे आवलु, ता सुनह ! हामार विदर्भ राजनन्दिनी रुक्मिनी भिक्षुक मुखे तोहारि गुन रूप सुनिये, मने स्वामी भावे बरल । से कन्याक बिबाह करिते पापी सिसुपाल आवत । ताहे देखिये राजकुमारी मरैछे । आः हामु कि कहब ? एक पातिया लेखि पठावल थिक, ताहे देखह ।

सूत्रधार—ओहि बुलि, रुकमिनीक पत्र कृष्णक हाते देलह । श्रीकृष्ण सादरे धरिये, मुँद भांगत । विप्रक बोल !

श्रीकृष्ण—हे गुरु, तुहु पाठ करह । हामु सुनिये रहो ।

सूत्रधार—विप्र पत्र लैया पढ़इते लागल । श्रीकृष्ण एक चित्त सुनिये थिक। आहे लोक, ताहे देखह सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

वेदनिधि—[पत्र-पाठ] "स्वस्ति श्री परमेश्वर, सकल सुरासुर वन्दित पादपद्म, प्रपन्न जनतारण नारायण श्री श्रीकृष्ण चरण-सरोरुहेषु, रुक्मिण्याः सहस्र प्रणाम लिखनम् । कार्यंच शिवमिह निवेदनंच । हे स्वामि ! भिक्षुक मुख तुया गुन-रूप सुनिये, कायवाक्य-मने तोहाक पतिभावे वरैछि । तथि पापी सिसुपाल हामाक बिवाह करिते आवलथिक, जैसे सिंहक भार्या निते श्रृंगाल चुम्पि रहय थिक । ताहे देखि भये दण्डे जुग जाइ । जानि हामि निज दासीक सत्वरे नेवासिया स्वामी ।

'जब बोल तुहु अन्तेसपुरे रह । कुन परकारे पाञु, ततोचित उपाय कहुँ । हे नाथ ! ता सुनह । बिवाहक पूर्व दिवसे भवानीक मठे चलब । से समये हामाक हरि हिया जाव ।

"जेवे तुहु हेला कये नाहि नेवब, तेवे तोहात वध दिये, हामु प्रान छाड़ब । पापी सिसुपालक छायाक हामु कवहु पावें नाहि परसों । ओहि जानि, दीन दासीक, हे नाथ ! उद्धार उद्धार । तव चरन-सरोरुहे किंबहु लेख्यमिति पत्रमिदम् ।"

श्लोकः

निरीक्ष्य करुणं पत्रं पत्न्याः परमपुरुषः ।
प्रेमाश्रुलोचनस्तस्थौ म्लाननेत्रमुखाम्बुजः ॥२०॥३५॥

[रुक्मिणी के करुण पत्र को देख कर परम पुरुष भगवान् प्रेमाश्रु बहाते हुए म्लान नेत्र और म्लान मुख-कमल वाले हो गये ।]

सूत्रधार—तदनन्तर, रुकमिनीक सकरुन पत्र देखिये, कृष्णक हृदये ताप उपजल । कमल-नयनक नीर झुरये लागल । जैसन बिलाप कयल, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—गौरी—रूपक ताल

हरि हरि किना भेलि राजकुमारी ।
कमल नयन पुरि बारि भुरावत, घन घन फोकारे मुरारी ॥ध्रु०॥
करत कतनु तेरि नारि निकारुन, मोहि बिरहे दहे आगी ।
तोहों जब जीवन बाला छोड़ह, हउँ तब तुया बध भागी ॥
तेरा दरसन कैसन होई, सुमरिते तनु मन तावे ।
मिलल अधिकहुँ हरि को आकुल, कृष्ण-किंकर रस गावे ॥१६॥३६॥

कृष्ण—हे वेदनिधि, तुहु कहिवार पात्र । जो दिवसे से प्रियाक रूप-गुन सुनलु, सेहन्ते रुकमिनीक मात्र ध्यान कय हामार मन थिक । से प्रान-प्रियाक अवस्था कथा सुनिये, कैसे जीवन धरू ? अये दारुक, सत्वरे रथ आनह । कुण्डनिक चलिकहु एइ क्षणे जाञु । से प्रियाक दुख सुनिये, प्रान रहये नाहि ।

श्लोकः

अथ रथमधिरुह्य केशवोऽसौ । सपदि सारथिनोद्धवेन युक्तः ॥
करकृतधनुरीश्वरः प्रियायाः । प्रेमाकुलः कुण्डिनमोजसा ययौ ॥२१॥३७॥

[तदनन्तर शीघ्र ही सारथी और उद्धव के साथ रथ पर चढ़कर भगवान् कृष्ण प्रिया के प्रेम में आकुल हो हाथ में धनुष लेकर वेगपूर्वक कुण्डिनपुर को गये ।]

सूत्रधार—ताहे सुनि, दारुक ततकाले रथ जोगावल । पेखि, कृष्ण ब्राह्मनक हाते धरिये, रथ ऊपरे तुलि, हाते सर-चाप धरिकहु, उद्धव सहिते तथि चड़ल । दारुक महावेगे रथ खेदावल । श्रीकृष्ण जैसे चलल, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग–माउर धनश्री—परिताल

कुण्डिन कु आवत मोहन मुरारु ।
कोटि इन्दु निन्दि बदन बिराजे, कर सारंग सर धारू ॥धु०॥
स्याम मुरति पीत अम्बरु अम्बुद तड़ित जड़ित जस सोहे ।
रतन मुकुट मनि कुण्डल डोलत हासि जगत जन मोहे ॥
भुज जुग केयुर कंकन आंगुलि आंगुरि रतन बिकास ।
मंजीर रंजित चरन सरोरुह शंकर कह हरिदास ॥१७॥३८॥

सूत्रधार—ओहि परकारे, श्रीकृष्णक रथ वाउ वेगे चले । तथि आलोल्य ब्राह्मण, वेदनिधि रथ बेगे श्रुतिभंग हुया परल । हात पात्र थिर भेल, पेट उफन्दल । नासात निश्वास नाहि निःसरे, जैसे मृतक तद्वत अचेतन भेल । ताहे पेखिये श्रीकृष्ण, हा हा बुलि सिरे जल सिंचिये, फुँकि फुँकि धातु आनल ।

कृष्ण—हे वेदनिधि, स्वस्थ हव, स्वस्थ हव ।

सूत्रधार—कृष्णक आस्वास सुनिये, किछु चेतन पाइ, बिप्र बोलल ।

वेदनिधि—हे बापु, तुहु बा के ? हामु बा कोन ? कि निमित्त एथा आवल थिक ?

कृष्ण—(बिहसि बोल) हामु द्वारकार कृष्ण । तुहु वेदनिधि, रुकमिनी पठावल । तन्निमित तुहु हामु कुण्डिने चलयिछि ।

सूत्रधार—ताहे सुनिये, विप्र बाहु मेलि कृष्णक धरल ।

वेदनिधि—हा हा बाप ! वर्त्तलु, हामु क्षणेके मरि जाओ। तोहाक निमिते पुनु उपजलों।

सूत्रधार—ब्राह्मण कम्पय देखि, श्रीकृष्ण आस्वास बुलि, स्वस्थ कयल।

श्लोकः

ततो विप्रं प्रभुः प्राह गच्छ त्वं सत्वरं गुरो।
मदागमनमाख्याहि प्रियायाः प्रीतिवर्द्धनम् ॥२२॥३९॥

[इसके उपरान्त भगवान् ने ब्राह्मण से कहा कि ब्राह्मणदेव आप शीघ्र जाएँ और प्रिया की प्रीति को वर्द्धन करने वाले मेरे आगमन की सूचना दें।]

सूत्रधार—तदनन्तर, श्रीकृष्ण कुण्डिन समीप पाइ, विप्रक बोलल।

कृष्ण—हे गुरु, तोहो आगु हुवा चलह। से प्रानप्रिया नैरासा देखिये प्रान छाड़ब। हामार आगमन रुकमिनी कह गिया।

सूत्रधार—विप्र सुनिये, कृष्णक आसीर्वाद कयकहु, आगु हुवा चलल। इ कथा रहोक। रुकमिनीक वृत्तान्त सुनह।

श्लोकः

विलम्बं वीक्ष्य विप्रस्य रुक्मिणी राजनन्दिनी।
चिन्तां दुरन्तामासाद्य रुरोद सखि सन्निधौ ॥२३॥४०॥

[ब्राह्मण के लौटने में बिलम्ब होते देखकर राजनन्दिनो रुक्मिणी चिन्तित हो उठी और सखी के सान्निध्य में रोने लगी।]

सूत्रधार—तदनन्तर, बिप्रक विलम्ब देखि रुकमिनीक मने चिन्ता मिलल।

रुक्मिणी—[मदनमंजरीक बोल] हे सखि, हामार पर अनर्थ भेल। आजु अधिवास, कालि बिबाहक दिवस। से वेदनिधि कृष्णक आनिये नाहि पारि, लज्जाये नावल। हा हा अब स्वामीक आसा छेद भेल।

सूत्रधार—ओहि बोलि, कुमारी जैसे क्रन्दन कयल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—गौरी–ताल विषम

मायि माधव अब कयल मेरि नेरास।
पन्थ नेहारि राजकुमारी, फोकारे घने निस्वास ॥ध्रु०॥
परम पुरुष केसब बिनो बिफल जनम मोइ।
मिलल मरन कृष्ण चरन दरसन नाहि होइ ॥
हामु अभागि लागि जानलु जीवन नाथ नावे।
मुरुछि पड़ल चेतन हरल रमनी शंकरे गावे ॥१८॥४१॥

सूत्रधार—ऐसन क्रन्दन कय, बाला मुरुछित हया परल। सखि सब देखिये हा हा बुलि, बाहु मेलि, धरिकहु प्रबोधि बोलल।

मदनमंजरी - हे सखि! स्वस्थ हव, स्वस्थ हव। से श्रीकृष्ण तोहाक निमित्ते अवश्य आवब। जाकेरि नाम मात्रे महापापीसबां संसार निस्तरे, से भगतक बान्धव माधव तोहाक नाहि रक्षा करव? प्रानसखि, ओहि संका छाड़ह। हामाक सपत, उठह उठह।

श्लोकः

तत उत्थाय सा बाला विनिःश्वस्य पुनः पुनः।
रुरोद करुणां बाला स्मृत्वा कृष्णपदाम्बुजम् ॥२४॥४२॥

[तदनन्तर बाला रुक्मिणी उठकर और बारम्बार दीर्घ निःश्वास लेकर भगवान् श्रीकृष्ण के चरणों का ध्यान कर विलाप करने लगी।]

सूत्रधार —कुमारी चेतन लभिकहु, निस्वास फोकारि, हाते बदन चड़ाइ बैठल।

रुक्मिणी—[सखिसबक बोल] हे मदनमंजरी, हे सखि लीलावती, हामार बिहि बंक भेल। वेदनिधि गैयाकहु बाहुरि नावल। प्रानकृष्णक बात किछो नाहि पावलु। हा हा ओहि जनमे से स्वामीक चरन-दरसन दुर्लभ भेल।

सूत्रधार—ओहि बुलि, पुनु जैसे क्रन्दन कय बाला, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—गौरी—जोतिमान

माधव मेरि बिछुरि अब नावल, हरि बिरहानल चेतन गरि।
नावल अबहु बाहुरि द्विजनन्दन, कह कैसन सखि जीवन धरि ॥ध्रु०॥
ओहि सिसुपाल काल भेलि मेरि, हेरि हरत चेतन तनु खिन।
हामु अभागि बिहि बंकिम हामारि, प्रानपिउ कैसन कयलि बिहिन॥
करबि कमन उपाय पुनु पाइ, अबधि बिबाह रयनि मह थिक।
हेरब आवरि हरि को नाहि चरना, कह शंकर झुरे रमनी अधिक ॥१६॥४३॥

सूत्रधार—ऐसन बिलाप कये बाला, हरिक बिरह मुरुछित हया परल। देखि, सखिसब हा हा बोलि सिरे जल सिंचिये, आँचोरे बिंचय; काहो आँकोआलि तुलि बैठाइ, मधुर बानि बोलल।

सखीसब—हे प्रानसखि! आजु दिवस नाहि जाइ। ऐसन ताप कैसन करसि। से कृपामय माधव तोहाक मनोरथ निश्चय पुरव। टुरन्त चिन्ता छाड़ह।

सूत्रधार--ताहे सुनिये, कुमारी हेठमाथ कय रहल थिक। सोहि समये रुकमिनीक बाम उरु, कर, आँखि फान्दिये गेल। ताहे देखिये हरिषे बोलल।

रुक्मिणी—आहे सखिसव, हामार बाम अंग फान्दे। कोन सुभ बात कहे, इहा नाहि जानु।

सूत्रधार--ओहि बुलि, कुमारी रहल थिक।

श्लोकः

साधितार्थो द्विजः प्रागात् प्रीत्युत्फुल्ल विलोचनः।
न्यपतच्चरणं तस्य धरण्यां हर्षवेगतः ॥२५॥४४॥

[जब अर्थसाधक ब्राह्मण (वेदनिधि) प्रेम से उत्फुल्लनेत्र होकर आया तो अतिशय हर्षयुक्त हो रुक्मिणी उसके चरण पर लुट गयी।]

सूत्रधार—तदनन्तर, देवी देखल, अति आनन्दे वेदनिधि हरिष बेगे आवत। माटित पाव परये नाहि। विप्रक मुख पेखि जानल, आः हामाक प्रानपिउ आवल आवल। पाँच सात आगि बाढ़ि गिया, विप्रक प्रनाम कयल।

वेदनिधि--हे राजनन्दिनी! तुहु चिरंजीव, चिरंजीव। तोहाक प्रयोजन सब साधलुँ। से जदुनन्दन तोहाक निमिते अन्नपान सब छाड़ल, निसि निद्रा करत नाहि। हे माता, कृष्णक दुख कि कहब! केवल तोहाक मात्र ध्यान कय रह। अब ओहि नगर प्रवेस कयल। तोहो सत्वरे दृढ़ा हुया रह। सब मनोरथ आजु श्रीकृष्ण पुरब।

सूत्रधार--ओहि सुनि, देवीक आनन्दे लोतक झुरे। बिप्रक प्रनाम कये बोलल।

रुक्मिणी—हे पिता! बापे उपजाएल मात्र, तुहु प्रान दान देलह। तोहाक गुन सुझये नाहि पारु। कि प्रसाद देबु!

वेदनिधि—हे माता, हामार आसीर्वाद श्रीकृष्णसहित तोहाक सुबसति होक, तब हामार सकल प्रसाद भेल।

सूत्रधार—ओहि बुलि, वेदनिधि निज बाड़ी चलल। तदनन्तर, रुकमिनीक जेष्ठ भ्राता रुक्मी कुमार, से आसिकहुँ बोलल।

रुक्मी—आहे भगिनी, तुहु अति सत्वरे भूसित हया, सखिसब सहिते भवानीक मठे चलह। आजु अधिवास, कालि बिबाहक दिवस। देवीक पूजा करगिया। अति सत्वर चलह, ऐ चलह।

श्लोकः

निशम्य वचनं भ्रातुर्भूषयित्वाथ भूषणैः।
जगाम सखिभिः साकमात्मानमम्बिकालयम् ॥२६॥४५॥

[भाई के वचन को सुन अपने को अलंकारों से सजा कर बाला रुक्मिणी सखियों के साथ अम्बिका के मन्दिर में गयी ।]

सूत्रधार भ्राताक वाक्य सुनिकहु, कुमारी सखिसब सहित, भूसित हया जैसन चललि; ताहे देखह-सुनह ! निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—माउर–परिताल

रंगिनी सखि संगिनी बाला । चलिलि जैसे चाँद केरि कला ।।ध्रु०।।
पहिरए पटाम्बर लहु लहु जाइ । मत्त गजगामिनी कामिनी माइ ।।
ओतिम मोतिम माला लुले । हेरिते हासि भुवन मन भुले ।।
हरिकहु चरन चिन्ति चलि जाइ । कृष्ण किंकर ओहि शंकर गाइ ।।२०।।४६।।

सूत्रधार—तदनन्तर, से राजकुमारी सखि सब सहित भवानीक मठ पाइकहु, पाव पखालिये, नानाविध नैवेद्य दिये, देवीक पूजा कयल । तुति नति करिये, बर साधल । देवीक आगु पड़ि बोलल ।

रुक्मिणी —हे माता भवानी ! स्वामी श्रीकृष्ण हामाक अविधिनि नेहन्तोक । तोहाक चरने अतये साधो ।

सूत्रधार—ओहि बर प्रार्थिये, कुमारी तथि रहल थिक ।

श्लोकः

कृष्णः कुण्डिनमागत्य विप्रं प्रस्थाप्य सादरम् ।
दारुकोद्धव संयुक्तः प्रविवेश विभुः सभाम् ।।२७।।४७।।

[ब्राह्मण को सादर भेजकर दारूक और उद्धव सहित कृष्ण कुण्डिन नगर में आकर सभा में प्रविष्ट हुए ।]

सूत्रधार—तदनन्तर, श्रीकृष्ण बिप्रक आगु पठाइकहु, दारुक उद्धव सहिते, जैसे सभामध्ये प्रवेस कयल, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—गौरी–एकताल

मेरि मधाइ आवत आनन्द मने । पेखि भुलल रूप मन पौर जने ।।ध्रु०।।
पंकज बयन नयने करु पान । हेरि हृदये मने मिलल धियान ।।
स्याम रुचिर तनु पीत पिछोरा । नव नीरद जस बिजुरी उजोरा ।।
चरन रंजित मनि नुपुर बिकास । कह शंकर हरि दास कु दास ।।२१।।४८।।

सूत्रधार—श्रीकृष्ण ऐसन प्रबेस कय, राजमण्डली मध्ये वैठल। जैसन नक्षत्र माझे पुन्निमाक चाँद परकास कये थिक। श्रीकृष्णक रूप सम्पत्ति देखिये, सब लोक भुलल; मुख पंकजक जैसे नयने पान करत। विपक्ष नृपसब, त्रैलोक्य चमत्कार, बीर प्रताप देखिये परम भय भेलि। अन्यो अन्ये कर्ने कहे।

नृपसब—ओहि कृष्णक युद्ध करिते सिसुपाल आसा करिये थिक! आः, उनिकर संगे सबहि मरब। अये भाइसब, उठह उठह। जावत युद्ध नाहि हय, आगु देशे जाबु।

सूत्रधार—तदनन्तर, जरासन्धे, देखल, राजासब, भये कम्पित भेला हात निसाने, निषेधि बोलल।

जरासन्ध—आ हामु विद्यमान थाकिते काहे के भय थिक? हे राजसब, ओहि क्षत्रिभर बेवहांर नोहे। निर्भय रह।

सूत्रधार—तनिकर गरिहा सुनिये, नृपसब अन्तर्गत भये, हेठ माथे कय रहल। ए कथा रहोक। रुकमिनीक वृत्तान्त सुनह।

श्लोकः

सखीभिः सह वैदर्भी कृष्णादर्शनलालसा।
ललिता लीलया गत्या जगाम चम्बिकालयात् ॥२८॥४९॥

[कृष्ण-दर्शन की लालसा से युक्त सुन्दरी रुक्मिणी सखियों के साथ मन्द गति से अम्बिका मन्दिर से निकली।]

सूत्रधार—तदनन्तर, राजनन्दिनी रुकमिनी सखिसब सहिते, कर्पूर ताम्बुल भोजन कय, एक सखिक हाते धरियेकहु, कृष्ण-दरसन निमित्ते, परम आकुल चिते लीला गति करिये, राजसभा समीपे चलल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग–माउर धनश्री—दोमानि, यतिताल

चाँदमुखी पेखिते मधाइ। चलिल लीलागति भुवन भुलाइ ॥ ध्रु० ॥
कंकन किंकिनि ध्वनि झनके मंजीर मनि, दोले हृदये हेम माला।
चंचल लोचन मन हेरय रमनी धन, हरि बयन बरमाला ॥
सखि सब संगे खेले जैसन नक्षत्र मेले, सुचानन्द चाँदक कला सोहे।
रूप रुकमिनी केरि राज समाज हेरि, परल सबहिं मन मोहे ॥२२॥५०॥

सूत्रधार—तदनन्तर, रुकमिनीक नवीन जौबन रूप देखिये, जत राजासब, काम बाने मूर्च्छित हुया, आसन हन्ते ढलि ढलि परल। विह्वल भावे काहु करजोड़ि बोलल।

राजासब—हे प्राणेश्वरि! कामसागरे निस्तार करह।

सूत्रधार—काहु आँगुलि मुखे लया बोलल ।

राजासब—हे प्रानप्रिये, मदने मन-मर्दय। हामाक हास्य निरीक्षण करह ।

सूत्रधार—काहु दन्ते खेड़ कामुड़िये बोलल ।

भोजराजा—हे राजकुमारी, तोहाक निमित्तो काम बाने फुटि प्रान छुटि जाइ। चरनक दास भेलु । हाते परसि हामाक जिवाव । सब महादेइक दासी करि देत्रु ।

सूत्रधार—कामे मत्त हुया, इत्यादि नाना बीभत्स भावना कयल राजासब । पेखि रुकमिनीक सखीसब काहुक ठेंगना देइ काहुक गोड़े मारि भर्त्सय ! तथापि राजासब कामातुर हुया कुमारिक कये थिक । आहे लोक हरि भकति बिहीन, कामातुरक दुख देखह । इहा जानि हरिक चरन चिंतिये । हरि बोल हरि ।

श्लोक:

कृष्णोऽपि क्षुभितं चित्तं स्थिरं कृत्वा जहार ताम् ।
ईक्षतां द्विषतां मध्यात् मृगाणां केशरी यथा ॥२६॥५१॥

[अपने क्षुब्ध चित्त को स्थिर कर आक्रामक शत्रुओं के मध्य से कृष्ण रुक्मिणी को इस प्रकार निकाल (हर) ले गये जिस प्रकार शेर मृगों के मध्य से (अपने शिकार को) ले जाता है ।]

सूत्रधार – तदनन्तर, श्रीकृष्ण रुकमिनीक रूप लावन्य देखिये मोहित हुया, कथं कथमपि चित्त सान्त कयल । रुकमिनी सखिसब सहिते लीलाये चलिते कृष्णक देखल । भाटक मुखे जैसन गुन-रूप सुनल ताहातो अधिक साक्षाते देखल । ओहि कृष्ण स्वामी बोलि मने प्रनाम कयल । सलज्ज हास्य करिये अधोमुखी रहल । श्रीकृष्ण तत्काले उठिकहु राजसभा मध्ये हन्ते रुकमिनिक हरि लया, आपुन समीप कयल । जैसन मृग यूथ मध्ये हन्ते सिंहे निज भाग लैया जाइ; तद्रूत कुमारीक हाते धरिये, आपुन रथे तुलिये, रुकमिनी सहित श्रीकृष्ण जैसे लीलाये चलल, आहे लोक, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग - माउर धनश्री—एकताल

लहु लहु गति धाइ, प्रिया संगे रंगे जाइ ।
हरि हसि हसि चाइ, जैसे मत्त सिंह राइ ॥ध्रु०॥
रूपे भुवन जिनि सखी समे रूकमिनी ।
चले बामा मध्य खिनी झनके मंजीर मनी ॥
पिउ मुख बेरि बेरि लज्जित नयने हेरि ।
कह शंकर केरि गति गोविन्द मेरि ॥२३॥५२॥

सूत्रधार—तदनन्तर, श्रीकृष्ण रूकमिनिक हाते धरिये, हसि हसि प्रियाक मुख निरेखिये, लीलागति चलि जाइ. जैसन मत्त सिंह चलइछे। से राजनन्दिनी, श्रीकृष्णक स्वामी लभिये, लज्जित नयने घन-घन स्वामी मुख निरेखिये, परम आनन्दे चलि जाइ। तदनन्तर, सिसुपाल प्रभृति जत बिपक्षी राजासव, चेतन लभिकहु देखल, श्रीकृष्ण रूकमिनी कन्याक हरिलिया जाइ।

शिशुपाल—आः हामार जीवन धिक धिक। हामु विद्यमान थाकिते हामार विवाहक कन्या कथाक यादवे लिया जाइ।

सूत्रधार—ओहि बुलि, परम दर्प करिये, हाते सर-धनु धरिये, श्रीकृष्णक पाछु-पाछु जैसे खेदि जाइ, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—कान्हड़ा—परिताल

कोपे नृपसब कामाड़े बाहु। चान्दक खेदि जाइ जस राहु ॥ध्रु०॥
हाते सर धनु धरि सब धावे। कम्पित मेदिनी ए पद घावे॥
बाहु दर्पे करये टंकार। बोलये डाकि डाकि अहंकार॥
रे रे यादव पारये गारि। छोड़ छोड़ अब रूकमिनी नारि॥
आर कति जासि पाबलु लाग। कोपे गरजय जैसन बाघ॥
रह रह बुलि पावे घने राव। शंकर कह गीत गोविन्द पाव ॥२४॥५३॥

श्लोकः

राज्ञं साटोपटङ्कार कल्लोलं रुक्मिणी सती।
निशम्य वेपिता भीता मनसैवमचिन्तयत् ॥३०॥५४॥

[राजाओं द्वारा किये गये सगर्व धनुष्टंकार को सुनकर रुक्मिणी भयभीत और कम्पित हो मन में चिन्ता करने लगी]

सूत्रधार - राजासबक आटोप टंकार सुनिये, महाभये रुक्मिनी देवीक हृदये कम्प मिलल, मुख मलीन भेल। स्वामी श्रीकृष्ण निमित्ते चिन्तित हुया, नयने नीर निगरे, निश्वास फोकारि, मने बोलल।

रुक्मिणी—हा हा दैव! अभागी रुक्मिनिक कपाले कि भेल; विधिनिक उपरे विघिनि मिलल। ओहि पापी राजासब बहुत, स्वामीक संगेसहाय केहु नाहि; हामाक कौन गति हय, इहा नाहि जानु। हा हा सोनाक पुतलि, श्रीकृष्ण हामु पापिनी कैसे अनावलु; जानो काचक दाहिते मानिक हराइ।

सूत्रधार—ओहि बुलि, रूकमिनी जैसे विलाप कयल, आहे लोक, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—श्रीगांधार—जोतिमान

हरि हरि किनो बिहि लिखिल ललाट।
अबहु मिलल मेरि मरनक बाट ॥ध्रु०॥
पावलु पहु बहु पुन्ये हासु रंग।
हाते हरय निधि बिधि भेल वंक॥
आवल कैसन नाथ अभागिक लाइ।
काचक चाहिते जनु मानिक हराइ॥
बिहिक बिडम्बन किनु मेरि भेलि।
प्रान पिउ पास आस दुर गेल॥
हेठ बयने नयने झुरे लोर।
शंकर कह गति गोविन्द मोर॥२५॥५५॥

श्लोकः

भयवेपितचित्ताया रुक्मिण्या रोदनं द्रुतम्।
निरीक्ष्य दृढमालिङ्ग्यसान्त्वमामास केशवः॥३१॥५६॥

[भय से विकंपित चित्तवाली रुक्मिणी के रोदन को शीघ्र देखकर कृष्ण ने उसका दृढ़ आलिंगन किया और उसे सान्त्वना दी।]

सूत्रधार—तदनन्तर, कृष्णक समीपे विलाप करिते रूकमिनी, घन घन निश्वास फोकारे, नयनक नीर वहि जाइ। ताहे देखि भकत बान्धव माधव, अति सत्वरे बाहु मेलि, आलिंगि धरिकहु, आश्वास बोलल।

कृष्ण—आहे प्रानप्रिये! कि निमित्ते क्रन्दन करैछ? हामु विद्यमान थाकिते, तोहाक कौन चिन्ता, काहेक भय थिक?

सूत्रधार—ओहि बुलि, श्रीकृष्ण रुकमिनीक जैसे प्रबोध कयल, आहे लोक, ता देखह-सुनह। निरन्तर हरि बोल हरि।

गीत

राग—बेलवार—परिताल

करिबि नाहि आकुल प्रिये। धरि कामिनीक कानु बोध दिये॥ध्रु०॥
कि करव सिंनक सूकरसब आया? हामाकु सपत ताप तेजहु जाया॥
मोचल मुख प्रियाक पीत-बासे। कह शंकर रस केशव-दासे॥२६॥५७॥

कृष्ण—आहे प्रानप्रिये! हामाकु आगु ओहि राजासब कौन पतंग? जैसे सिंहक आगु क्षुद्र हरिण। इहा जानि भय शोक छाड़ह। देखह पापी राजासबक जैसे शृगालक एइखने खेदावब।

सूत्रधार—ओहि बोलि, रूकमिनीक संताप दूर करिये, स्वहस्ते ताम्बूल भोजन करावल। अन्यो अन्ये क तुक निरीक्षण करिये बोलल।

कृष्ण—हे प्रिये! तुहु निर्भये रह। हामु दुष्ट राजासबक युद्ध करिये खेदाउ। रंग देखह।

सूत्रधार[1]—ओहि बुलि, श्रीकृष्ण प्रियाक मुख निरेखि रथोपरे रहल। अये लोक इ कथा रहोक। द्वारका पुरे देवकी श्रीकृष्णक एकेश्वरे कुण्डिनक जाइते देखिया, पुत्रस्नेहे अति कातर हैया, बलभद्र गद सात्यकिक डाकिया आनि, संतापित चित्ते बोलये लागल।

देवकी—हे बलभद्र। हे सात्यकि! हे गद! देख मोर प्राणपुताइ श्रीकृष्ण कन्याक आशे एकाकी चलिया गेल। हामु लोक मुखे सुनि आछो, सि ठावे दुष्ट राजासब एकत्र हैया रह। नाहि जाहि जानि, एकेश्वर पाया कोन परमाद घटावे। ता हैले, हामार समूले वूड़य। जाहि तुहुसब सत्वरे गिया, गोविन्दक लाग धरह।

सूत्रधार—ओहि बुलि, देवकी मकमकि रोदन करिते लागल। देखि बलभद्र आश्वास करिया बोलल।

बलभद्र—हे माव! तुहु कृष्णक निमित्त किछु चिन्ता करबि नाहि। जे श्रीकृष्ण एकेश्वरे त्रैलोक्यक जिनिते पारे, ताहाक आगु राजासब कोन वस्तु थिक? तथापि तोहाक आदेश पालिये, एहिक्षण कुण्डिनक जाइबों। तुहु चिन्ता चाढ़ह, छाड़ह।

श्लोकः

विशम्य देवकीवाक्यं बलदेवो धृतायुधः।
गदसात्यकिसंयुक्तः ससैन्यः कुण्डिनः ययौ ॥३२॥५८॥

[देवकी के वचन सुन कर सशस्त्र बलदेव गद, सात्यकि और सेना के साथ कुण्डिनपुर को गये।]

सूत्रधार—ओहि परकारे, देवकीक आश्वास बचने प्रबोध करिकहु, यदु सेना सब सहित जैसे चलिते लागल, ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग--कानृड़ा—परिताल

चले बलदेव यदुबल संगे। करे मुषल हल धरि लीला रंगे ॥ध्रु०॥
गद सात्यकि वीर तीर धनु धरि। रथे चड़ि जाइ यम सम करि॥
अश्व रथ गज चले असंख्य प्रमाण। सेनार गिड़त तिनि लोक कम्पमान॥
ध्वज दण्ड पताकारे छानिल आकाश। कह शंकर हरि दास कु दास ॥२७॥५९॥

१. इस संवाद से लेकर आगे श्लोक संख्या ३३ तक का अंश केवल डॉ० बिरिंचि कुमार बरुवा द्वारा सम्पादित 'अंकीया नाट' में प्राप्त होता है, कालिराम मेधि संपादित 'अंकावली' में नहीं।

सूत्रधार—ओहि परकारे, पदाति सैन्य सहिते बलदेव आसिया, श्रीकृष्ण रथ भेंट पावल। देखि रुक्मिणी कृष्णक जे बोलल, ता सुनह।

रुक्मिणी—हे स्वामी कृष्ण ! देख विषम विपाक मिलल। कि भेल, आगु पाछु संकाश सेनासब बेढल, इहार आगु हामुसब कोन पतंग। विधिनिक उपरि विधिनि आसि मिलल। लाभक चाहन्ते मूल घाटय। हा हा कि परमाद भेल।

सूत्रधार—ओहि बुलि, रुक्मिनी क्रन्दन कयल; ता देखि श्रीकृष्ण प्रियाक प्रबोध बोलल।

कृष्ण—हे प्रिये ! तुहु भय छाड़ह। ओहि सब हामार सैन्य द्वारका हन्ते आवलथिक। किछु चिन्ता करबि नाहि।

सूत्रधार—ओहि बुलि, रुक्मिनीक आश्वास करिकहु, श्रीकृष्ण राजासबक समुख भेल। सोहि समये, आपोन सैन्यगण आसिकहु राजासब सहिते युद्ध करिते लागल। गद सात्यकि समे विपक्ष राजासबर युद्ध भेल। जरासन्ध सहिते बलभद्रर संग्राम मिलल। श्रीकृष्ण सारंग धनु धरिये टंकार कयल।

श्लोकः

ततः शार्ङ्गधनुधृत्वा टङ्कारमकरोद्धरिः।
श्रुत्वा तच्छब्दमतुलं राजानो हि चकम्पिरे॥३३॥६०॥

[तब हरि ने शार्ङ्ग नामक धनुष धारण करके टंकार किया। उसके अतुल शब्द को सुनकर राजसमुदाय काँप उठा।]

सूत्रधार—सारंग धनुक टंकार सुनिये, राजासबक हृदय कम्पित भेल। ताहे देखि श्रीकृष्ण हासि हासि बोलल।

कृष्ण—अये दुष्ट राजासब, हामाक खेदि आवल। आः जब सकति थिक, अब युद्ध करह।

सूत्रधार—ताहे सुनिये, राजासब सर बरषिये बोलल।

राजासब —अये यादव अनाचार, हामार बिबाहक कन्या रुकमिनीक जदि नाहि छाड़ब, जत सकति थिक, हामाक युद्ध देहु।

सूत्रधार--राजासबक दरप सुनिये, श्रीकृष्ण जैसे समर कयल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—नाटमल्लार—परिताल

युद्ध देहु यादव यदुराया, गरजे राजासब आया रे।
धरि धरि सारंग बरिषल बान, नृपसब बेधल काया रे॥ध्रु०॥

वारिवारिषा जस अम्बुद बरिषल, हरि करू सरक संधान रे।
काहुक बाहु काहु उरू काटि, हृदय बिदारल बान रे॥
वीर सिसुपालक काटल किरीट, पालटि पलावल पापी रे।
सब वैरी जिनि विजयी माधव, शंकर कह भव ताप रे॥२८॥६१॥

सूत्रधार—कृष्णक सरे राजासबक उरू, कर, कटि, हृदय भेदल। सिसुपालक किरीट काटल। देखि कहाभये राजासब भंग दिये, मृतकलप हुया पलावल। त्रासे पाछु चाहय नाहि। जैसन सिंहक भये शृगाल लवड़े, तद्वत् श्रीकृष्ण कौतुके कति दूर देखिये, पालटि रहल। तदनन्तर रूकमिनी स्वामीक विजय विक्रम देखिये, परम आनन्दे प्रदक्षिने पारि प्रनाम कयल। साधु साधु बुलि सिर पुष्प वरिखल। आँचोले श्रमजल मुचल। ताम्बुल भोजन कराइ, सखिसब सहिते, आँचोले विंचिये रहल। प्रथम बयस लज्जावती स्वामीक मुख कटाक्षे घन घन निरेखि, हेठमाथ कये थिक। श्रीकृष्णक प्रियाक मधुर आलापे आनन्द करावल।

श्लोकः

ततोऽति कौतुकं दृष्ट्वा प्रियायाः परमेश्वरः।
आनन्दलीलागतिभिर्व्रजन् केलिमकारयत् ॥३४॥६२॥

[तदतन्तर प्रिया के अत्यन्त कौतुक को देखकर परमेश्वर सानन्द लीलागति से चलते हुए बिहार करने लगे।]

सूत्रधार—श्रीकृष्ण सिसुपालक किरीट काटिये, राजासबक कति दूर खेदाइ परम कौतुके जुक्त हया प्रिया रूकमिनी सहिते, द्वारकापुर चलिते जैसन लीलागति कयल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—सुहाइ—चूटकला मान

जगजिउ उत्सुके चललि मधाइ। प्रिया संगे रंगे लीलाइ ॥ध्रु०॥
हरि कर धरल कामिनी कण्ठ मेलि, केलि करतहिं जाइ।
नव रमनी पिउ परसे बिहसि, चल लोचन मुँदि माइ॥
परमानन्द मगन मन रामा, दरसिये हास बिलासा।
सखि समे स्वामि सेवि कौतुक कर, कह शंकर हरि दासा॥२९॥६३॥

सूत्रधार—श्रीकृष्ण परम आनन्दे चलिते प्रियाक कण्ठे हात मेलि धरल। से नव तरूनी, प्रथम पिउक परसे लज्जित हुया, अल्प हास्य करिये घन घन आँखि मुँदि रहल। सखिसब सहित हास-बिलास दरसिये, कौतुके स्वामीक सेवा करिते चललि। श्रीकृष्ण जैसे हस्तिनीसब सहित मत्त मातंग चललि, तद्वत्। इ कथा रहोक। तदनन्तर,

रूकमिनीक ज्येष्ठ भ्राता रुक्मी नामे मन्दमति राजासवक भंग सुनिये, से पापी कोपे परम आटोपे साजिये, कृष्णक खेदि आवल।

रूक्मी —[डाकि बोल] अये यादव ! हामार भगिनिक छोड़ह छोड़ह। तोहाक नाहि मारि, रूकमिनीक नाहि छोड़ाइ, कुण्डिने प्रवेस हामु नाहि करव। जव भगिनिक छोड़वि नाहि, तब जत सकति थिक, हामाक युद्ध देहु।

श्लोकः

श्रुत्वा कृष्णो विहस्याह शृणु रे कुलकण्टक।
त्वामद्य निशितैर्बाणैर्नयामि यममन्दिरम् ॥३५॥६४॥

[यह सुनकर कृष्ण हँसकर बोले—रे कुलकण्टक ! सुन, आज तुझे पैने बाणों से यमराज के पास भेजता हूँ।]

सूत्रधार—ऐसन परकारे, रूक्मीक सगर्व वाक्य सुनि कृष्ण बिहसि बोलल।

कृष्ण —अये कुल-कण्टक रुक्मी, तुहु हामाक गारि देसि ? ओहि बाने जमपुर देखावब। क्षणेक रह।

सूत्रधार—ओहि बोलि श्रीकृष्ण, रूक्मी सहिते जैसे युद्ध कयल, ताहे देखह सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—कान्हड़ा—परिताल

कृष्ण वाक्य सुनि रूक्मी वीर। हानल बान कोपे काम्पे सरीर ॥ध्रु०॥
काटल बान कृष्ण सर मारि। गरजे रूक्मी पुनु बान प्रहारि॥
रूक्मी अस्त्र जोहि जोहि हाने। ताहेक छेदल पुरुष प्रधाने॥
बहुतर बाने ताहे हृदि भेदि। हातक धनु पेइलावल छेदि॥
हाते मुठि धरि रूक्मी कुमार। कृष्णक हृदये कयल प्रहार॥
ताहे प्रहारे हासि जदुनाथे। धरल केस केशव बाम हाथे॥
घण्टा लाड़ि घार जय मोड़। रूक्मी हृदये मारल गोड़॥
पाइ चोट बर मुरुछित वीर। कृष्ण धरल खाण्डा छेदिते सिर॥
हाहाकार कय रूकमिनी माइ। स्वामीक हाते सोदर बध जाइ॥
कृष्ण-किंकर ओहि शंकर गाइ। बोलहु राम हरि सबहु लोकाइ ॥३०॥६५

सूत्रधार - से पापी रूक्मी अस्त्रे नाहि पारि, कृष्णक हृदये मुष्टि मारल। श्रीकृष्ण तनिकर केस धरिये, हिये लाठि मारिये, काटिते आनन्दे खड्ग धरल।

श्लोकः

श्रुत्वा भ्रातृवधोद्योगं गोविन्दस्यातिदुःखिता।
कराभ्यां गृहीत्वा चरणौ चकार कातरं सती ॥३६॥६६॥

[रूक्मिणी, यह सुनकर कि गोबिन्द मेरे भाई के बध का उद्योग कर रहे हैं, अत्यन्त दुखी, होकर दोनों हाथों से भगवान् के चरणों को पकड़ कर रोने लगी ।]

सूत्रधार--तदनन्तर, देवी रूकमिनी ताहे देखिये, भ्रातृ मरय बुलि, श्रीकृष्णक चरन-पंकज धरि, कातर कय बोलल ।

रूक्मिणी--हे स्वामी ! तोहाक चरने लागु, भैयाइक प्रान दान देहु । तुहु परम ईश्वर, ओहि पापी तोहाक महिमा नाहि जानल, जैसे पतंग अगनित जास कयल । हामाक देखिते ओहि दोष मरष स्वामी ।

सूत्रधार—ओहि बोलि, कुमारी नयनक नीर झुराइ जैसे क्रन्दन कयल, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग–श्रीगांधार—ज्योतिमान

सुन्दरि धरि हरि चरन बिनावे ।
करहु करूना नाथ माथे धरोहों तृण, बुलिते नयन झुरावे ॥ध्रु०॥
भाया केरि दुख देखिये जिउ जाइ, राखहु पापीक प्रान ।
चरन कु आगु आँचोल पाति माँगों, देहु नेरि सोदर दान ॥
जबहु सोदर देव न करह रक्षन, आगुहि लेहु जिउ मोइ ।
हरिक पावें परि बर बाला बिलपति, कह शंकर रस ओइ ॥३१॥६७॥

सूत्रधार—ऐसन क्रन्दन कय, रूकमिनी हाते तृण धरिये बोलल ।

रूक्मिणी—हे स्वामी ! भायाक दुख देखिये प्रान फुटि जाई । ओहि अधमक जिउ रक्षा करह । चरनक आगु, आँचोल पाति माँगु । हे नाथ, हामाक सोदर दान देहु ।

सूत्रधार--श्रीकृष्ण तथापि तनिक छोड़य नाहि देखिये, पुनु कुमारी निश्वास फोकारि बोलल ।

रूक्मिणी—हे स्वामी ! जब भ्रातृक रक्षा नाहि करबि, हामाक जीव आगु लेहु ।

सूत्रधार—ओहि बोलिते लोतके कण्ठ बेढल । हा हा भैयाइ बुलि, माटि लुटि क्रन्दन कय लागल बाला ।

श्लोकः

प्रीतः प्रियायाः संप्रेक्ष्य विलापं परमेश्वरः ।
रक्षित्वा रूक्मिणः प्राणान् कारयामास मुण्डनम् ॥३७॥६८॥

[भगवान् श्रीकृष्ण ने प्रिया रूक्मिणी के विलाप को देखकर रूक्मी के प्राणों की रक्षा करके उसका सिर मुड़वा दिया ।]

सूत्रधार--श्रीकृष्ण रुकमिनोक बिलाप देखिये, परम करूना उपजल । हरि बिहसि बोलल ।

कृष्ण—हे प्रिये ! तुहु विलाप छोड़ह । तोहाक निमित्त ए पापीक प्रान राखलुँ, किन्तु, इहाक एक सास्ति करव, ताहे बाधा नाहि करबि ।

सूत्रधार—ओहि बुलि, श्रीकृष्ण से राजकुमारक गले वस्त्र बान्धिये धरल । खड्ग धरिये, सब केस मुंडावल । दाड़ि-गुंफ, चक्षु भ्रू सब उपाड़ल । मुखे कालि चून घसिये, ढंका मारि पेल्लावल । जैसे मृतक शव रुक्मी माटिते परिये रहल । आहे लोक, देखु, जे हरिक द्रोह करय, हरि गुन नाम लैते निन्दा करय, सोहि पापीक ओहि अवस्था देखह । जानि हरि भकतक निन्दा छोड़ि, हरि बोल ।

श्लोकः

सान्त्वयित्वा प्रियां पश्चात्तया सह महाहरिः ।
द्वारकापुरमागत्य प्रियया समरीरमत् ।।३८।।६९।।

[हरि ने प्रिय रुक्मिणी को सांत्वना देकर उसके साथ द्वारका नगर आकर प्रिया के साथ रमण किया ।]

सूत्रधार—तदनन्तर, श्रीकृष्ण प्रियाक आँखि मुख पीत वस्त्रे मुचि, शान्त करिये, परम कौतुके द्वारकापुर प्रवेस करिते, श्रीकृष्ण रुकमिनी सहित जैसे आनन्द कयल, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—तुड़ भटियाली—ज्योतिमान

मिलल कौतुक कमल-लोचनी, चललि स्वामीक संगिया ।
नील नीरद जस उजर बिजुरी, भुवन भुले भ्रू भंगिया ।।ध्रु०।।
मत्त मातंग संग अंग भंग, करिनी कर लास बेसया ।
कयल मंगल रंग कोलाहल, द्वारकापुर परबेसया ।।
देवी देवकी आसिये कौतुकी, धरल बर बधु हातया ।
जय जय रब मिलल उत्सव, कहतु शंकर बातया ।।३२।।७०।।

सूत्रधार– तदनन्तर, देवी देवकी परम मंगल वाद्य भाण्डे आसिकहो, वरकन्याक हात एक ठाम करिकहो, महामहोत्सवे गृह प्रवेस करावल । अनेक सुन्दर स्त्री, आयतीसब सहिते, श्रीकृष्ण रुकमिनीक माथे दुर्वाक्षत सिंचिये, तथि परम उत्सव मिलावल ।

तदनन्तर, श्रीकृष्णक विवाह प्रकार सुनह । प्रस्तुत माह । हरिक बिबाह कथा जानिये, जगतक जत लोक, कौतुके द्वारकापुर भरल आसिया । राजा भीष्मक स्वहस्ते कृष्णक कन्यादान करिते आवल । तदनन्तर, जगतक गुरु श्रीनारायण मनुष्य लीला दरसिये, विवाह करिते, प्रिया समे आसने बैठल ।

श्लोकः

आजगाम ततो ब्रह्मा कृष्णस्योद्वाहकारणात्।
सनारदो मुदायुक्तः स्रुवहस्तोऽति कौतुकी ॥३९॥७१॥

[कृष्ण के विवाह के कारण नारद सहित ब्रह्मा हाथ में स्रुवा लेकर प्रसन्नतापूर्वक आ गये।]

सूत्रधार—सेहि समये ब्रह्मा, नारद पुत्र सहिते, बिबाहक होम करिते जैसे मिलल, आहे लोक, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—कान्हड़ा—परिताल

आवल धाता हाते स्रुव धरि। चतुर बयने धन बेद उचारि ॥ध्रु०॥
गौरांग अंग रंग बिपरीत। संगहि नारद आनन्द चित ॥
बाम हाते कुश करत प्रकास। शंकर कह ओहि केशव-दास ॥३३॥७२॥

सूत्रधार—श्रीकृष्ण देखि, प्रियासहित ततकाले उठिकहा प्रनाम कयल। ब्रह्मा नारद आसीर्वाद कयल। श्रीकृष्ण माथे चड़ायाकहु कर जोरि बोलल।

कृष्ण—हे जगतक पितामह ! तोहाक दरसन देवर दुर्लभ। हामु मानुष हुया, तोहाक दरसन भेल। हामाक भाग्यक महिमा कि कहब, जनम साफल। आजु द्वारकापुर पवित्र भेल।

ब्रह्मा—[विहसि बोल] हामु तोहाक बिबाह सुनिये परम कौतुके आवलुँ। स्वहस्ते आहुति करिये बिबाह करावब।

सूत्रधार – श्रीकृष्ण ताहे सुनि, आसन देलह। ब्रह्मा तथि बैठल। कुसण्डि करिये, होम आरम्भल।

श्लोकः

ततो दृष्ट्वा तु रुक्मिण्या रूपलावण्यमद्भुतम्।
बभूव मूर्च्छितो ब्रह्मा काम-बाण विमर्द्दितः ॥४०॥७३॥

[रुक्मिणी के अदभुत रूप-लावण्य को देखकर ब्रह्मा काम-बाण से विद्ध होकर मूर्च्छित हो गये।]

सूत्रधार—तदनन्तर, मुखचन्द्रिका करिते, रुकमिनीक भुवन-मोहन रूप निरेखिये, ब्रह्मा माटि लुटि परल। नारद मुनि धरि बोध करावल।

नारद—हे पिता ! स्वस्थ हव। स्वस्थ हव। तोहार बेवहार नोहे।

श्लोकः

ततश्चेतनमालभ्य ब्रह्मा मंत्रमुदैरयत् ।
तदोद्वाहविधौ तस्मिन्नुत्सवः सुमहानभूत् ॥४१॥७४॥

[चेतना लौटने पर ब्रह्मा मंत्रोच्चार करने लगे । उस विवाह-विधि में बड़ा उत्सव हुआ ।]

सूत्रधार—तदनन्तर ब्रह्मा चेतन लभिकहु, विष्णु स्मरिये, पुनु स्रुव धरि होम करये लागल । सोहि समये राजा भीष्मक कन्या सम्प्रदान करिये, वर कन्याक केस एक ठाम कयकहो, पानी धालिते, तथि जैसे कौतुक मिलल, आहे लोक, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—सारंग—परिताल

कहतु बिधाता वेद कु बानी ।
हरि रूकमिनीक केस एक करिये, भीष्मक धाले भृंगार धरि पानी ॥ध्रु०॥
कौतुक रतन आँजुलि भरि बरिषे, गावे गोविन्द गुन सुरराइ ।
बासुकि उत्सुकि ताल ठुकि थमके, नाचे महेस हास सब चाइ ॥
मुनि सिद्ध कुसुम हरिसे बरिषे, करे कौतुक पेखये सब लोइ ।
द्वारकापुर भरि मिलल महोत्सव, कह शंकर गति गोविन्द मोइ ॥३४॥७५॥

सूत्रधार—ऐसन प्रकारे कृष्णक विवाह भेल । तदनन्तर; ब्रह्मा, रुद्र, इन्द्र आदि जत देवता; पातालक बासुकि प्रभृति जत नाग; पृथिविक जत राजा; सबाको सादरे श्रीकृष्ण गन्धः चन्दने, पुष्प-ताम्बुल, वस्त्र-अलंकारे; परम संतुष्ट करावल । अतः परे परम कौतुके, त्रैलोक्यर लोके जय कृष्ण जय कृष्ण घुषिये, समाज भांगिकहु, स्वकि स्वकि थाने चलिते, अन्यो अन्ये कृष्णक आश्चर्य गुन महिमा, कीर्त्तन कयेकहु दसो दिशे गेल ।

श्लोकः

ततोऽति कौतुकी कृष्णः प्रियया प्रेमरूपया ।
कुर्वन् केलिं महोऽत्साहान् मुमुदे रत्नमन्दिरे ॥४२॥७६॥

[तदुपरान्त कौतुकी कृष्ण ने प्रेमरूपिणी प्रिया के साथ विहार करते हुए रत्नमंदिर में आनन्द किया ।]

सूत्रधार—तदनन्तर, श्रीकृष्ण परम उत्सुके प्रिया सहिते, रत्नमन्दिरे प्रवेसिये जैसे कौतुके रूकमिनीक प्रवोधि, लीला-केलि कये रहल, आहे लोक, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—कल्याण—खरमान

करत बिहार करत बिहार मुरारू ।
कामिनी कमल अमल मुह लम्बि चुम्बे जगत आधारू ॥ध्रु०॥
घन घन नयन पंकज मुह हेरि हेरि करत कानु केलि ।
आलिंगि अंग अनंग ए रसिक मनीक भुज मेलि ॥
हासि हासि हरसे हरसे नख परसि कुच काँचुरि फोर काने ।
पूरल परम मनोरथ कामिनी साधु अधर मधु पाने ॥
श्रीराम राया हरि रस पाया, भकति रसिक सुजाना ।
केशव-चरन-सरोरुह-किंकर, शंकर हरि गुन गाना ॥३५॥७७॥

सूत्रधार—ओहि परकारे, भकत कृपालु श्रीकृष्ण, रुकमिनीक भकति वश्य हुआ, विविध विहार मदनखेला-लीला केलि कौतुके करिये, राजकुमारीक परम मनोरथ पूरल । से नृप नंदनिक महा महोत्सव मिलल । जगतक परमगुरू नारायण, तनिकर परम सौभागिनी भेल । नव तरुनी, पदुमिनी, सत सहस्र दासी पावल । इन्द्रक जत सम्पति, निज मन्दिरे मिलल । श्रीकृष्णक चरन-पंकज परमानन्दे परिचर्या कये सर्वथा रहल ।

श्लोकः

रुक्मिणीहरणंनाटः सम्पूर्णं हरिणा कृतम् ।
अस्मिन्निमित्तमात्रोऽहं जानन्तीति महत्तमाः ॥४३॥७८॥

[यह रुक्मिणीहरण नामक नाटक रुक्मिणी को हरण करनेवाले हरि ने ही (पूर्ण) किया है । मैं तो निमित्त मात्र हूँ, इस बात को महान् पुरुष जानते हैं ।]

सूत्रधार – आहे सभासद लोक, कृष्ण-चरण प्रसादत रुक्मिणीहरण नाट सम्पूर्ण भेल । इहाक जत न्यूनाधिक दोष, से हरिक स्मरणे दुर हौक । ओहि कृष्णक चरित्र कथा, जे साधुसबे श्रद्धाये कहे-सुने, से सबक हरिकृपा मिलोक ।

आहे लोक, देखु देखु, भाटक मुखे रुकमिनी, कृष्णक गुन सुनिये, कृष्णर चरने श्रद्धामात्र कयल । अतये भकतक परम कृपालु कृष्ण तनिकर वश्य हुय, गृह गृहिणी कयल । आः हरि भकतिक महिमा कि कहब ? जानि कृष्ण चरने चित्त दिये, निरन्तरे हरि बोल हरि ।

मुक्ति-मंगल भटिमा

जय जय जगत जनक जदुदेव । पद पंकज-रज अज करु सेव ॥
जोहि हरल रुकमिनी करु मान । सोहि करतु नित्य मुकुति बिधान ॥

हरसे नाचये हर जाकेरि आगु। गरुड़क देखि पलावत नाग॥
खसल बघाम्बर वृषभ उछान। सोहि करतु नित्य मुकुति बिधान॥

जोहि जलधि मह बांधल सेतु। राकस रावण मारन हेतु॥
भीता भकता सीता करू त्रान। सोहि करतु नित्य मुकुति बिधान॥

अघ बक केसि कंस जिटो आर। दुष्ट अरिष्टक मोड़ल घाड़।
पुतना सोषन चेतन प्रान। सोहि करतु नित्य मुकुति बिधान॥

ऋजु कुब्जा जो कयलि एकान्त। कुवलय भिरि उपारल दान्त।
कयो रंगसाले मल्ल निरजान। सोहि करतु नित्य मुकुति बिधान॥

जोहि विष हृदे बाहु आस्फालि। करु कौतुक नृत्य कालि निकालि।
गोकुल राखि बह्नि करू पान। सोहि करतु नित्य मुकुति बिधान॥

श्रीराम राया भकति सुजान। करावत कृष्ण नाट निरमान।
रुकमिनी-हरन नाट परधान। कृष्ण-किंकर ओहि शंकर भान॥

सुनु सुनु साधु सभासद लोइ। मुरुषक दोष धरबि नाहि मोइ॥
हृदि माधव जोहि मति दिला। सोहि अनुरूप करलु हरि लीला॥

जाहे जाहिते इच्छा बैकुंठ बाट। सुनु सावधान कयो कृष्ण नाट॥
परम बन्धु हरि चरित्र बिनाइ। नाहि नाहि गति कलित लोकाइ॥

अबहु नाहि बुझि सास्त्रक मर्म। नामत शरण लेहु सब धर्म॥
कलिमल-मोचन परम हरिनाम। जानि सबहि नर बोल राम राम।३६।७९॥

॥ इति रुक्मिणीहरण नाट समाप्त ॥

पारिजात-हरण नाट

श्लोकः

नमः कृष्ण विष्णो परान्तशक्त । नमो राम राजीवनेत्र प्रभो मे ॥
नमो ब्रह्ममूर्ते मुरारे परेश । नमो विश्ववास प्रसीद प्रसीद ॥१॥

[हे परानन्त शक्ते कृष्ण रूप विष्णु ! हे प्रभो राजीव नयन राम, ब्रह्ममूर्ति, मुरारि, परेश ! हे विश्व में निवास करने वाले प्रभो ! आपको नमस्कार है । आप प्रसन्न हों ।]

अपिच

खगेन्द्रं समारूह्य निर्जित्य शक्रम् । मुदा लीलया देवकी गर्भजातः ॥
प्रियं पारिजातं जहार प्रियार्थं । परेशाय कृष्णाय तस्मै नमस्ते ॥२॥

[हे देवकी-पुत्र ! आपने गरुड़ पर सवार हो प्रसन्नतापूर्वक, सहज ही इन्द्र को जीत कर प्रिया सत्यभामा के लिए प्रिय पारिजात का हरण किया । ऐसे परब्रह्म कृष्ण को नमस्कार है ।]

सूत्रधार—पहिलेहि श्रीकृष्णक प्रणाम कयकहो, सभासद लोकक सम्बोधि बोलल ।

श्लोकः

भो भो सामाजिका ईश कृष्णस्य जगतीपदे ।
श्री पारिजात हरणं यात्रा सम्प्रति पश्यत ॥३॥

[हे सामाजिको, जगत्पति कृष्ण की पारिजात-हरण-यात्रा का अभिनय इस समय आप देखें ।]

भटिमा

जय जय कृष्ण देव निज अंस । लीला-नासित कंस सबंस ॥
जाकेरि चरित्र भकत अवतंस । कमला केलि कमल कलहंस ॥
तनु इन्दीवर श्यामल चोरि । तथि परकासित पीत पिछोरि ॥
तड़ित जड़ित जस नव घन खंड । मकर कुण्डल मंडित गण्ड ॥

कनक किरीट रतन अवभास । कुंचित चारू चिकुर परकास ॥
रुचिकर कर्न भुवन मन भूल । नासा नील रतन तिल फूल ॥

नयन- कमल मुह-पंकज जोर। एकु मिलल जस चान्द चकोर ॥
मानिक दसन हास तथि थोर। आरकत अधर बंदुलि रुचि चोर ॥
रुचिर चिबुक पे खिहरु ताप। भ्रुव युग गंजि मदन केरि चाप ॥
कुटिल अलक कुल तिलक कपोल। हृदये हेमक हार अमोल ॥
ओतिम मोतिम माला लुले। कौस्तुभ कम्बु कण्ठ मह डुले ॥
चारु उदर दर हृदय विसाल। लम्बित पंच वरन बनमाल ॥
संचर चंचर मधुकर लोहे। श्री श्रीवत्स उरस्थल सोहे ॥
चारु चतुर भुज अंग भुवंग। रतन केयुर उजोरत अंग ॥
कंकण कनक झनक करु मूल। करतल राता उतपल तूल ॥
अंगुलि चारु हीर हेम मोति। नख मनि निन्दित चान्दक ज्योति ॥
अरि अरबिन्द कौमुदी कम्बु पाणि। कोकिल कंठ अमिय झुरे वाणि ॥
नाभि कुण्ड कंज अनुपाम। बिहि को जनम भेलि सोहि ठाम ॥
कटि तट कनक काँचि परिरम्भ। उरू करिकर बर मरकत तम्भ ॥
लम्बि नितम्ब पीत रुचि चीर। पद-पंकज झुरे रतन मंजीर ॥
नील अंगुलि जस चम्पक कोर। नखचय चारू चान्द उजोर ॥
कमल पदतल आरकत भान्ति। ध्वज पंकज यव अंकुश कान्ति ॥
पास लास स्वेत चामर डोल। संचर राजहंस दुहो कोल ॥
माथे छत्र चारू ससिकान्त। बरिसे सीकर अमिय नितान्त ॥
मधुर मुरूति भकत मनपूर! मनमथ कोटि जाहे नाहि तुर ॥
होइ जस नील नव घन खण्ड। उवरे रह रविकर परचंड ॥
पूर्णिमाक चान्द दुहो दुहो पास। तथि करु इन्द्र चाप परकास ॥
बहे दुहों धारा सुरसरि नीर। उजुरि बिजुरि रहत तथि थिर ॥
अभिनव सूर उगत तसु माझे। ताहे लम्बि वक-पंकति बिराजे ॥
तारा झिकमिक करु बहु ठामा। तब तोइ सोइ मुरुति उपामा ॥
रहु हृदि पंकज सोहि मुरारि। अब सब लोइ देख बिचारि ॥
कोटि कलप तरु पूरन काम। ऐसन ईश रहइ निज ठाम ॥
ताहे चरन चिन्त चित्त लाइ। तनु चिन्तामनि बिफलेइ आइ ॥
आवे निकट नित अन्तक गरजि। लेहु हरि चरन सरन सब बरजि ॥
जो मुहे राम नाम नाहि अंशे। कलियुगे काल-भुजंगम दंशे ॥
सोहि कृष्णाक नाटक उपामा। पारिजात-हरण आहे नामा ॥
भकतिक साधि सुनह सब लोइ। हरि बिने बांधव आन नाहि कोइ ॥
कृष्ण-किंकर ओहि शंकर बोल। कर अब नर सब हरि हरि बोल ॥१॥४॥

सूत्रधार – आहे सामाजिक लोक, जे जगतक परमगुरु, जाहेरि स्रजना सकल संसार, ब्रह्मा महेसे बन्दित-प्रादपद्म, परम-पुरुष पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण, ओहि रुकमिनी सत्यभामा सहित सभा मध्ये प्रवेसि कहों, नरकासुर-बध पारिजात हरण, लीला-यात्रा, कौतुके करव। ताहे सावधाने देखह-सुनह। आतपरे पुन्य कलित नाहि, जानि निरन्तरे हरि बोल। [तदनन्तर पूछत] आहे संगी, कि वाद्य बाजत ?

संगी—आहे, देव-वाद्य बाजत।

सूत्रधार—आः, मिलल मिलल।

श्लोकः

प्रवेशमकरोत् देवो गोविन्दो गरुड़ासनः।
रुक्मिरणी सत्यभामाभ्यां सह चारुश्चतुर्भुजः ॥४॥५॥

सूत्रधार—आहे लोक, हामु जे कहलु, सोहि परमेश्वर श्रीकृष्ण सभार्ये जात्रा निमित्ते एथा आवत परम सावधान हया, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल।

[इति संगी निष्क्रान्तः]

गीत

राग—सिन्धुरा—एकताल

आवे गरूड़केतु कयो परवेश। मदनक लाज हेरि रूप लेश।। ध्रु० ।।
स्याम मुरूति दीपति पीत बासा। मुकुट कुराडल मनि मुख परकासा।।
कर कंकन बनमाला उरे डोले। चरनक माझे मंजीर करू रोले।।
कोटि मदन जिनि उजर मुरारी। संगे सत्यभामा रूकिमिनी नारी।।
सरीरक जोति जलय दिशपासा। कहय शंकर हरि दास कु दासा ।।२।।६।।

सूत्रधार – आहे सभासद लोक, श्रीकृष्ण पत्निसब सहिते, कौतुके नृत्य कयकहों, रूकमिनी सहित एक मन्दिरे रहल। सत्यभामा निज मन्दिरे रहल।

श्लोकः

पश्य पुरन्दरो देवी नारदेन सहागतः।
प्रणम्य केशवं सर्व्वं प्रोवाच भीमचेष्टितम् ।।५।।७।।

सूत्रधार—तदनन्तर, देवता इन्द्र, नारद सहित आसिकहु श्रीकृष्णक सिरे परनाम कयकहु, नरकासुरक बिचेष्टा जैसे निबेदल, नारद आसीर्बाद कय, श्रीकृष्णक हाते जैसे पारिजात निबेदल; रुकमिनिक माथे जगतक नाथे जैसे पिन्धावल; आहे लोक, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—आशोवारि—परिताल

ऐरावत कान्धे बासव आवे। आगहि नारद हरि गुन गावे ॥ध्रु०॥
सुन्दरी रमणी शचि एकु पासे। चल भ्रुभंग अंग लय लासे ॥
माथे छत्र बज्र एक हाते। कह शंकर गति गोपिनी नाथे ॥३॥८॥

सूत्रधार—तदनन्तर नारदक देखि, श्रीकृष्ण सभार्ये उठिकहो, सपटे परनाम कयल। नारद हात तानि चिरंजीव, चिरंजीव बुलि, आसीर्बाद-श्लोक पढ़ल।

श्लोकः

जय जय यदुदेवो देवकी नन्दनस्त्वं, भुवनपति समस्तैः सेवितांध्रिः सदैव।
निजजन-भयहारी सृष्टिसंहारकारी, असुर नाशकस्त्वं साम्प्रतं त्राहि देवान् ।६।६॥

[हे यदुदेव देवकीनन्दन ! समस्त भुवनेश्वरों से आपके चरण सदा सेवित हैं। अपने भक्तों के भयकारी, सृष्टिसंहार कर्त्ता, नरकासुर के नाश करनेवाले; आपकी जय हो। इस समय आप देवों की रक्षा करें।]

सूत्रधार—ओहि आसीर्वाद कये, कृष्णक हाते पारिजात दिये, नारद ताहेक महिमा कहल।

नारद—हे कृष्ण, ओहि पारिजातक गंध तिनि प्रहरेक पथ जाइ। ओहि पारिजात जाहेर गृहे रहे, धन-जन-बिभव ताहेक छाड़ये नाहि। ओहि देव-दुर्लभ पारिजात जो नारि परिधान करे, ते पुण्यक महिमाये परम सौभागिनी हय। ताहेक बाड़ि छाड़ि स्वामी कथये जाये नाहि। अतः, ओहि कुसुमक महिमा कि कहब !

सूत्रधार—ओहि बुलि, नारद चवड़ि पारि, बैठि मौने रहल।

श्लोकः

श्रुत्वा कुसुम-माहात्म्यं रुक्मिणी केशवप्रिया।
प्रणम्य स्वामिचरणं पारिजातमयाचत ॥७॥१०॥

[केशवप्रिया रुक्मिणी ने कुसुम-माहात्म्य को सुनकर स्वामी के चरणों में प्रणाम करके पारिजात-पुष्प की याचना की।]

सूत्रधार—मुनिक मुखे कुसुमक महिमा सुनि, रुक्मिनी, परम कौतुके, कृष्णक गोरि लागि कर जोड़ि बोलल।

रुक्मिणी—[कर जोड़ि] हे स्वामी, हामि तोहार प्रथम पतनी; जानि, ओहि देव-दुर्लभ पारिजात, प्राननाथ हामाके देहु।

सूत्रधार—ओहि बोलि, जैसे कुसुम माँगल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल।

गीत

राग—श्रीगान्धार—मानज्योति

कौतुके रुकमिनी नमिये स्वामिक पावे, माँगे आँजुरि जुरि हात।
आहे पिउ—
अब प्राननाथ ! माथे मिलाव मोहि, ओहि कुसुम पारिजात ।।ध्रु०।।
आहेर गुन सुनि मुनि मुखे माधव, साधु अतये तोइ मान।
भकत कृपालु लागु चरन तेरि, करहु कुसुम मोहि दान ।।
तोहारि प्रथम पतनी परस्वामि, जानि पुरहु मोहि आसा।
धनिक बानि सुनि हासे रसिक हरि, कहत शंकर कृष्ण-दासा ।।४।।११।।

सूत्रधार—तदनन्तर, रुकमिनीक अति कातर बानि सुनि, श्रीकृष्ण हासि-हासि हाते तोलि प्रियाक गौरवे कोले बैठाइ, कौतुके जगतक नाथे, रुकमिनीक माथे पारिजात पिन्धावल। रमनीक बाँछा सफल भेल। तदनन्तरे, प्रियासहित श्रीकृष्ण सादरे नारदक वार्त्ता पुछत।

कृष्ण—हे मुनिराज ! तोहों कुसले आवल ? आः, तोहारि आगमने, आजु हामार द्वारकापुरी पवित्र भेल। तोहारि दरसने, हामु कृतार्थ भेलों।

सूत्रधार—नारद श्लोक पढ़े—

श्लोकः

कृष्णस्य वचनं श्रुत्वा विहस्योवाच नारदः।
निज भृत्यस्तवैवाहं मयि मायां करोषि किम् ।।८।।१२।।

[कृष्ण की बात सुन नारद ने हँस कर कहा—मैं तो आपका दास हूँ। क्या मुझ पर ही माया (का विस्तार) करेंगे ?]

नारद हे स्वामि कृष्ण ! मनुष्य चेष्टा देखाया सब लोक मोहिछ। तोहाक ईश्वर बोलि जानव नाहि। हामु तोहारि भकतिबले सब जानु। हामाकु मोहिते चाब ? आः, स्वामि ! सुनह।

पद

हे परमेश्वर जगत निवासा। हामु नारद तुया चरनक दासा।
भरमो दिस दस तुया गुन गाया। हामाकु आगु करहु ओहि माया ।।
जगत उद्धारल जाहेर चरित्र। ताहेक हामु कयलु पवित्र ।।
जाहेरि नामे मुकुति पद पाइ' सो हरिकर तुति नति कति लाइ ।।
तुहुँ जगतक गुरु देवक देवा। तोहारि चरने रहोक मोर सेवा ।।
मुखे जनु छाड़हु तुय गुन नाम। माँगु अभय वर तोहारि ठाम ।।५।।१३।।

नारद—हे कृष्ण ! तुहुँ परम पुरुष नारायण, भूमिक भार-हरण निमित्ते अवतरिछ। साम्प्रत पापी नरकासुरे देवतासबक वहुत दुख लगावे। तन्निमित्त शचि सहित, इन्द्र देवता तोहारि चरने सरने लेलह। हे श्रीकृष्ण ! देखो देखो (मौने रहल)।

सूत्रधार—ओहि बुलि नारद मौने रहल। तदनन्तर श्रीकृष्णक आगु परि पुरन्दर, परनाम कयकहों सभार्ये कर जोरि, तुति बोलल; ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल।

पयार

जय जय यादव देव। जय धाता कृत्य सेव॥
जय भकतक भयहारी। जय जय ईश्वर मुरारी॥
जाकेरि नाम उचारी ! पाइ पद रस चारी॥
जीव नियन्ता तुहुँ अज। बन्दो तुया पद-पंकज॥
अघ बक धेनुक कंस। मारल असुर सबंस॥
हरलि भूमि केरि भार। भकत हेतु अवतार॥
साम्प्रत गोचर हामारि। बान्धव सुनह मुरारि॥
अब नरकासुर पापि। करह बड़ि उपताप॥
आनल स्वर्गक मारी। देवक जतये कुमारी॥
सर्वस्व न रहे हामारि। तव पावे कयलुँ गोहारि॥६॥१४॥

पुरन्दर—हे स्वामि श्रीकृष्ण ! पापी नरकासुरे कोन न करल ? बरूनक छत्र, मनि पर्वत, ए सब काढ़ि आनल। हे कृष्ण ! कि कहब ? मातृ अदितिक कुण्डल दोहो राखये नाहि पारल। आर हामार हेइते कि रहल ? हे कृष्ण ! कोटि कोटि ब्रह्माण्डेश्वर, तोहारि चरन छोड़ि हामार गति नाहि। बाप जगन्नाथ, त्राहि-त्राहि।

सूत्रधार—ओहि बुलि, कृष्णक आगु कान्दि-कान्दि पुरन्दर परल।

श्लोकः

दृष्ट्वा दुःखं महेन्द्रस्य श्रुत्वा च भीम चेष्टितम्।
आश्वास्य वासवं हस्ते गृहीतोवाच केशवः॥९॥१५॥

[कृष्ण ने इन्द्र के दुख को देखकर तथा (नरकासुर की) भीम चेष्टा को सुनकर इन्द्र को आश्वासन देते हुए उसके दोनों हाथों को पकड़ कर कहा।]

सूत्रधार—श्रीकृष्ण तदनन्तर महेन्द्रक दुख देखिये, परम कृपामय नारायण हाते धरि तोलि, इन्द्रक आश्वासि बोलल।

कृष्ण—हे पुरन्दर ! तोहो ताप तेजह। तोहारि बैरी नरकासुर, से गतायु भेलि। ताहेक मारि, देवतासबक प्रयोजन सत्वरे साधब। ओहि निकटे जानि, तुहु आगु हुया, सत्वरे अमरावती चलह। नरकासुरे बधिते, हामु आजु पयान करब।

सूत्रधार—से समये नारद आसिकहुँ, इन्द्रक बोलल।

नारद हे पुरन्दर ! श्रीकृष्ण जेखन अंगीकार कयल, तोहार सत्रुक तेखने कन्धपात भेल। इहात शंका नाहि. तुहुँ आगु हुया चलह। तोहाक निमित्त, श्रीकृष्णक कातर कय, हामु पाछु लया जावब। चिन्ता नाहि, चलह।

सूत्रधार— ओहि निर्भय बानी सुनि, बासव, कृष्णक नारदक प्रदक्षिण करिकहुँ, परि परनाम कयल। बिदाय लैया ऐरावते चड़ि, इन्द्र चलल।

श्लोकः

मुनिर्माधवमाहेदं गन्तुं त्वरय केशव।
द्वारवत्याः श्रियं पश्यन्नेष्यामि चान्तिकन्तव ॥१०॥१६॥

[नारद मुनि ने माधव से कहा—हे केशव, शीघ्र चलें। मैं द्वारिका की शोभा देखता हुआ आपके निकट आऊँगा।]

नारद हे कृष्ण, तुहुँ चलिवाक सत्वरे साजह। हामु तोहारि द्वारकापुरीक, कौतुके देखिये, एइखने आवब।

सूत्रधार—ओहि बुलि, नारद हरि गुन गाइ, जैसे चललि, देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—श्रीगांधार—परिताल

चललि नारद हरि गुन गाइ। भरमे द्वारकापुरी सम्पति चाइ ॥ध्रु०॥
रतने रचित जत हरिक ग्रावासा। जैसे सुरपुर कर परकासा॥
पेखल पाछु भवन ग्रनुपामा। ग्रासने थिक बैठल सत्यभामा॥
पुनिमाक चान्द बदन परकासा। चिरंजीव बोलि नारद करु हासा॥
देखि मुनिक धनि ग्रवनत काइ। परि परनाम कयलि पुनु माइ॥
जिवतु जिवतु नारद बोल। डाकि करहु नर हरि हरि बोल ॥७॥१७॥

सूत्रधार—तदनन्तर वसुवा चयड़ि पारल, मुनि आसन भिड़ि, तथि बैठल।

श्लोकः

नारद : सादरं देवीं सम्बोध्याह हरिं प्रियाम्।
कृष्णस्य कर्मविषमं सत्यभामे निबोध मे ॥११॥१८॥

[नारद ने सत्यभामा को सादर सम्बोधित करके कहा—हे सत्यभामे कृष्ण के विषम व्यवहार का ज्ञान आज मुझे हुआ।]

नारद—आः, हे देवि सत्यभामा ! तोहारि स्वामि श्रीकृष्ण बड़ि विषम चेष्टा देखल। हा हा माव, तुहुँ दुर्भागा भेलि, हामु आजु से जानल।

सत्यभामा—हे मुनिराज ! तुहुँ कि कहइछे । हामु किछु बुझये नाहि ।

नारद—हा हा तोहाक बिधि बंचल । हे माव ! कि कहव ? कहिते बड़ि दुख लागे ।

सूत्रधार—ओहि बोलि, हेठ माथ ठेषकय रहल मुनि ।

श्लोकः

सत्यभामा भयाद्भीता निशम्य मुनिभाषितम् ।
दृष्टं कथय किं कुत्र तं पृच्छति पुनः पुनः ।।१२।।१६।।

[मुनि की बात सुन सत्यभामा भयभीत हो बार-बार पूछने लगी कि उनका विषम व्यवहार क्या है ? आपने उसे कहाँ देखा है ?]

सूत्रधार—सुनि भीति हुया, देवी कर जोड़ि बोलल ।

सत्यभामा – [कर जोड़ि] हे मुनिराज ! हामु जानि, मोहि सम सौभागिनी आवरि नाहि । से स्वामि कृष्ण, हामाक छाड़ि कतिहु जावे नाहि । तुहु आजु कौन ठामे, कि देखल कि सुनल ? हामाक सपत, सत्वरे स्वरूप बात कह । चित्त बड़ि उद्वेग करय । मुनि, मौन छाड़ह ।

श्लोकः

दृष्ट्वा देव्याः मुनिर्व्वन्धं कथयामास सादरम् ।
कृष्णस्य चरितं सर्व्वं रुदन्निव स नारदः ।।१३।।२०।।

[सत्यभामा का आग्रह देखकर नारद ने कृष्ण का सारा चरित्र रोते हुए सादर कह सुनाया ।]

सूत्रधार—देवीक निर्बन्ध देखि, मुनि बोलल ।

नारद—हा हा ! हे माव, कि कहव ? ए सब कथा कहिते दोष । हामु देव-दुर्लभ पारिजात पुष्प स्वर्ग हन्ते आनि, कृष्णक हाते देलों । से पारिजात जे नारि परिधान करे, से पुष्पक महिमाये परम सौभागिनी हय । इहा जानि हामु बोललु—आहि परिजातक योग्य देवी सत्यभामा । तथि कृष्णे कयलि कि, तोहाक कटाक्ष करिये, आपुन हाते प्रिया रुकमिनीक माथे, परम सादरे से दिव्य पारिजाता पिन्धायल । आः, तोहाक जीवन धिक धिक ! सतिनिक अभ्युदय देखि कि निमित्ते प्रान धरये ? माय, तुहुँ जिअन्ते मरल ! हा हा बिस्तर कि कहव ?

श्लोकः

मुनेर्व्वचनमाकर्ण्य शोक-कोप-परिप्लुता ।
मूर्च्छिता पतिता भूमौ यथा वाताहता लता ।।१४।।२१।।

[मुनि-वचन को सुन शोक और कोप से परिप्लुत सत्यभामा मूर्च्छित होकर भूमि पर इस प्रकार गिर पड़ी जिस प्रकार वायु से आहत लता गिर जाती है ।]

सूत्रधार—तदनन्तर नारद मुखे, सतिनिक महोदय सुनिकहुँ, कोपे अपमाने आन्धारि देखिये, देवी सत्यभामा मूर्च्छित हया पड़ल। जैसे लवंगलताक बाते उपाड़ल, तद्वत् केशमुक्त भेल। मुखे बचन हरल। नासात प्रानवायु नाहि खेले, पेखि सखि इन्दुमती 'हा हा प्राण सखि! मरल, मरल', बुलि बाहु मेलि धरिकहुँ, सिरे जल सिंचल; आँचोरे बिंचि कान्दि-कान्दि प्रवोध बोलल।

इन्दुमती—हे प्रानसखि! सतिनिक अपमाने कि मरिते चाय? ओहि कौन बेवहार? आः, से प्रानमाधव स्वामि, तोहारि मान साधव नाहि? ओहि दुरन्त चिन्ता परिहर। उठह-उठह।

श्लोकः

कथंचित् चेतनां प्राप्य लब्ध्वा ज्ञानं पुनः पुनः।
विनिश्वस्यापमानेन रुरोद सखिसन्निधौ ॥१५॥२२॥

[किसी प्रकार चेतना तथा ज्ञान प्राप्त कर (सत्यभामा) बार-बार उच्छ्वास लेते हुए अपमान के कारण सखियों के समीप रोने लगी।]

सूत्रधार—से देवि सत्यभामा, कथंचित चेतन लभिये, घन घन निश्वास फोकारि, जैसे संताप कयल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—कल्याण—ताल ज्योति

मानिनी माइ नयन पंकज झुरे बारि।
फोकारय श्वास ह्रास भेलि देहा, घन-घन देखो आन्धियारि ॥ध्रु०॥
सतिनीक उदये हृदये दहे आगि, अधिक मिलल मन तापे।
धिक अब जीवन जोवन मोहे, अभागिनी करत बिलापे ॥
हरि हरि प्रिय मेरि बैरि अधिक भेलि, कयलि अतये अपमाना।
धरनि लुटि लुटि बिलपति बाला, कृष्ण-किंकरे रस भाना ॥८॥२३॥

सूत्रधार—देवि सत्यभामा ओहि सकारुन बिलाप अपमान कये थिक। तदनन्तर कलहप्रिय नारद, पुनर्व्वार कृष्णक आगु गिया जे बोलल, ताहे सुनह।

नारद—आहे श्रीकृष्ण! तुहु एथा कौन सुखे रहह? से प्रिया सत्यभामा पारिजातक निमित्ते, अपमाने अन्न पान सब छाड़ल। परम तापे मरइछे। हा हा चक्षुये देखिते पाव कि ना पाव। देव, सत्वरे जाव।

श्लोकः

मुनेर्व्वचनमाकर्ण्य माधवो भक्तबान्धवः।
द्रुतं तस्यागृहं प्रागात् प्रियायाः प्रेमविह्वलः ॥१६॥२४॥

[नारद मुनि की बात सुन भक्त-बान्धव माधव प्रेम विह्वल हो शीघ्र ही प्रिया सत्यभामा के भवन में गये ।]

सूत्रधार—मुनिक मुखे, प्रियाक दुख सुनि श्रीकृष्ण प्रेम-बिहवल हुया, मुनिक कातर करिकहुँ, बात पुछि, जैसे सत्यभामाक समीप चलल, ताहे देखह सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—तुड़—ज्योतिमान

ए मुनि कहियो कपट परिहरि । प्राने कि जियय मोर गुनेर सुन्दरि ॥ध्रु०॥
मानिनी न सहे तिलैको अपमान । मेरि अपराधे कैसे धरब परान ॥
प्रियाक सन्तापे तापे दहे सोक आगि । कुसुम ना दिया भैलों तिरि-बध भागि ॥
झुराइते नयन प्रियाक पाइला कोल । देखि आकुल कृष्ण-किंकर बोल ॥६॥२५॥

सूत्रधार—श्रीकृष्ण प्रेम-बिहवल हुया, प्रियाक देखल—लोतके मुख मलिन, घन घन निश्वासा फोकारि, माटि लुटि रहल । ताहे पेखि श्रीकृष्ण, 'हा हा कि भेल', बोलि आँकोआलि धरल । नयनक नीर झुराइ, आश्वास बोलल ।

श्रीकृष्ण—हे प्रिये ! गोट एक फूल रुकमिनीक देलो । से निमित्त यदि अपमान करह तब उठह । तोहाक एक सत पारिजात देवब । हे प्राणप्रिये ! से रुक्मिनी, जाम्बुवती तोहाक सम सौभागिनी हवे नाहि । तोहो हामाक प्रानसम प्रिया । जानि ताप तेजह । तोहारि दुख देखि हामार हृदय सहये नाहि । हे प्रिये ! हामाक सपथ, उठह-उठह ।

श्लोकः

प्रियं प्रणयकोपेन निश्वस्याह ततः सती ।
मां नु धूर्त्तक दुर्भागां किमर्थं जल्पसे पुनः ॥१७॥२६॥

[तदनन्तर सती सत्यभामा ने प्रिय (कृष्ण) को प्रणाम कर कोप से निश्वास लेकर कहा —हे धूर्त्त मुझ अभागिनी को क्या ठगने आये हो ?]

सूत्रधार—तदनन्तर श्रीकृष्णक वाक्य सुनि, देवी सत्यभामा स्वामिक पिठि दियेकहों, हेठ माथे, सकरुन क्रन्दन कय बोलल ।

सत्यभामा—[क्रन्दन कय] हे स्वामि, हामि दुर्भागाक, कपट वाक्ये कत कदर्थना करह । जे तोहार प्रियतमा रुकमिनी, ताहेक समीप चलह । हामात कोन प्रयोजन थिक ?

सूत्रधार—ओहि बोलि, बहुत विलाप कय, कृष्णक जे बोलल, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—श्रीगांधार—ताल ज्योति

केशव हे ! बुझलहों तोहों, जानलहों तोहो बेवहारा ।
अतवे चातुरी छोड़ि चलहु बहुरि हरि, जाँहा प्रिया रमनि तोहारा ।।ध्रु०।।
तोहारि कपट कृष्ण ना बुझि मानलो हामु रे, नाहि सौभागिनी सम मोइ ।
जैसन पिरीति-रीति सबहि बिदित भेलि रे, आजु जानुलु मति तोइ ।।
ओहि अपमाने प्रान नाहि धरब हामु रे, छोड़लु जीवन कु आसा ।
आगु पिउक पड़ि बहु बिलपति बाला रे, कहतु शंकर हरि-दासा ।।१०।।२७।।

सत्यभामा—हे स्वामि ! हामु दुर्भागा सतिनीक अधीन । तुहु हामाक कतने बिकर्थना करह, ओहि अपमाने हामु प्रान राखब ? आः, तब हामाक जीवन धिक !

सूत्रधार—ओहि बुलि, देवी कान्दि-कान्दि मूर्च्छित हुया पड़ल ।

श्लोकः

कुर्वन् हाहारवं रामामालिङ्ग्याकुल मानसः ।
प्रियावाक्यैस्ततः साध्वीं शान्तयामास माधवः ।।१८।।२८।।

[आकुल मानस माधव ने 'हा हा' शब्द करते हुए प्रिया को माधुर वाक्यों से आश्वस्त किया]

सूत्रधार—ताहे देखि, श्रीकृष्ण हा हा बोलि, बाहु मेलि धरल । प्रियाक दुख देखिये मरम चढ़ल । कमल नयन भरि झरि वहे नीर, आलिंगि, प्रियाक चाप धरि, कोले करिया, आश्वास वचन बोलल ।

पयार

प्रियाक दुख देखि न सहे सरीर, कमल नयन भरि झरि बहे नीर ।
आलिंगि प्रियाक चापि धरि कोल, करि आश्वास बचन हरि बोल ।।
हे हे प्रानप्रिये सुन बात । देलहुँ नाहि तुहि पारिजात ।।
अत अपराध सहब अव मोइ । तुया सम सौभागिनी नहि कोई ।।
रुकमिनीक देलों गोटा एक फुल । ताहेक लागि तुहुँ अतये आकुल ।।
पारिजात तरु समूले उपाड़ि । रोपन करब आतितुवा बाड़ि ।।
जब मोहि वाक्य नाहि पतिआया । कहलु सत्य सत्य सुनजाया ।।
अब तेजहु ताप राजकुमारि । न सहे हृदि दुख देखि तोहारि ।।
हामाकु सपत खेड़ लहु माथे । उठ उठ प्रिया तेरि धरोहुँ हाते ।।

सूत्रधार—ओहि बुलि, श्रीकृष्ण सत्यभामार हाथ धरिल ।

पयार

करे काकुत्ति नति जगतक ईश। रमनीक मने किछु मिलल हरिष ॥
परम ईश्वर कर कातर प्रियाक। देख अदभुत भकत्ति सती महिमाक ॥
ब्रह्मा महेस जाक करे सेवा। माथे खेड़ धरये सोहि देवा ॥
कृष्णक लीला बुझये न पारि। पुर्नकाम हरि कि करब नारि ॥
भकत्ति कयलि हरिक मन भोल। जानि करह नर हरि हरि बोल ।११।२६।

सूत्रधार तदनन्तर, सखि इन्दुमती बोलल।

इन्दुमती—हे प्रानसखि! परम ईश्वर तोहारि स्वामि, माथे खेड़ धरि अतये कातर करयिछे। आर कि मान साधिते रहल? सखि ताप तेजह। उठह, उठह।

सूत्रधार—देवी, स्वामीक अतये विनय बानी सुनिकहु, किंचित् चित्त शान्त भेल। श्रीकृष्ण ताहे देखि, आलिंगि कोले तोलि बैठावल; पीत वस्त्रे सरीरक धुलि झारल; केस बान्धल; निज हस्ते कर्पूर ताम्बुल भुंजावल।

श्लोकः

ततो देवी सत्यभामा कृष्ण वाक्यामृतेन सा।
प्रीता प्रसन्नवदना प्रणम्याह प्रियं हरिम् ॥१९॥३०॥

सूत्रधार—देवी स्वामीत महामान लभिये, अति प्रसन्नमुखी हुया, श्रीकृष्णक प्रनमि बोलल।

सत्यभामा—हे स्वामी! हामाक पारिजात तरु दिते तुहु सत्य कयल, जानि बिलम्ब छोड़ि एइ क्षणे आनिया देव। जावे पारिजात नाहि देखों, तावे बारि प्रवेशों नाहि। हामु सत्य कय बोललुँ।

कृष्ण—हे प्रिये, पापी नरकासुरे, देवतासबक जिनिये, सर्वस्व आनल। आगु, ताहेक मारि देवकार्य साधों। पाछु पारिजात आनो।

सत्यभामा—आः, स्वामी! उचित कहल। आगु देवकार्य साधि, सोहि जात्राये पारिजात आनह। हामु तोहारि संगे चलब।

कृष्ण—हे प्रिये! तुहुँ स्त्री जाति! युद्ध समये तोहारि गमन उचित न हे।

सत्यभामा—हे स्वामि! हामार बहुत सतिनी। इ बार पारिजात आनि कोन स्त्रीक देवब, ताहे बुझये नाहि। हामु कदाचितो तोहारि संग नाहि छोड़ब।

कृष्ण—हे प्रिये! तुहुँ यदि हामार संगे चलब, तब सत्वरे साजह।

श्लोकः

कृष्णमभ्येत्य भगवान् जगाद नारदस्तदा।
ज्ञातः किल भवान् भार्याभक्त्याऽसन्तोषी केशवः ॥२०॥३१॥

[तब नारद ने भगवान् कृष्ण के समीप जाकर कहा—भार्या-भक्ति-सन्तोषी केशव, जानते हो (देवलोक में) क्या हो रहा है।]

नारद—[सक्रोधमाह] हे कृष्ण ! जानल तुहु, स्त्रीक लाड़िका देव-कार्यसब परि रहल। तोहार भार्य्याक चाटु बुलिते सब दिवस गैल।

कृष्ण—हे मुनिराज ! स्त्रीक बुझबि से ना बुझे, कि करब ? कुमारीक हात एड़ाइते नाहि पारि। हे मुनिराज ! ए चलइछो। क्रोध नाहि करबि।

सूत्रधार—ओहि बोलि, श्रीकृष्ण अति सत्वरे जात्रा कय चलल।

श्लोकः

सहर्षमकरोत् कृष्णः प्रयाण प्रियया सह ।
धनुष्टङ्कार घोषेण दिशो दश प्रकम्पयन ॥२१॥३२॥

सूत्रधार—श्रीकृष्ण धनुःटंकारे दशो दिश कम्पाइ, प्रिया सहित जैसे सहर्षे पयान कयल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—धनश्री—एकताल

कयलि पयान यदुराइ। करे सारंग, संगे प्रिया चलि जाइ ॥ध्रु०॥
श्यामल अङ्ग सुरङ्ग पीत बासा। बिजुरि उजोर नव घन परकासा ॥
अरुन चरन मंजीर करु रोल। ताहे मजोक मन शंकर बोल ॥१२॥३३॥

सूत्रधार—श्रीकृष्ण ओहि परकारे, प्रिया सहित, पयाने चलैछे। से समये नारदे आसि बोलल।

नारद—हे हरे ! तुहुँ सम स्त्रीजित पुरुष कब्रहु नाहि देखलु। युद्ध समये स्त्रीक छोड़ये नाहि पारह। तुहुँ जगत गुरु ! तोहाक जस गाइ, तिनि लोकक बेड़ाओं। आः, हामाक लाज भेल।

कृष्ण—हे मुनिराज ! कि करब ? पारिजातक निमित्त, सत्यभामा प्रान छाड़य। उनिकर निर्वन्ध कत सहबो ?

नारद—हे कृष्ण ! कामातुर पुरुषक ऐसन अवस्था। स्त्री जे आज्ञा करे, से अवश्य करिते लागे। से होक। से कामरूप नारकासुरक पाट, ओहि द्वारकाहन्ते स्वभावे मास चारिक पथ। स्त्री लैया जाइते वत्सर दुइ चारि पावब। आः, देवकार्य भल्ल सत्वर साधल। एक कर्म करह। तोहाक वाहन गरुड़ पाखीराज, ताहेक आज्ञा करह। ताहेर कान्धे चड़िये, सत्वरे गिया नरकासुरक मारह।

कृष्ण—[सत्यभामाक प्रति] आहे प्रिये ! मुनि भल्ल कहल।

सत्यभामा—हे स्वामी ! हामि तो पावे हान्ठिते पारये नाहि।

कृष्ण—[वाहनक स्मरि] आहे गरुड़ पक्षिराज ! सत्वरे आव, सत्वरे आव।

श्लोकः

आह आगत्य गरुड़ो नत्वा कृष्णं कृताञ्जलि ।
मम स्कन्धं समारुह्य जहि पापं दुराशयम् ॥२२॥३४॥

गरुड़—हे स्वामि ! हामु थाकिते तुहु पावे बेड़ावब । आः, हामारा कन्धे चड़ि, पापी नरकासुरक बध करो गिया ।

सूत्रधार—तदनन्तर, श्रीकृष्ण सभार्ये गरुड़ कन्धे चढ़ि परम लीलाये चललि ।

श्लोकः

प्राग्ज्योतिषं सोऽति जवेन जायया । सुपर्णमारुह्य ययौ जनार्दनः ॥
क्षणेन सम्प्राप्य पुरं परेशो । महोत्सवं शंखरवं चकारः ॥२३॥३५॥

[भगवान् कृष्ण ने सत्यभामा सहित गरुड़ पर सवार हो अति वेग से क्षण भर में प्राग्ज्योतिषपुर पहुँच कर उच्च स्वर से शंखध्वनि की ।]

सूत्रधार—श्रीकृष्ण गरुड़ बाहने वायु बेगे कामरूप पाइ, पांचजन्य-ध्वनि कयल। ताहे सुनि नरकासुर खेदि आवल । श्रीकृष्ण ताहे जैसे बध कयल, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—कान्हड़ा

चललि गोविन्द गरुड़ कन्धै । नरक मारिते कयलि प्रबन्धे ॥
वायुक वेगे चललि पक्षीराज । तिल एके मिलिल कामरूप राज ॥
फुँकल संख हरि बारे बारे । सुनि शत्रुक भेल हृदय बिदारे ॥
जानलि आवल माधव धाइ । गरजे दानव युद्धक लाइ ॥
समरक साजि बजावय ढोल । घर धर मार मार करे बहु रोल ॥
धावे मुर नरकासुर रागि । खाण्डा फिकावय कृष्णक लागि ॥
हरि टंकारल सारंग भिड़ि । बरिषल बान दैत्यकहो पीड़ि ॥
काटल काहु कन्ध कर सिर । मारल हरि सब दानव वीर ॥
पेखि पलावत दानव असुर । बान प्रहारिवे मोरल सुर ॥
कोपे चक्र खेपि जगन्नाथ । काटल दारुण नरकर माथ ॥
देखि देवक उत्सुक बहुल । बाजे दुन्दुभि बरिषय फूल ॥
जय जय यादव करे बहु रोल । सामाजिक सब हरि हरि बोल ॥१३॥३६॥

सूत्रधार—से असुर नरकक मारिकहु, श्रीकृष्ण यश साधल । देखि, देव सब आनन्दे दुन्दुभि बजाइ, जय कृष्ण बोलि, सिरे कुसुम वरिखल । श्रीकृष्ण सभार्ये आनन्दे रहल ।

श्लोकः

ततो वसुमती पुत्रं पुरः संस्थाप्य आत्मजम् ।
विलपन्ति तदा कृष्णं नत्वा प्रोवाच दुःखिता ।।२४।।३७।।

[तदुपरान्त (नरकासुर-बध के उपरान्त) नरकासुर की माता दुखी वसुमती पौत्र (भगदत्त) को आगे कर कृष्ण को प्रणाम करके विलाप करती हुई बोली ।]

सूत्रधार नरक पुत्र बध भेल देखि, वसुमती परम सन्तापे, ताहेक पुत्र भगदत्त शिशुक आगु करिकहौं, कृष्ण दरसन निमित्त जैसे चललि, आहे लोक, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग—धनश्री—एकताल

पियुक समीप चले माइ ।
हरि दरसने चले जाइ, शिशु समे बसुमती लहु लहु गति धाइ ।।ध्रु०।।
सुतक सन्तापे तापे तनु भेल ह्रासा । लोतके लेपित मुख फोकारे निश्वासा ।।
स्वामीक करू पावे परि परनाम । कहतु शंकर गति मेरि राम ।।१४।।३८।।

सूत्रधार—ऐसन शिशुसमे वसुमती आसिकहु, श्रीकृष्णक परिपरिमामि; कर जुड़ि बोलल ।

वसुमती—हे स्वामी श्रीकृष्ण ! कोटि कोटि ब्रह्माण्डेश्वर, परमपुरुष पुरुषोत्तम, तुहुँ जगतगुरु । तोहाक द्रोह करि, पापी पुत्र नरक निज पापये नास भेल । ताहे पुत्र, ओहि शिशु भगदत्त, नातिक तोहार पावे समर्पल । आहेक रक्षा करह । हामार संतति रहोक । तोहारि चरण-पंकजे कातर कये, अतए प्रसाद माँगु गोसाइं ।

सूत्रधार—ओहि बोलि वसुमती, बहुत बिलाप श्रीकृष्णक आगु कयल । ऐसन कारूणिक वाणी सुनि, नारायण वसुमतीक आश्वास कय बोलल ।

कृष्ण—आहे वसुमती, तोहों ताप तेजह । तोहारि पुत्र नरकासुर भूमिक भार भेलि, से निमित्तो इहाक मारि, तोहारि भार दूर कयलुं । तोहारि बचने ओहि भगदत्त शिशुक कामरूप पाटे राजा पातब । तुहों चिन्ता नाहि करबि ।

सूत्रधार—ओहि बुलि, श्रीकृष्ण वसुमतीक आलिंगि, आश्वासिये अन्तःपुरे प्रवेसिकहों भगदत्तक राज्य-अभिषेक कयल । षोड़श हाजार कन्या ताहे बारीत पाइ द्वारकापुर पठावल । अदितिक कुण्डल, वरूणक छत्र, मणि-पर्वत लया गरूड़क कन्वे, सत्यभामा समे स्वर्गक कौतुके चलल ।

श्लोकः

अतः स्वर्गस्य निकटं दृष्ट्वा कृष्णो मुदायुतः ।
दध्मौ शङ्खं पाञ्चजन्यं हर्षयन् दिवि देवताः ।।२५।।३९।।

[तदुपरान्त प्रसन्न चित्त श्रीकृष्ण ने स्वर्ग को समीप देख स्वर्गस्थ देवों को प्रसन्न करते हुए पांचजन्य शंख को निनादित किया ।]

सूत्रधार—असुर नरकासुर मारि, श्रीकृष्ण स्वर्ग समीप पाइ, परमानन्दे संख-ध्वनि कयल । ध्वनि सुनि जानल, देवतासब बोलल ।

देवतासब—अः हामारि स्वर्गक लागि, श्रीकृष्ण आवल ।

सूत्रधार परम हरिषे, जय जय बोलि, दुन्दुभि बजाइ, सिरे कुसुम बरिषल। ताहे पेखि, सत्यभामा पियुत पुछत ।

सत्यभामा—आहे स्वामि ! ओहि कौन स्थान हामु पावलुँ ? जे दुन्दुभि बजाइ कुसुम बरिखे । ए सब के हामाकु परिचय कराव ।

श्लोकः

कृष्णः प्राह प्रियां पश्येमाममरावतीम् देवि ।
आगता देवता एते त्वां मां देवि दिदृक्षया ।।२६।।४०।।

[कृष्ण ने प्रिया सत्यभामा से कहा—'देवि, इस अमरावती पुरी को देखो । ये देवता गण हमलोगों को देखने के लिए आये हैं ।]

कृष्ण—हे देवि ! तुहुँ नाहि जानह! ओहि अमरावती पुरी। एहि देवतासब हामाक देखिते आवल । देखो, ओहि ऐरावत कन्धे बासव थिक । उनिकर महादेवी ओहि शची । ए सब दिगपाल, सिद्ध, विद्याधर ।

सत्यभामा—हे स्वामि ! जे बिमानक उपरे प्रकाश करिछे, ओहि कोन वृक्ष ?

कृष्ण—प्रिये ! नाहि जानह, जाहेर निमित्त मानिनी हैछं, से पारिजात तरु ओहि।

सत्यभामा—अः, हामाक मनोरथ साफल भेल । ओहि पारिजात-पुष्प धरिये, सतनीसबक माजे, लास बेस करि बेड़ावत्र । हे स्वामि ! सत्वर करू ।

श्लोकः

ततोऽति कौतुकंदृष्ट्वा इन्द्र आगत्य सादरम् ।
दौर्भ्यां देवं परिष्वज्य जगाद मधुरं वचः ।।२७।।४१।।

[तभी इन्द्र आकर अत्यन्त कौतूहल से देख, कृष्ण को दोनों भुजाओं से आलिंगित कर सादर मधुर वचन बोले ।]

सूत्रधार—तदनन्तर इन्द्र आसिकहु, गौरवे कृष्णक धरल। शची सत्यभामाक आलिंगि सतकार कयल।

इन्द्र—हे श्रीकृष्ण ! पापी नरकासुरक मारि हामाक कृतार्थ कयल। बारम्बार तुहुँ उद्धार करह। तोहाक गुण सुझावे नाहि पारि।

सूत्रधार—ओहि बोलि प्रेमे लोतक झुरावे। इन्द्र मौने रहल।

श्लोकः

अदितिमातरं पश्चात् सभार्य्यो: जगदीश्वर: ।
प्रणम्य देवमात्रेऽदादमृत-स्रावि-कुण्डलम् ।।२८।।४२।।

[तत्पश्चात् सत्यभामा सहित कृष्ण-ने (देवमाता) अदिति को प्रणाम कर देवमाता को अमृतस्रावी दो कुण्डल दिये।]

सूत्रधार—तदनन्तर श्रीकृष्ण इन्द्र सहित अदिति माताक प्रणाम कयकहुँ अमृत कुण्डल दोहों निवेदल। शची सहित सत्यभामा आदिति सासुक जानि परि प्रणाम कयल।

श्लोकः

ततः सा देवजननी कृष्णं मत्वा महेश्वरम् ।
वद्धाञ्जलिर्जगन्नाथं स्तोतुं देवी मनोदधे ।।२९।।४३।।

[तदुपरान्त देवमाता अदिति कृष्ण को महेश्वर जगन्नाथ मानकर करबद्ध स्तुति करने लगी।]

सूत्रधार—अदिति श्रीकृष्ण परम ईश्वर जानिये, जैसे तुति आरम्भल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

पयार

जय जय जगत निवासा। जय जय असुर बिनासा।।
जय छेदक भव पासा। जय तारक निज दासा।।

जय जय ईश्वर मुरारी। जय जय असुर-संहारी।।
जय जय शारंगधारी। जय जय ब्रह्म अधिकारी।।

जय जय जगतक धाता। जय जय पातक घाता।।
जय जय भृत्यक त्राता। जय जय मुकुति-दाता।।

जय जय यादव रामा। जय जलधर तनु स्यामा।।
जय जय पूरक मनकाम। भव भय तारक नाम।।

करू करूणा यदुराइ। लेलौं शरण तुया पाइ ॥
परम पुरूष करू त्राना। तुया बिने गति नहि आना ॥
भव बन्धन छोड़लु मेरि। करु तुहों तुति कर जोरि ॥
कयलि परि परनाम। सबहिं बोलहु राम राम ॥१५॥४४॥

श्लोकः

आदित्या ईश्वर-ज्ञान निगम्य मधुसूदनः।
मोहनार्थं निजमायां ततान जनमोहिनीम् ॥३०॥४५॥

[मधुसूदन (कृष्ण) ने अदिति के ईश्वर-ज्ञान को सुन कर उन्हें मोहित करने के लिए जनमोहिनी (वैष्णवी) माया का विस्तार किया।]

सूत्रधार—तदनन्तर अदितिक ईश्वर-ज्ञान देखिये, वैंष्णवी माया विस्तारि अदितिक मन मोहित करिये, श्रीकृष्ण करजोरि प्रनाम कय बोलल।

कृष्ण—हे माता, तुहुँ हामार परम देवता। हामाक सर्वदा आशीर्वाद करह।

सूत्रधार—अदिति सुनिकहुँ, सकरूण चित्ते, कृष्णक गले धरिकहुँ, बोलिते लागल।

अदिति—हे पुता, तुहुँ चिरंजीव हव। हामाक बरदाने देवे असुरे, तोहाक जितये नाहि पारब।

सूत्रधार—तदनन्तर श्रीकृष्ण देवित विदाय कयल। वरूनक छत्र, मणि पर्वत इन्द्रक हाते समर्पल। देवतासबत बिदाय करिकहों, नारद सहिते सभार्ये, परिवर्त्ति जैसे चलल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—गौरी—ताल ज्योति

लीला गति जाइ, भुवन भुलाइ
मधुर मुरत्ति मुरारि; लयलासे चले रंगे संगहि बर नारि ॥ध्रु०॥
उरे बनमाला मानिक मनि, बयन ईसत हासा।
नव जलधर शोभित तनु, पीत अम्बरू भासा ॥
पद-पंकज मंजीर लोले, पल्लव परकासा।
भकनि मुकुति हेतु लयो अवतार, कहतु केशवदासा ॥१६॥४६॥

सूत्रधार—ऐसन मधुर मुरुति श्रीकृष्ण, परम लीलागति, स्वर्गवासीक मन मोहि कौतुके चलल। तदनन्तर जे कथा भेल, ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

श्लोकः

धृत्वा वस्त्रे पतिं प्राह सती रौषसमन्विता।
क्व यासि पारिजातं त्वं नानीय मधुसूदन ॥३१॥४७॥

[सती सत्यभामा ने क्रोधित हो पति के वस्त्रों को पकड़ कर कहा—'हे मधुसूदन, पारिजात को लिये बिना आप कहाँ जा रहे हैं ?]

सूत्रधार—तदनन्तर देवि सत्यभामा, कृष्णक पीत वस्त्रे धरिकहों महा क्रोध हया बोलल ।

सत्यभामा—हे स्वामि ! तुहु भल्ल सत्य कयल । पारिजात नाहि लैया, तुहुँ काहाँ जाव ? तोहाक चित्त बुझये नाहि ।

कृष्ण—हे प्रिये, हामु भुललो; दोष नाहि धरबि । [नारदक बोलल] हे ऋषिराज ! तुहो सत्वरे जाव । इन्द्रक खोजि, परिजात वृक्ष, प्रियाक निमित्त सत्वरे आन गिया ।

सूत्रधार—श्रीकृष्ण वाणी सुनि नारद चलि गिया, इन्द्रक बोलल ।

नारद—हे देवराज, श्रीकृष्ण तोहात पारिजात खोजल । सत्यभामाक निमित्त जानि, सत्वर दिया पठाव ।

सूत्रधार—नारदक वाणी सुनि, परम क्रोध हया, शची उत्तर देलह ।

शची—अः, अभाग्य कपाल । इन्द्राणी शचीक पारिजात कथाक मानुषी सत्यभामा पिन्धिते आशा कयल । ऋषिराज बोल गिया, जबे अनेक पुण्य कयकहुँ अम्रावतीक अधिकारिणी हय, तबे पारिजात परिधान करिते पांवे । हामार पारिजात इन्द्रे दिते पारये नाहि ।

इन्द्र—हे ऋषिराज, देवस्त्रीक पारिजात किमते दिते पारि । स्त्रीक कथा कृष्णते विदित, बोल गिया ऋषिराज ।

श्लोकः

नारदस्तु ततोऽभ्येत्य भगवानाह केशवम् ।
इन्द्राण्या वर्णितं तत् कृष्णे सर्व्वमवर्णयत् ।।३२।।४८।।

[नारद ने कृष्ण के समीप आकर इन्द्राणी के सम्पूर्ण कथन को उन्हें सुना दिया ।]

सूत्रधार तदनन्तर नारद परवर्ति आसिकहुँ, शची जे बोलल, कृष्ण-सत्यभामाक आगु कहल ।

नारद—हे कृष्ण ! पारिजातक निमित्त तुहुँ पठावल । हामु बड़ि लाज भेलों । सत्यभामाक बहुत गालि परावल मात्र । पारिजातक नाम सुनि, शची क्रोधे बोलल—अः कथाक मानुषी सत्यभामा शचीक पारिजात पिन्धिते इच्छा कयल । अभाग्य कपाल; जब तप-जप आचरि जन्मान्तरे अम्रावतीक अधिकारिणी हय, तब पारिजात पावब, बोल गिया । हे कृष्ण ! देविक धिकार सुनिये हृदय दहे । हा हा कि भेलि ?

सूत्रधार—ताहे सुनि, सत्यभामा कोपे कम्पमान हया बोलल ।

सत्यभामा—हे स्वामि ! हामाक कदर्थिते तोहों आनल ? दानवक वेटी शचीक चाटु कय पारिजात नेवब । आः तव धिकार होक । हे प्राणनाथ ! काहेक भय थिक ? सत्वरे पारिजात आनगिया ।

नारद—अः, देवी भल्ल कहल । श्रीकृष्ण सत्वर पारिजात आनह ।

श्लोकः

निशम्य सत्यभामायाः वचनं कंजलोचनः ।
जहार सहसा गत्वा पारिजाततरू हरिः ॥३३॥४६॥

[कमल-नयन श्रीकृष्ण ने सत्यभामा के वचन को सुनकर शीघ्र ही पारिजात वृक्ष का हरण कर लिया ।]

सूत्रधार—तदनन्तर, श्रीकृष्ण प्रियाक वाक्य सुनि, ततकाल पारिजातक समीप चापि समूले उपारि आनल । पेखि, राखीयासब कोलाहल कये बोलल ।

राखीयासब—हे कृष्ण ! शचीक पारिजात निते तोहाक कौन व्यवहार ?

सत्यभामा—अये राखीयासब, तोहाक शचीक कह गिया, सत्यभामा पारिजात निया जाइ । अब जत सकति थिक, राखोक आसिया ।

सूत्रधार—से सुनि, राखीयासब इन्द्र-शचीक प्रणामि, कहल ।

राखीयासब—हे माता शची, तोहारि पारिजाततरु सत्यभामा वराइ करिते, स्वामीक हाते हरि निया जाइ । जानि जे जुवाइ, ता करह ।

श्लोकः

पारिजातस्य हरणं निशम्य कुपिता शची ।
पतिं पुरन्दरं प्राह धिग् जन्म तव वज्रिणः ॥३४॥५०॥

[पारिजात-हरण सुन कुपित शची ने पति से कहा—हे वज्रधारी, तुम्हारे जन्म को धिक्कार है ।]

सूत्रधार—पारिजात-हरण सुनि, शची कोपे पुरन्दरक बोलल ।

शची—हे स्वामि ! तुहुँ विद्यमान थाकिते, हामाक पारिजात मानुषी निया जाइ । अः, तोहाक धिक्कार थिक । वज्र को धिक्कार रहोक ।

सूत्रधार—ओहि बुलि, शची इन्द्रक आगु बहुत विलाप कयल । तवे इन्द्र बोलल ।

इन्द्र—हे प्रिये ! दुख छोड़ह । हामाक आगु कृष्ण कौन हय ? ताहेक जिनि पारिजात एखने आनब । चिन्ता नाहि करबि ।

सूत्रधार—ओहि बुलि, इन्द्र परम प्रारम्भ साजि, धनु-शर धरिकहुँ देवसब सहित, शची समन्विते, ऐरावत कन्धे, खेदि आवल ।

श्लोकः

गत्वा सत्राजितसुां प्रोवाच कुपिता शची।
नेष्यामि त्वं पारिजातं किं नु वज्रधरे स्थिते ॥३५॥५१॥

[कुपिता शची सत्यभामा के पास जाकर बोली—मैं इस पारिजात को ले जाऊँगी। (अन्यथा) वज्रधर के रहने से क्या ?]

शची - अये सत्राजितक कुमारी, तुहुँ मानुषी हुया हामार पारिजात निया जाय ! अः तोहाक अभाग्य मिलिल ! जब वज्रधरक हाते सवंशे नाहि मारब, तब सत्वरे पारिजात छोड़ह !

सूत्रधार—ओहि बोलि, जैसे गरजल, ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—आसावरी—खरमान

मानुषी साहस ऐसन तोहारि। हरलि कुसुम हामारि ॥ध्रु०॥
स्वामि पुरन्दर वीर वज्र-धर, आवत दैत्य-अन्तकारि।
पारिजात तरु छोड़ह मोरा, राखहु जीवन कुमारि ॥
तोहारि स्वामि माधव मानुष, कयलि गरब ताहे लाइ।
बासव आगे सोहि कौन होइ, करु शची ऐसन बड़ाइ ॥१७॥५२॥

शची—अये सत्यभामा ! तोहारि स्वामि माधवक कथा हामु सब जानि। ओहि गोपीबिटाल गोपाल। उनिकर आगु गोकुलक स्त्री नाहि रहल। देखौ, कंसक दासी कुब्जी, ताहेक हात एड़ावल नाहि। ताहेक आर कि कहब ? ऐसन अनाचारी कृष्णत गर्व करेकहों, हामाक पारिजात निया जाय। अः, वज्रधरत सवंशे नाश भेलि जानव।

श्लोकः

निशम्य गर्ववाक्यं सा सत्यभामा हरि प्रिया।
कोपेन कम्पितवती शचीमाभाष्य वल्गति ॥३६॥५३॥

[शची की गर्वोक्ति सुन कर हरिप्रिया सत्यभामा क्रोध से कम्पमान हो उससे कहने लगी।]

सत्यभामा —अये इन्द्रानी, जगतक परमगुरु हामारि स्वामी; जाहेर नाम सुमरिते महा महा पापी सबो संसार निरन्तरे, ताहेक अतये निन्दा करह। अये निलाजिनी, मरिते ना जाव। तोहारि स्वामि इन्द्रक कथा कहिते घृना से उपजे। देखो, अमरावतीक जत नटी, तोहाक स्वामीक से नाहि आटल। तोहारि स्वामी कयलि कि ? गौतम ऋषिक, से भार्या अहल्या, ताहेक माया करिकहुँ अति भ्रष्ट कयल। तन्निमित्ते सब शरीरे ढाकि योनिडाक भेल। अये पामरी, ऐसन इन्द्रक हामाकु आगु बखानह।

सूत्रधार—ओहि बोलि, सत्यभामा जैसे बलगल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—वेलोवार—खरमान

पामरी हरि को करसि बड़ाइ।
आजु चरण-पंकज-रज परसि, गारि देसि कति लाइ ॥ध्रु०॥
ओहि जगतगुरू ब्रह्मा रूद्र करू, परि परनाम जाहारि।
कैसे दासी शची ऐसे स्वामीक करू, कन्दल बयन नेहारि॥
जाहेर नाम गुन गाइ पापी तरे, भकति मुकुति मिलावे।
ऐसे गोविन्दक निन्दस पामरी, शंकर कह हरि पावे ॥१८॥५४॥

सत्यभामा—अये दानवक बेटी इन्द्राणी, हामुक आगु तोहरि अतये बड़ाइ। हामु परम दर्प कयकहुँ तोहारि पारिजात आनलुँ। देखु अब तोहाक स्वामी पुरन्दरक जत सकति थिक, युद्ध कय, हामार हातक परिजातक नियक देखि। तब सफल बड़ाइ कयलि।

सूत्रधार—देवी सत्यभामाक अतये विकर्थना वाणो सुनि, शची कोपे, अपमाने इन्द्रक बोलल।

शची—हे स्वामि देवराज! तोहाक जीवन धिक धिक। मानुषी स्त्रीक अतये कदर्थना सुनि रहैछै। छिः तोहात पुरुष तेज किछो नाहि। अः देवताक इन्द्र मिछो घोलावसि।

श्लोकः

ततो पुरन्दरो देव्याः पीड़ितो वाक्यसायकैः।
क्रोधेन धनुरादाय युद्धाय सम्मुखोऽभवत् ॥३७॥५५॥

[तदनन्तर शची के वाक्य-वाण से पीड़ित हो पुरन्दर क्रोधपूर्वक धनुष उठाकर युद्ध के लिए कृष्ण के सम्मुख आये।]

सूत्रधार—तदनन्तर पुरन्दर वाक्य-शरे पीड़ित हया, शचीक गरिहा सुनिकहो, परम क्रोधे धनु धरि, युद्ध करिते, कृष्णक सम्मुख भेलह। देखि, सारंग टंकारि, श्रीकृष्ण गरुड़क कन्धे, इन्द्रक सम्मुख हुइ रहल। ताहे देखि पुरन्दर दर्पे बोलल।

इन्द्र—अये यादव, शचीक पारिजात कैसे निया जाय? ओहि तीक्ष्णतर शरे, तोहारि प्राण छोड़ावब। हामाकु आगु काहा जावब।

सूत्रधार—ऐसन प्रकारे बहुत बलगल। दिन्य वाण हानि, जैसे दामोदर पुरुन्दर, दुहुँ महायुद्ध कयल, आहे लोक, ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग–तुर—परिताल

गरजे वासव वाण प्रहारे । आजु जीव लेहुँ तोहारि रे ॥ध्रु०॥
पेखि ताहे हरि, करे शारंग धरि, करू शर सत्वर मुरारि रे ॥
छेदि वाणसब हरिलि चेतन, इन्द्रक हृदये विदारि रे ॥

सूत्रधार—कृष्णक वाण प्रहारे, मूर्च्छित होइ, पुनः चेतन पाइ इन्द्र बोलल ।

इन्द्र—अये श्रीकृष्ण, पारिजात छोड़ह । न हे उहि वज्र सन्धाने तोहारि प्राण लओं ।

कृष्ण—ऐये दुष्ट देवराज, हामाक भीति देखाव । जत सकति थिक, प्रहारि देख ।

सूत्रधार—सुनि, इन्द्र वज्र धरिये, पुनु स्वस्थ हुया, कृष्णक हानल । श्रीकृष्ण हासि-हासि लुम्फि धरल, ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

स्वस्थ कलेवर, पुनु पुरन्दर, धरल वज्र वीर तोलि ।
हानल सन्धाने, वाण अबलेलहुँ, रह रह जादव बोलि ॥१९॥५६॥

सूत्रधार—वाण युद्धे न पारि पुरन्दर, परम आटोपे कोपे, श्रीकृष्णक वज्र प्रहारल । हरि हासि-हासि वज्रक लुम्फि धरल ।

श्लोकः

ततः कृष्णो रूषा चक्रं शक्रं प्रति गृहीतवान् ।
इन्द्रो भीत्याभ्यद्रवितः साटोपश्च दिशं ययौ ॥३८॥५७॥

[कृष्ण ने क्रोधपूर्वक इन्द्र के प्रति चक्र उठाया जिससे इन्द्र भयभीत हो मिथ्याभिमान के साथ एक ओर चला गया ।]

कृष्ण—अये दुष्ट देवराज, देखो तोहारि प्रहार हामु सहल । अब हामार प्रहार सम्बरह ।

सूत्रधार—ओहि बोलि परम प्रारम्भे, इन्द्रक लागि चक्र तुलि धरल । ताहे पेखि इन्द्रक हृदय कम्प लागल । हात-पाव थिर नोहे । महाभये हस्ति छाड़ि पलावल । ताहे देखि श्रीकृष्ण हासि-हासि पाछु-पाछु इन्द्रक खेदल । ताहे देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग–कान्हड़ा—परिताल

प्राणर कातरे इन्द्र पलाइ । पाछु-पाछु हासि माधवे धाइ ॥ध्रु०॥
रे रे पुरन्दर डाकय मुरारि । रह रह काहे पलाव वज्रधारी ॥
लवरे बासब पाछु न चावे । कृष्णक किंकर शंकरे गावे ॥२०॥५८॥

सूत्रधार—रह रह इन्द्र, बोलि डाकि, श्रीकृष्ण पाछु-पाछु जाइ, तथापि इन्द्र बिभंगे पलाइ, रहये नाहि। ताहे पेखि सत्यभामा देवी कदर्थना करिकहों हासि बोलल।

सत्यभामा—आहे पुरन्दर, तुहुँ कि निमित्ते पलावल। देवक राजा हुया मानुष कृष्णक भये भंग देहल, उचित नो हे। तोहारि आगु पारिजातक मंजीर परिधान कये शची लास-बेस करि बेड़ावे। तुहुँ वज्रधर वीर, अब कैसे पलावे, लाजक पीठि देलह। अये पामरी शची, ओहि इन्द्रक देखाइ, अतये दरप कयलि। अब तोहारि भतारक कैसे नाहि पालटाव। हामु मानुषी हया, तोहारि पारिजात निया जाउ। ओहि तापे मरिते न जाव।

श्लोकः

ततो पुरन्दरो निन्दां देव्याः श्रुत्वातिदुस्सहाम्।
निवर्त्योवाच वचनं सत्यभामे निबोधमे ॥३६॥५९॥

[तदुपरान्त इन्द्र ने सत्यभामा के दुस्सह निन्दापूर्ण वचन सुन पुनः लौटकर सत्यभामा से कहा कि सुनो।]

सूत्रधार—तदनन्तर, देवीक निन्दावाणी सुनिये, इन्द्र परिवर्त्ति बोलल।

इन्द्र—अये सत्यभामे, ओहि श्रीकृष्ण जत पतनी थिक, ताहेक मध्ये तुहुँ बड़ि प्रचन्ड प्रगल्भा, इहा हामु जानलुँ। कि निमित्त हामाक अतये कदर्थना करइछे। देखु, ओहि कोटि-कोटि ब्रह्माण्डेश्वर, ब्रह्मा महेशे सेवित पादपंकज, जगतक परमगुरू नारायण श्रीकृष्ण, ताहेत हामु युद्ध हारलुं। इहात कोन लाज थिक। तुहुँ स्त्री जाति किछो बुझवे नाहि। हामाक मिछा बलगह।

सूत्रधार—ओहि बोलि इन्द्र आपोनाक गरिहा कयल।

इन्द्र—हा हा हामो पापी माया-मोहित हुया, परम ईश्वरक युद्ध कयलों। हामाक धिक्कार होक।

सूत्रधार—ओहि बोलि भये कम्पित तनु, त्राहि-त्राहि बोलि, कर जोरि कृष्णक आगु दण्डवतै परि परिनामि, तुति बोलल।

भटिमा

जय जय जादव देव मुरारी। जय जय केसि कंस अन्तकारी॥
जय जय गिरि गोवर्धनधारी। जय जय भकत-भीति-भयहारी॥
जय जय मर्दित विषधर काली। जय जय बामन बलिक निकाली॥
जय जय निर्जित कपिवर बालि। जय जय वासुदेव वनमाली॥
जय जय तोहों त्रिभुवन अनुपाम। जय जय निज जन पूरन काम॥
जय जय मुष्टिक मोड़ल राम! जय जय पातक-तारक नाम॥

तोहारि माया मोहित अन्ध। कयलुँ युद्ध हामो महा मन्द॥
अत अपराध सहब हरि मोइ। चरने सरन लेलों अब तोइ॥
ओहि इन्द्र पद आपद भार। दूर करू हरि कुमति हामार॥
माँगब भिक्षा परिधान कय कन्था। धरवहों तोहारि भकति पन्था॥
जय जय जगत जनक तुहु धाता। जय जय जीवक विविध विधाता॥
जय जय घोर नरक तुहों त्राता। जय जय भकत अभय बरदाता॥२१।६०॥

सूत्रधार—ओहि तुति करिये, पुरन्दर परम वैराग्य कृष्णक आगु परि, बहुत विलाप कयल।

श्लोकः

दृष्टवा कृष्णो विहस्याह तस्य तन्निर्म्मलं मनः।
सन्तुष्यसि यतोदेव ज्येष्ठ भ्राता भवान् मम॥४०॥६१॥

[इन्द्र के निर्मल मन को देखकर कृष्ण ने हँसते हुए कहा—हे देव आप प्रसन्न हो, अतः आप मेरे ज्येष्ठ भ्राता हैं।]

सूत्रधार—तदनन्तर इन्द्रक भीति कातर देखिये श्रीकृष्ण हासि-हासि हाते धरिकहो, तोलि आश्वासि बोलल।

कृष्ण—हे पुरन्दर, तुहु हामार ज्येष्ठ भ्राता। तोहारि दोष हामु किछु धरबे नाहि। किछु शंका नाहि करबि। धरू तोहाक वज्र लेहु। ओहि पारिजात यदि सुखे नाहि देव, तब इहाक न निया जाव।

सूत्रधार सुनि सत्यभामा, कोप-कटाक्षे निरेखि, कृष्णक, दसन चर्बि, मने गरिहय।

सत्यभामा—हा हा कि भेल स्वामीक मति। ओहि इन्द्रक चाटु सुनल। आर बार नरक-बध निमित्ते कत कातर कये आनि, कार्य सिद्ध भेल देखि हामाक युद्ध भेजावल। उनिकर बचने संजात थिक। अः हामार पारिजात दिते कौन अधिकारी रहे।

इन्द्र—हे स्वामी कृष्ण। ओहि पारिजात तुहों निया जाव। सुधर्मा सभा सहित जत सम्पत्ति हामाक थिक, सब द्वारकाक लागि पठाओं। जावत तुहुँ भूमित रहब, तावत तोहारि उपयोग हया रहोक।

श्लोकः

इन्द्रस्य वचनं श्रुत्वा प्रीतः पीताम्बरो ययौ।
पारिजातं तदादाय तमनुज्ञाप्य भार्यया॥४१॥६२॥

[इन्द्र की बातें सुन कृष्ण प्रसन्न हो इन्द्र की अनुमति से पारिजात तरू लेकर सत्यभामा सहित (द्वारका को) लौट आये।]

सूत्रधार—इन्द्रक सम्मान सुनि, श्रीकृष्ण भार्या सहित, हरिसे पुरन्दरक अनुमति पाइ, जैसे पारिजात लैया, कौतुके केशव चललि, आहे लोक, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल।

गीत

राग—वेलोवार—परिताल

पारिजात लैया चलल लयलासे, हासे हरिषे वर नारी।
मत्त गज गामिनी कामिनी संगे, भोले चललि मुरारी ।।ध्रु०।।
श्याम मुरुति रतन उरे माला, मानिक मंजीर जुरावे।
प्रिया समे चले रंगे तरुनि करिनी सँगे, मातंग जैसे लीलाये ।।
मकर कुण्डल गण्ड डोलि विराजति राजीवलोचन स्वामि।
कृष्ण-किंकर कहय हरि को चरणे परि परिनामि ।।२२।।६३।।

सूत्रधार—तदनन्तर, देवी सत्यभामा सहित, लीलाये कौतुक केलि कय, श्रीकृष्ण द्वारकापुर प्रवेस भेल। कृष्णक विजय सुनिये, द्वारकात महामहोत्सव मिलल। ठाम-ठाम जय-वाजन बजावल। स्वामी युद्ध जिनि आवे सुनि, रुक्मिनी सखीसब सहित आसिकहु, सपटे परनाम कयलि। कृष्ण आलिंगये आश्वासल। रुक्मिनी सखी समें कृष्णक एकपासे रहल। सत्यभामा गर्व कयकहुँ, रुक्मिनीक बोलल।

सत्यभामा—हे विदर्भ राजकुमारि, तोहों स्वामीक ठामे, गोटा एक पारिजात पुष्प पावल। देखु-देखु, यावत सोहि पारिजात तरु समूले उपारि कृष्णक हाते नाहि आनल तावत छाड़लों नाहि। हामार सौभाग्यिक महिमा पेखो पेखो।

श्लोकः

निशम्य सत्यभामायाः भावं भीष्मकनन्दिनी।
प्रोवाच भक्तेर्म्माहात्म्यं वर्णयन् रुचिराननी ।।४२।।६४।।

[सुन्दर मुखवाली रुक्मिणी सत्यभामा की गर्वोक्ति सुनकर (श्रीकृष्ण की) भक्ति-माहात्म्य का वर्णन करती हुई बोली।]

सूत्रधार—सत्यभामाक गर्वभाव सुनि रुक्मिणी हासि बोलल।

रुक्मिणी—अये भगिनी सत्यभामा, कि कहैछ। जगतक परमगुरु स्वामी श्रीकृष्ण, उनिकर चरण-सेवा करिते, ब्रह्माण्ड भितरे कोन वस्तु दुर्लभ थिक। धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष, चारि पदारथ हाते मिलात्रे। तोहारि पारिजात कोन कथा ?

सूत्रधार—ऐसन भकतिक महिमा कहिते, रुक्मिनी प्रेम परसल। हरि चरणक सेवा जैसे वणविल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल।

गीत

राग—वसंत--परिताल

अतये कैसे कहसि माइ। हरिक भकति सति कौन नि मिलाइ ॥ध्रु०॥
ओहि अरुण पद-पंकज धियाइ। मिले मनोरथ चारि पद-रज पाइ॥
पापी पातेक तरे नाम गुन गाइ। कह शंकर हरि बिने गति नाइ॥२३॥६५॥

सूत्रधार—भकतिक महिमा कहिते कुमारीक प्रेम परसल, नयन झुराइ रहल।

श्लोकः

सत्यभामा पतिं प्राह प्रभो त्वं किन्तु प्रेक्षसे।
पारिजात-तरुं द्वारि रोपणं कुरू मे हरे॥४३॥६६॥

[सत्यभामा श्रीकृष्ण से बोली—"हे प्रभो, आप किसकी अपेक्षा कर रहे हैं? पारिजात वृक्ष का रोपण मेरे द्वार पर कीजिए।]

सत्यभामा—हे स्वामि कृष्ण, कि निमित्त तोहों अपेक्षा करह, हामाक द्वारे पारिजात सत्वरे रोपन करह।

सूत्रधार—प्रियाक वाणी सुनि, श्रीकृष्ण द्वारका विदूरे आपुन हाते, पारिजात तरु रोपन कयल। पेखि, देवी बोलल।

सत्यभामा—हे स्वामि! अः कि कयल, हामाक बहुत सतिनी थिक; पारिजात-पुष्प चोरि करि निते, कत कलह करि बेड़ावब। एथा न हे, हामार द्वार निकटे निया रोपन करह।

सूत्रधार--सुनि, श्रीकृष्ण प्रियाक मन पुरिये, पारिजात पुनर्वार उत्पारि, देवीक द्वार समीपे रोपल। तदनन्तर सत्यभामा मनोरथ पूरि श्रीकृष्ण स्वामीक परिनामि, सखि समे प्रशंसा बहुत कौतुके कयलि।

श्लोकः

साधितार्थोऽथ नाथो सः पत्नीभ्यां सह केशवः।
कौतुकी क्रीड़यामास हाससंरम्भभावकैः॥४४॥६७॥

[(दैत्य-विनाश तथा देव-संरक्षण का) कार्य सम्पन्न कर कौतुकी कृष्ण दोनों (सत्यभामा और रुक्मिणी) पत्नियों के साथ सहास प्रेमपूर्वक क्रीड़ा करने लगे।]

सूत्रधार—तदनन्तर, नरकासुर मारि, देवकार्य साधि, इन्द्रक जितिये, पारिजात आनि, प्रियाक द्वारे रोपि, कृत-कृत्य हुआ, श्रीकृष्ण भार्यादुहों सहित जैसन लीला-केलि कौतुके कयलि, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल।

गीत

राग--पूर्वी--खरमान

जग जन जीवन मधाइ।
करतु कौतुक केलि कानु कामिनी मिलाइ ॥ध्रु०॥

कुंचित चारु चिकुरु चिबुक धरु, करु चुम्बन बनमालि।
काँचुरि फोरे भोरे रसिक कानु, कुच नख वन घन घालि॥

रमया रमनि मिलिते मानिक, मकरि कुण्डल डोले।
हीर रचित मनि मोतिम माले, हेम हार उरे लोले॥

चरणे रतन मनि मंजीर झनकित, कनक किंकिनी करो रोले।
श्री जगतानन्द भकति रसिक, कृष्ण-किंकर ओहि बोले ॥२४॥६८॥

सूत्रधार—ऐसन केलि कला कौतुके कये, श्रीकृष्ण भकता रमणीसबक मनोरथ पूरि, द्वारकातुर प्रवेसि रहल। ओहि पारिजात-हरण, हरिक परम लीला चरित्र, श्रद्धाये जे सबलोक सुने-भने, कृष्णक चरने ताहेरि परम भकति बाढ़य। इहा जानि, निरन्तरे हरि बोल हरि।

श्लोकः

कृष्ण-पाद-प्रसादेन शङ्करः कृष्ण-किङ्करः।
चकार श्रीपारिजातहरणं नाम नाटकम् ॥४५॥६९॥

[कृष्ण के चरण-प्रसाद से कृष्ण-किंकर ने पारिजात-हरण नामक नाटक की रचना की।]

मुक्तिमंगल भटिमा

जय जय जग जन जीवन मुरारी। कंस केसि बक अघ अन्तकारी॥
सो व्यापक विभु ब्रह्मा अधिकारी। भुकुति मुकुति नित्य करतु तोहारी॥

जय जय जादव दनुज संहारी। दण्डिते दुष्टक भकत निस्तारी॥
सोहि जगतगुरु गोपी पियारी। भुकुति मुकुति नित्य करतु तोहारी॥

जय जय परम पुरुष देव देवा। ब्रह्मा हर करु जो पद सेवा॥
सोहि नारायण भुवन उद्धारी। भुकुति मुकुति नित्य करतु तोहारी॥

जय जय माधव धेनुक मारी। आनन्द बिरिन्दा विपिन बिहारी॥
सोहि गोपाल गोवर्धनधारी। भुकुति मुकुति नित्य करतु तोहारी॥

जय जय पीताम्बर बनमालो। कालिन्दी ह्रदे जो मर्दल काली॥
सोहि गोविन्द भकत भयहारी। भुकुति मुकुति नित्य करतु तोहारी॥
जय जय दुष्ट दैत्य अन्तकारी। कुवलय मोड़न दन्त उपारी॥
सरत रमत जेइ गोपिनी नारी। भुकुति मुकुति नित्य करतु तोहारी॥
श्री जगतानन्द दलपति जान। हरि को पद-पंकज भजमान॥
करावत नाट ओहि बहु छन्दे। कृष्ण भकति करिते प्रबन्धे॥
पारिजात-हरण आहेरि नाम। सुन बुध जन हरि गुन अनुपाम॥
कलियुग मध्ये धरम ओहि सार। नाहि नाहि गति हरि बिने आर॥
कयलि कलि देखु एकाकार। पाप पुन्य किछु नाहि विचार॥
मलमति लोक अबहु नाहि जानि। नाहि नाहि गति बिनै सारंगपनि॥
भज हरि चरने छोड़हु सब आस। हरि नाम करु सुदृढ़ बिस्वास॥
धरमक उपरि राजा नाम। कृष्ण किंकर कह बोल राम राम॥२५॥७०॥

॥ इति पारिजात-हरण नाट समाप्त॥

राम-विजय नाट

श्लोकः

यन्नामाखिल लोकशोकशमनं यन्नाम प्रेमास्पदम् ।
पापापारपयोधि-तारण विधौ यन्नाम पीनप्लवः ।।
यन्नाम श्रवणात् पुनाति श्वपचः प्राप्नोति मोक्षं क्षितौ ।
तं श्री राममहं महेश वरदं वन्दे सदा सादरम् ।।१।।

[जिसका नाम समस्त सांसारिक संतापों को दूर करने वाला, प्रेम का आस्पद तथा अपार पाप-सागर को पार करने लिए विशाल नौका है; जिसके नाम-श्रवण से चाण्डाल भी पवित्र हो जाता है और पृथ्वी पर मोक्ष लाभ करता है, उन महेश-वरद भगवान् श्रीराम की मैं सदा सादर वन्दना करता हूँ ।]

अपि च

येनाभाजि धनुः शिवस्य सहसा सीतासमाश्वासिता ।
येनाकारि पराभवो भृगुपतेर्वामस्य रामस्य च ।।
वैदेह्याः विधिवद्विवाहमकरोत् निर्जित्य यः पार्थिवान् ।
युष्माकं वितनोतु शं स भगवान् श्री रामचन्द्रश्चिरम् ।।२।।

[जिसने अप्रयास ही शिव-धनु का खण्डन किया, सीता को आश्वस्त किया, और क्रूर परशुराम का पराभव किया तथा भूपतियों को जीत कर वैदेही का बिधिवत् पाणिग्रहण किया, वह भगवान् श्री रामचन्द्र तुम लोगों का सदैव कल्याण करें ।]

नान्दी-गीत

राग–सुहाइ—एकताल

जय जग जीवन राम। कयलों पड़ि परना ।।
जाहे नाम गुन मुहे गाइ। पापी परम पद पाइ ।।
ओहि भवताप अपारा। जाहे सुमिरने करू पारा ।।
अजगव भंजन कारी। पावल जनक कुमारी ।।
नृपसब छेदल बाने। कृष्ण-किंकर एहु भाने ।।१।।३।।

सूत्रधार—नान्द्यन्ते सूत्रधारः। अलमतिविस्तरेण। प्रथमं माधवो माधव इत्युक्त्वा श्रीरामचन्द्रं प्रणम्य सभासदः सम्बोध्य आह।

श्लोकः

भो भो सामाजिकाः ! यूयं शृणुध्वमधुना वुधाः ।
श्री रामविजयं नाम नाटकं मोक्षसाधकम् ॥३॥४॥

[हे सामाजिक लोग ! आप विद्वान सब, इस समय मुक्तिसाधक 'श्रीराम-विजय' नामक नाटक का श्रवण कीजिए ।]

भाटिमा

जय जय रघुकुल कमल प्रकाशक दासक नासक भीति ।
जय जय निज जन यातन-घातन पातन पातक रीति ॥
हरक सरासन नासन सासन नृपगन बान सन्धाने ।
छेदक भेदल खेदल दापे तापे पलावत प्राने ॥
भृगुवर बामक रामक कामक कयलि दरलि दरप उपान्त ।
भव भय भंजन सज्जन रंजन जीवन जानकि-कान्त ॥
जोहि बनमाली बालिक घालि राजा करू सुग्रीव ।
जाहेरि कोप कटाक्ष निरेखि कम्पित जलधिक जीव ॥

समरक नागर नागर सागर सिला-सेतु कय बन्ध ।
भकतक भीता सीता नीता युद्धे बधिये दसकन्ध ॥
साफलल बानी जानि आनि थापि विभीषण पाट ।
जत आतंका लंका शंका कयलि पूनु उत्पाट ॥
जगतक अन्तक सन्तक पूरल परमा काम ।
भूमिक भार उतारन तारन सुर नर राजा राम ॥
ब्रह्मा महेश्वर किंकर जाकर पड़ि पड़ि करतु सेवा ।
त्रिभुवन कारन तारन मारन जोहि देवक देवा ॥

सोहि महेश्वर रामक नाटक सुन सब कय बिसोआस ।
जाहेरि कथने मथने करइ कलिमल सकल बिनास ॥
असारत सारत कारत भारत नर तनु बिफलेहिं जाइ ।
पद अरबिन्द अनिन्द गोविन्द हृदि पंकज धरू भाइ ॥

धन जन जीवन जैसन बिजुरि उजुरि देख ने देख ।
जानब केशव देवक सेवा सोहि सिला करू रेख ॥
सब अपराधक बाधक साधक सिद्धि करु हरिनाम ।
कह कृष्ण-किंकर लोक निरन्तर डाकि बोलहु राम राम ॥२॥५॥

सूत्रधार—भो भो सभासद ! साधु जन ! जे जगतक परम ईश्वर नारायण, भूमिक भार-हरण निमित्त दशरथ गृहे अवतरल, सोहि भगवन्त श्रीराम रूपे, ओहि सभा मध्ये प्रवेस कयकहुँ, सीता-विवाह बिहार नृत्य परम कौतुके करब। ताहे सावधाने देखह-सुनह। [प्रथमे लक्ष्मण सहित श्री रामक प्रवेस। तदन्तर सखीसब सहित सीताक प्रवेस। इति ज्ञात्वा सर्वे सावधाने स्थीयतां।] आहे संगी कि वाद्य सुनिये ?

संगी – सखि ! देव-दुन्दुभि बाजत।

सूत्रधार—आहे देव-दुन्दुभि बाजत। अः श्री रामचन्द्र मिलल।

श्लोकः

प्रवेशमकरोत् कामं रामो राजीवलोचनः।
ससोदरो धनुष्पाणि रूपेणाप्रतिमोभुवि ॥४॥६॥

[राजीवलोचन राम ने जो पृथ्वीतल पर रूप में अप्रतिम हैं, हाथ में धनुष धारण किये हुए, सहोदर-सहित प्रवेश किया।]

सूत्रधार—आहे सभासद ! जाकर कथा कहैछि से श्रीराम लक्ष्मण सहित ए आवत।

[इति सूत्र० निष्क्रान्तः]

गात

राग–सिन्धुरा—एकतालि

भेलि परवेश परमेश रघुनाथ। संगे सोदर शर धनु धरि हात ॥
श्याम रुचिर चिर पीत परकास। पंकज नयन बयन मन्दहास ॥
मनिमय मुकुट कुण्डल गण्ड डोले। हेरि मुरुति मन मनमथ भोले ॥
मानिक मोति ज्योति हेमहारा। गगन उजोरे जैसन रुचि तारा ॥
चरनक रंजि मंजीर मनि रोल। कृष्ण-किंकर ओहि शंकर बोल ॥३॥७॥

सूत्रधार—ओहि परकारे श्रीरामचन्द्र प्रवेस कय, लक्ष्मण सहिते, एक पास हया रहल। [तदनन्तर सीताक प्रवेश सुनह।] आहे संगी कि वाद्य बाजै।

संगी—अये देवःवाद्य बाजै। आ जनकनन्दिनी सीता सखीसब सहित मिलल।

श्लोकः

चकार जानकी कामं प्रवेस सखि संगता।
चिन्तयन्ती रामचन्द्रचरणौ रूचिरानना ॥५॥८॥

[रामचन्द्र के चरणों का सदा चिन्तन करती हुई, सखियों से अनुगता, शुभांगी सीता ने प्रवेश किया।]

सूत्रधार—हे सामाजिक, सखि मदनमन्थरा, कनकावती, सहित, स जनकनन्दिनी सीता रामक चरण चिन्ति प्रवेश कय आवे, ता देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग-सुहाइ—एकतालि

आवे जनक-सुता कय परवेश । पेखय बदन मदन-मन क्लेश ।।ध्रु०।।
मानिक मुकुट कुण्डल करु कान्ति । दसन ओतिम नव मोतिम पन्ति ।।
इसत हासि चान्दक रुचि छोर । नील अलक लोचन चकोर ।।
कंकन कनक केयूर झनकाइ । रामक चरन चिंतिये चिते लाइ ।।
पद-पंकज मनि मंजीर रोल । रूपे भुवन भुले शंकरे बोल ।।४।।६।।

सूत्रधार—हे सामाजिक लोक ! से जनक-नन्दिनी सीता सखीसब सहित नृत्य करिये । से जातिस्मर कन्या, पूर्व जन्मक कथा चित्त परल; ताहे सुमरि, परि क्रन्दन कय रहल । ताहे देखि, सखि मदनमन्थरा, सखि कनकावती, बाहु मेलि धरि पुच्छल ।

सखीदुहों—आहे सखि । तुहुँ राजनन्दिनी, कोन सम्पति नाहि थिक ! कि निमित्ते बारम्बार बिलाप करह ? प्राणसखि ! हामाक सपत, ताप तेजह । तोहार पावे लागु, हामात सत्वर कथा कह ।

श्लोकः

ततः सीता विनिःश्वस्य चरितं पूर्व्वजन्मनः ।
सखीभ्यां वर्णयामास रूदती सुदती सती ।।६।।१०।।

[तदुपरान्त सुन्दर दाँतो वाली सीता ने विकलता में ही सखियों को पूर्वजन्म का चरित रो-रोकर सुनाया ।]

सूत्रधार—सीता कति बेरि स्वस्थ हया, आँचोरे आँखि-मुख पुछि, निश्वास फोकारि, सखीसबक सम्बोधि, बचन बोलय लागल ।

सीता—आहे सखीसब ! परम अभागिनीक कि पूछह ? हामु पुरुब जनम ईश्वर नारायणक स्वामी इच्छा कयल । अनेक जनम काय-क्लेश करिये, बहुत बरिस तपस्या कयलों । तदनन्तर आकाशवाणी सुनल, "आहे कन्या, तोहों ओहि जनमे स्वामीक भेंट ना पावब । आर जनम, श्रीराम रुपे तोहाक बिबाह करावब ।" इहा जानि हामु अगनि प्रवेसि, प्रान छाड़ल । ओह सखीसब, से दैवबानीये बिफल भेल । से श्रीराम स्वामीक चरण ओहि जनम भेंट नाहि भेलो ।

सूत्रधार—ओहि बुलिते सीताक परम ताप उपजल । 'हा राम स्वामी' बोलि मोह हया, माटि लोटि जैसे बिलाप कयल, ता देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग–सुहाइ—चुटकला

बिलपति मैथिली माइ, नीर नयन झुराइ।
घन घन श्वास फोकारत, तनु चेतन नाइ ॥ध्रु०॥
चिर बिरहे दहे देहा, दिशा दश देखो आन्धारि।
रमया बिने मन झामर, परम रुचि कुमारि॥
हा हरि हा हरि जम्पय, जीव जैसन जाइ।
राम चरणे लागु, गति आवरि नाइ ॥५॥११॥

सूत्रधार—ऐसन सीताक विलाप देखिये, सखीसब प्रबोध कय बोलल।

सखीदुहों—आहे प्राणसखि ! से भकतक बान्धव माधव, तोहाक दुख दूर करब। पुरब जनमक, तोहार स्वामी, आवश्यक पावब। हे सखि ! ताप छाड़ह।

सूत्रधार—हे सामाजिक लोक ! जनक-नन्दिनी सीता किंचित् स्वस्थ हया, सखीसब सहित एकपास हया रहल। रामक चरण चिन्ति, नयने हात चराइ, अधोमुख हुया रहल।

[तदनन्तरे दशरथ राजाक प्रबेस देखह।]

श्लोकः

प्रविवेश महातेजो राजा दशरथस्तदा[1]।
छत्र-चामर संयुक्तः धनुष्पाणिर्नृपोत्तमः ॥७॥१२॥

[इसके पश्चात् महाप्रतापी नृपोत्तम राजा दशरथ ने हाथ में धनुष लिये हुए, छत्र-चामर संयुक्त प्रवेश किया।]

गीत

राग–कान्हड़ा––परिताल

आये दशरथ पृथिवी नाथ। ढुले चामर, छत्र धरु माथ ॥ध्रु०॥
दुर्जय वीर धरिये सर चापे। काम्पे रिपु सब जाहे प्रतापे॥
त्रिभुवन-ईश्वर रामक बाप। जाहे हेरि दूर होवय ताप ॥६॥१३॥

सूत्रधार—ऐसन प्रवेस कय राजा दशरथ, परम हरिखे बैठि रहल।

श्लोकः

शिष्येन साकमागत्य विश्वामित्रो महामुनिः।
आशीर्व्वाद ददौ तस्मै राज्ञे मंत्र मुदीरयन् ॥८॥१४॥

---

१. श्रीकालिराम मेधि द्वारा सम्पादित प्रति में उक्त पंक्ति किंचित् भिन्न रूप में है। यथा–प्रवेशमकेरात् कृष्णदासो दशरथस्तदा।

[(तभी) महामुनि विश्वामित्र ने शिष्य के साथ आकर मंत्रोच्चारण सहित, राजा को आशीर्वाद दिया ।]

सूत्रधार--तदनन्तर, ऋषिराज कौशिक शिष्य सहित आसिकहु, राजा दशरथक, आशीर्वाद करि जे बोलल, ता देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग--कान्हड़ा--परिताल

आवत कौतुके कौशिक चराड । माला माथे हाते धरु दराड ।। ध्रु० ।।
लाड़य बाहु हरि गुरा गाइ । सचलित नयन चौदिशे चाइ ।।
शोभे सुललित तिलक कपाल । हेरत कोपे जैसे यमकाल ।। ७ ।। १५ ।।

सूत्रधार—ऐसन प्रवेस दिये, से ऋषिराज आशीर्वाद कयल ।

श्लोकः

चिरज्जीव चिरज्जीव चिरज्जीव जनाधिप ।
पुत्र-पत्नी समायुक्त भक्तिमान् भव माधवे ।। ६ ।। १६ ।।

[हे जनाधिप ! आप चिरायु हों, चिरायु हों, चिरायु हों !!! एवं पुत्र-पत्नी से युक्त माधव (विष्णु) में भक्ति-रत हों ।]

कौशिक--हे राजा दशरथ ! तोहों सपरिवारे चिरंजीव भव ।

सूत्रधार- राजा ऋषिक आसने वैठाया, परि परनाम कय, कर जोरे बोलल ।

दशरथ—हे मुनिराज ! तोहार पद-परसे आज अयोध्यापुर पवित्र भेल । तुवा दरसने जनम हामार साफल भेल । मुनि, अब कोन प्रयोजन साधो ? हामाक आज्ञा करह । सभा मध्ये सत्य अंगीकार कये बोललों—आजु जे दान मागह, ताहेक सत्ये-सत्ये देवब ।

कौशिक--[राजाक बानी सुनि हासि हासि कौतुके नृत्य कयल] आः मनोरथ साफल भेल । [राजाक आशीर्वाद कय बोलल] हे नृपते ! तोहो पृथिवीक कल्पतरू । तोहाक ठाइ प्रार्थक कवहु विमुख नाहि हय । इहाक जानों, किन्तु हामार प्रार्थना सुनह । हामु सिद्धाश्रमत यज्ञ आरम्भल । ताहेक मारीच, सुबाहु, दोहो राक्षसक बहुत विघिन आचरय । से यज्ञ रक्षा निमित्ते तोहार राम-लक्ष्मण दोहो कुमारक, हामाकु संगे पठाव । तबे हामार मनोरथ सिद्धि हय ।

श्लोकः

तन्निशम्याभवद्भीतो पपात मूर्च्छितो भुवि ।
करोति कातरं राजा निगृह्य चरणौ मुनः ।। १० ।। १७ ।।

[उसे सुन भयभीत राजा (दशरथ) मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़े और मुनि के चरणों को पकड़ कर कातरता दिखाने लगे ।]

सूत्रधार—राजा कौशिक ऐसन वचन सुनिये, दुरन्त चिन्ताये पीड़ल । मूर्च्छित हया पड़ल । तदनन्तरे स्वस्थ हया कौशिक चरने धरिकहु, कातर कय बोलल ।

दशरथ—आहे मुनिराज ! हामार पुत्र राम-लक्ष्मण से बालक । ताहेक राक्षसक दिते चाव ! ओहि कोन व्यवहार ! हा हा, हे ऋषिराज ! यज्ञ-रक्षा निमित्त हामाक लिया जाव ।

सूत्रधार—राजाक वचन सुनिये, कौशिक परम कोपे भरचय ।

कौशिक—अये पापी असत्यवादी, राम-लक्ष्मणक नाहि पठावब ?

सूत्रधार—ओहि बोलि कोपे कम्पमान हया वेगे चलल ! बाहु लाड़िये, कोपे दसन चरबय । राजा दशरथ आगु हया, ऋषिक चरण धरि, विलाप कयल, ता देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग—सुहाइ—ज्योतिमान

करहु करुना ऋषि सुत दान देहु । कौन मुहे कहब रामक तुहु लेहु ।। ध्रु० ।।
लेहबि राम राक्षस लागि मागि । आहे अधिक हृदये दहे आगि ।।
बालक राम किछुबे नाहि जाने । ताहे ना हेरि रहबि नाहि प्राने ।।८।।१८।।

दशरथ—ऋषिराज ! बालक रामक कैसे राक्षसक हाते दिते चाव ? इहा उचित नोहे । बाप ! रामक छाड़ि हामाक निया जाव ।

कौशिक—अये दशरथ ! तुहु रामक चरित्र किछु जानये नाहि । योग बले हामु सब जानो । ओहि रामचन्द्र परम ईश्वर महा हरिक अंश अवतार । असुर राक्षसक मारि भूमिक भार उतारव । इहा जानि किछु चिन्ता नाहि करबि । सत्य राखि सत्वरे राम-लक्ष्मणक हामार संगे पठाव ।

सूत्रधार—राजा ऋषिक बानी सुनिकहु, किंचित स्वस्थ हुया, ऋषिक हाते राम-लक्ष्मणक सर्मार्प देलह । कौशिक कौतुके राजकुमार दुहु संगे लैया जैसे चलल, ता देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

पयार

चलल कौशिक साधिये काम । पाछु-पाछु चलल लक्ष्मण राम ।।
देलह धनुक दिव्य बान । लक्ष्मण राम पथहिं सबे जान ।।
आश्रम जाइते ऋषिक उचाट । पेखिये ताड़का बेढ़ल बाट ।।
मिलिल भक्ष्य पिशाचिनी हासे । काम्पे कौशिक पड़िये तरासे ।।

राक्षसी खाइ राख रघुनाथे। सुनिये राम धरल धनु हाते॥
बोलि निर्भय जोरल बान। ताड़का हृदये करु सन्धान॥
पड़ल पिशाची तेजि ग्राटास। बज्रपाते जैसे लोक तरास॥
हृदये ग्रानन्द मिलल ग्रधिक। साधु साधु रामक कहय कौशिक॥
हरिषे सिहरे देहक लोम। ग्राश्रम पाइ ग्रारम्भल होम॥
पेखिये धूम मारीच सुबाहु। चाँद गिलिते जैसे ग्रावल राहु॥
त्रासे कौशिक कहय ग्रारावे। पेखु-पेखु दोहो राक्षस ग्रावे॥
ग्रब रघुनाथ करहु मोहे त्राण। सुनिये राम धरल धनु वाण॥
बेधल हृदय सरक सन्धाने। उड़ल राक्षस रामक बाने॥
भेलि सुबाहु सागरत पात। मारीच प्रान पड़ल लंकात॥
नास गेल ग्रब दुहु पिसाचे। कौतुके उठिकहु कौशिक नाचे॥
रामक रंगे साधु साधु बोल। जय जय राम करय घन रोल॥६॥१६॥

सूत्रधार—परम सन्तोषे कौषिक रामक आशीर्वाद कयल।

श्लोकः

जयतु जयतु राम! प्रार्थक त्राण हेतो!
रघुकुल कमलाले! सूर्यवंशस्य देव॥
हरति दुरितराजिं नामसंकीर्त्तने यः॥
स्वजनसुतकलत्रैः जीवतु सः चिरायुः[1] ॥११॥२०॥

[प्रार्थीजनों के प्राण-हेतु राम की जय हो, रघुकुल-कमल-भृङ्ग, सूर्यवंश के देवता नाम संकीर्तन मात्र से ही पापों को नष्ट कर देने वाले एवं अपने भक्तों को पुत्रवत् समझने वाले, वे (राम) चिरंजीवी हों।]

कौशिक—हे रघुकुल-कमल-प्रकाशक सूर्य रामचन्द्र! हामार आशीर्वाद पत्नी-पुत्र सहित चिरंजीवी भव।

सूत्रधार—ओहि बुलि अशीर्वाद तुलसी देलह। श्रीराम माथा पाति लेलह।

कौशिक—हे बाप रामचन्द्र! तुहु हामार परम उपकारी। मारीच, सुबाहु राक्षस मारि, हामार यज्ञ सिद्ध कयल। तोहाक गुण सुझये नाहि पारि सम्प्रति प्रत्युपकार तोहोक का करब?

सूत्रधार—ओहि बुलि ऋषि मने बिमरिष कय, पुनु बोलल।

कौशिक—आः साधु प्रयोजन मिलल। हे रघुनाथ! आजु जानकी सीताक स्वयम्बर मिलिये। हामु जानल, महेशक धनु जे गुण दिते पारय, से कन्या सोहि पावे।

१. कुछ प्रतियों में इस श्लोक का किंचित् पाठभेद भी मिलता है।

से भुवन-मोहिनी दुर्लभ भाग्यवती जब तव गृहिनी हय, तबे हामार परम आनन्द मिलय हामु योगवले जानो, सोहि सीता पूर्व जनमत, बहुत तप आचरि तोहाक स्वामी न पावल। ताहेक स्मरिये ओहि जनमे तोहार चरण चिन्ति सर्वथा थिक। परम बिरहातुर हुया, तोहाक लागि रहैछे। से सुन्दरीक रूप सम्प्रति किछु कहब, ताहे सुनह।

अटिमा

कि कहब रूप कुमारिक राम। कनक पुतलि तुल तनु अनुपाम॥
रतन तिलक लोले अलक कपोल। हेरिये भ्रु वभंग त्रिभुवन भोल॥
देखिये बदन चाँद भेल लाज। नयन निरेखि कमल जल माझ॥
हेरिये भुज जुग मिलल उछंक। ललित मृनाल मजल जल पंक॥
आरकत करतल मुनिमन मोहे। कनक शलाका आँगुलि करु सोहे॥
बंदुलि अधिक अधर करु कान्ति। दाड़िम निबिड बीज दंत पान्ति॥
इषत हासि मदन मोह जाय। नासा तिलफुल कमलिनी माइ॥
नव यौवन स्तन बदरि प्रणाम। उरू करिकर कटि डम्बरुक ठान॥
पद-पल्लव नव पंकज कान्ति। चम्पक पाषुरि आँगुलिक पान्ति॥
नखचय चारु चाँद परकास। लहु लहु मत्त गज गमन बिलास॥
कत लावण्य बिधि निरमिल जानि। कोकिल नाद अमिया झुरे बानि॥
तुहुँ सुकुमार रूप नोहि हीन। राजकुमारिक बयस नवीन॥
सोहि बर रमनी घरनि जब हुइ। अब गृहवास साफल तब तोइ॥
कहलों स्वरूप बचन श्रीराम। चल अबिलम्ब जनकक ठाम॥
भाङ्ह अजगव धनुक लीलाये। सुनि सीता भजव तुवा पावे॥
जानि हामु सत्यवाणी बोल। डाकि करहु नर हरि हरि बोल॥१०॥२१॥

श्लोकः

सीतायाः रूप लावण्यं श्रुत्वा निःश्वस्य राघव।
ऋषिमाभाष्य भगवान् जगाम मिथिलां प्रति॥१२॥२२॥

[सीता के रूप-लावण्य को सुनकर भगवान् श्रीराम ने ऋषि से कह कर मिथिला के लिए प्रस्थान किया।]

सूत्रधार—सीताक रूप-सम्प्रति सुनिये, रामक मने किंचित मदन-बिकार उपजल। जानकी बियोग निमित्त निश्वास फोकारि, ऋषिक सम्बोधित बोलल।

श्रीराम—हे महा मुनिराज! महेशक धनु, वज्राधिक कठिन। हामो बालक, ताहेक गुण दिते हामार योग्यता कैसन हइ? तथापि तोहारि आज्ञा पालिते लागय। ऋषिराज, जानि सत्वर चलह।

सूत्रधार— ओहि बुलि, सोदर सहित ऋषिक पाछु-पाछु, श्रीराम जैसे मिथिला चलल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—माहुर—यतिमान

रमया चले मिथिलाक लाइ।
राजीव लोचन श्यामसुन्दर, सोदर संगहि जाइ ॥ध्रु०॥
सुनि रमनिक निकलिक काहिनी, मिलल मोह मुरारि।
भाव भिन्न रीति भेलि किंचित्, चित्ते बदन बिगारि॥
वदन इन्दु मदन भामर काम पहिल प्रवेश।
चलतु राघवु काम कौतुक हरतु केशव क्लेश ॥११॥२३॥

सूत्रधार— तदनन्तर मिथिलापुर पाइ, ऋषि सोदर सहित श्रीरामचन्द्र राजसभा प्रवेस कयल। जनक राजा कर जोड़ि उठिकहु, राम-लक्ष्मण सहित विश्वामित्रक एक एक आसने वैठाइ, ऋषिक प्रणामि, स्तुति बोलल।

जनक—हे ऋषिराज! तोहारि आगमने आजु हामार मिथिलापुर पवित्र भेल। मेरि महाभाग्य मिलल।

सूत्रधार—ऋषि आशीर्वाद श्लोक पढ़ल।

श्लोकः

कौशिक— चिरञ्जीव चिरञ्जीव राजन् सज्जनरञ्जन!
गजवाजी महैश्वर्य भार्य्यात्मजयुतः सदा ॥१३॥२४॥

[हे सज्जनों के रंजनकारी राजन्! आप गज-वाजि- महैश्वर्य-परिपूर्ण एवं स्त्री-पुत्र से युक्त सदैव चिरंजीवी हों।]

कौशिकन— हे महाराजा जनक, पुत्र-पौत्र सहित तोहो चिरकाल सुखी हब। तोहार सत्कारे परम सन्तोष भेलों।

सूत्रधार—जनक राजा राम-लक्ष्मणक रूप निरेखि परम आश्चर्य हया, मुनित पुछत।

जनक—हे ऋषिराज! ओहि बालक दुहुँ अदभुत मधुर मुरुति देखि परम आनन्द भेलों। काहेक कुमार? कि देव, किंवा मानुष, हामु बुझये नाहि पारि। ओहि सुकुमार दुहोंक देखि हृदय सन्तोष भेलों।

सूत्रधार—ताहे सुनि ऋषि श्लोक पढ़ल।

श्लोकः

कौशिक— सुतौ दशरथस्येतौ आगतौ रामलक्ष्मणौ।
दुहितुस्तव सीतायाः स्वयम्बर दिदृक्षया ॥१४॥२५॥

[राजा दशरथ के ये दोनों पुत्र राम-लक्ष्मण, आपको दुहिता सीता का स्वयम्बर देखने आये हैं ।]

कौशिक—हे महाराजा ! तोहारि परिचय नाहि । जे दशरथ राजा तोहार परम, मित्र, ताहेर कुमार दुहुँ हामार परम शिष्य । आरासबर नाम राम लक्ष्मण । तोहारि दुहिता सीतार स्वयम्बर देखिते इहा आवल थिक । इह जानि, सत्वर समाज मिलाइ, महेशक धनु आनह ।

सूत्रधार—जनक राजा महा हर्षे राम लक्ष्मणक आलिंगि बोलल ।

जनक—आः धन्य धन्य दशरथ राजा । ऐसन परम सुकुमार कुमार जाहेर गृहे, ताहेर भाग्यक महिमा कि कहव !

सूत्रधार—ओहिबुलि राजा परम उत्सवे, शंख शब्दे सम्वाद-नाद बहुत बजावल । मनिमंतक मंत्रीक आदेश कयल ।

जनक—ऐये मनिमंत ! जे नृपतिसव वासा करि रहिछे, ताहाक आनि सत्वर समाज मिलाव ।

सूत्रधार—इति श्रुत्वा मनिमंत निष्क्रान्ता ।

श्लोकः

निशम्य परमारामा रामागमन कौतुका ।
सखीं सम्प्रेषयामास जानकी कनकावतीम् ॥१५॥२६॥

[रामागमन की उत्कन्ठा से अति प्रसन्ना जानकी ने कनकावती नाम्नी सखी को भेजा ।]

सूत्रधार—तदनन्तर; ढोल, डंका, गोमुख, मृदंग; ताल, करताल, काहल, कोलाहल; महोत्सव रब सुनि, जानकी सखीक सम्बोधि बोलल ।

सीता—आहे सखी कनकावती, कि निमित्त सभात महाहरिष वाजन सुनिये ? कौन राजा आवल, सत्वरे जान गिया । हामाक बाम अंग फान्दे ! कोन कुशल साधे, इहा जानो नाहि ।

श्लोकः

तस्याः कथां यथाकरार्य कौतुकात कनकावतो ।
ययौ राजसभां साध्वी सीतां नत्वातिसत्वरम् ॥१६॥२७॥

[सीता की ये बातें सुन उसे प्रणाम कर, उसके आदेशानुसार उत्सुक साध्वी कनकावती अति शीघ्र ही राजसभा में गई ।]

सूत्रधार—सीताक ऐसन आदेश सुनिकहों, कनकावती, सीता पाये परनाम करिये, जैसे चलल, ता देखह-सुनह । निरन्तरे हरि बोल, हरि बोल ।

गीत

राग–धनश्री– एक तालि

कौतुहले चले सयि। राम परिचय लाइ।
कामिनी कनकावती। राजहंस गति जाइ॥
पावे सभाक सती। देखल रघुपति॥
जैसन गगन माझ। उदित नक्षत्र राज॥
पेखि रूप लावनु। भेलि पुलकित तनु॥
झुरे नयनक नीर। तनु मन नोहे थिर॥१२॥२८॥

सूत्रधार—सभामध्ये रामक रूप-लावण्य देखि, परम विस्मित हुया, सीताक आगु गिया कनकावती पड़ि परनामि बोलल।

कनकावती—आहे प्राणसखि! तोहार महोदय मिलल।

सीता-–हे प्राणसखि! तोहो कि देखल, कि सुनल? सत्वर कह।

कनकावती—आहे जनकनन्दिनी! तोहो जाहेर निमित्त प्राण राखह, सोहि दशरथ-राजकुमार, कोटि कन्दर्प-दर्प-दलन रूप श्रीरामचन्द्र तोहारि स्वयम्बर सुनिये आवल। ताहे देखि राजा जनक आनन्दे दुन्दुभि बजावल। हे सखि रामक कि आश्चर्य, मानुष रूप कि कहब! एक अंगक लावण्यक शत बरिषे कहिते नाहि पारि। सखि, तथापि किछु कहैछि, ता सुनह।

भटिमा

सुन सखि बचन स्वरूप। कि कहब रामक रूप॥
श्याम मुरुति पीत बास। घन जस बिजुरि विकास॥
मस्तक छत्रक वेश। नील आकुंचित केश॥
रुचिकर करण अतुल। नासा नील तिल फुल॥
बदन इन्दु परकास। अरुण अधर मन्द हास॥
ओतिम दसनक पान्ति। मानिक झिकमिक कान्ति॥
मदनक धनु भ्रुव भंग। भुज युग बलित भुजंग॥
नयन पंकज नव पाता। करतल उतपल राता॥
आँगुलि ललित अमूल। नखचय दक तूल॥
सुन्दर उदर कटिबन्ध। सोहे सिंह बन्ध कन्ध॥
उरु करि-कर निरुपम। चरण कमल-कोष श्याम॥
पदतल रातुल कान्ति। ध्वज-यव-पंकज पान्ति॥
मानुष ऐसन रूप। नाहि सुनि कहलों स्वरूप॥
नवीन बयस सुकुमार। भैल नारायण अवतार॥

किनां भैल भाग्य तोहारि। तुहु नव तरुणि कुमारि॥
विधि मिलावल आनि। तोर मनोरथ जानि॥
अब सब पूरल आस। बिरह दुख गेल नास॥
पावल स्वामीक कोल। कर नर हरि हरि रोल॥१३॥२९॥

कनकावती—आहे सखि ! जैसन महापुरुष लक्षण देखलु, जानलु ओहि ईश्वर नारायण श्रीराम रूपे तोहार बिवाह हेतु आवल। इहात किछु शंका नाहि करबि। सखि ! तोहार मनोरथ साफल भेल।

श्लोकः

श्रुत्वा सखि मुखाद्रामचन्द्रस्य चरितामृतं।
मूर्च्छिता पतिता सीता सुमहाहर्षधर्षिता॥१७॥३०॥

सूत्रधार—रामक परम चरित्र सुनिये, सीता महा हरिषा वेशे मूर्च्छिता हैया पड़ल। जैसे प्रेमरसे महा आकुल भेलि, ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—धनश्री—एक तालि

रामक चरित्र सुनिये कुमारि।
भेलि पुलक तनु चेतन आकुल, कमल नयन झुरे बारि॥ध्रु०॥
रामक चरण चित्त थिर चिन्तिये, नयना मुदि रहु माइ।
प्रेम-परस-रस राजनन्दिनी जैसे, मानस अमिया झुराइ॥
जाहि बिरह दहे रहे ना जीवन, सो पिउ पावल कोल।
आनन्द सिन्धु मगन कामिनी, कृष्ण-किंकर ओहि बोल॥१४॥३१॥

सूत्रधार—सखि कनकावती, मदनमन्थरा, सीताक धरिकहों, आँचोरे अंग मुछि प्रबोध बोलय।

कनकावती हे प्राणसखि ! तुहु जाहेर चरण चिन्ति चिरकाल रहैछ, से रामचन्द्रक बिभि हाते मिलावल।

मदनमन्थरा—हे सखि ! आनन्द समये तुहु कि निमित्त आकुल भेलह ? हे माइ, स्वस्थ हव।

सूत्रधार—सखीसबक वानी सुनि, सीता आकुल भाव तेजि, रामक चरण चिन्तिये, एक पास हुया रहल।

श्लोकः

ततो नृपान् यथानीय मणिमन्तो नृपाज्ञया।
कारयामास महतीं सभामुत्सवशोभिताम्॥१८॥३२॥

सूत्रधार—तदनन्तर, मंत्री मणिमन्त, राजासवक आनिये जैसे सभामध्ये मिलावल, ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल।

गीत

राग—कान्हड़ा—परिताल

आवे नृप सब धरि सर चाप। काम्पे धरणी परम प्रताप॥
बाहु काण्डखापडा उड़ि हात। दसन कामुरि झंकारय माथ॥
दरपे करय भार धर रोल। आवल राजसभा केरि कोल॥१५॥३३॥

सूत्रधार—ए राजासव ऐसन बीभत्स भावना कय, एक पास हुया सभात बैठल।

श्लोकः

सखीभिः साकमभेत्यां जानकी जनकोन्वयात्।
महेशधनुषं स्कन्धे निधाय शोभितां सभाम्॥१६॥३४॥

सूत्रधार—तदनन्तर, राजा जनक अभ्यन्तर प्रवेशिये महेशक अजगव धनु कन्धे करिया, दुहिता सीताक वस्त्रे अलंकारे मण्डित करिये, सुवर्न-पंकज माला हाते दियाकहुँ, सखीसब सहित जैसे उत्सव उत्सुके सभा प्रवेश करावल, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरें हरि बोल, हरि बोल।

गीत

जानकी कामिनी कौतुके चललि लीलाये।
सखीसब संगे रंगे करतु केलि, मेलि आँचोले डुलावे॥ध्रु०॥
नव पिउ परस रसिक करू बाला, माला करतल लोले।
चरण रंजि मनि मंजीर झनकित, कनक किंकिनी रोले॥
मत्त गज गामिनी कामिनी माइ, जाइ निज पिउ पासा।
हेरिये नृपसब मदने दहतु मन, कहतु कृष्णक दासा॥१६॥३५॥

सूत्रधार—राजनन्दिनीक नवयौवन रूप-लावण्य पेखिये, राजासवक काम वाणे पीड़ल; अचेतने मूर्च्छित हुआ पड़ल। पुनु चेतन लभिये उठिकहु परम आकुल भावे, सीताक कातर कय राजासब बोलल।

एकराजा—हे प्राणेश्वरी। काम-सागरे मगन भेलो, निस्तार करह।

अन्य राजा—[आँगुलि मुखे लैया बोलल] हे राजनन्दिनी! मदन मन मर्दय। प्रिये! हामाक हस्ते परख।

आर राजा—[दसने खेर कामुरि विनये बोलल] हे सुन्दरि! मदन बाणे हामार प्राण फुटि जाइ। वचन-आमिया रस बरखि हामाक जिवाव।

आर राजा—[कामे भुलि बोलय] हामार गृहे जत महादेइ थिक, सब तोहार दासी करि देवब। हामो तोहार चरणक दास भेलो। हामार आगे खनिक तम्भिये, कटाक्षे निरेखि प्राण दान देह।

सूत्रधार—ऐसन कामे मत्त हुया राजसब नानाबिध बीभत्स भावना करय। पेखि, सीताक सखि कनकावती, मदनमन्थरा, चन्द्रावती, सूर्यप्रभा काहु राजाक गोड़े मारि भरचय। काहुक हाते ठेंगना मारय, काहुक गले वस्त्र बान्धिये दुइ-तीनि सखियें घसावे, से सब दुख को न गणय। तथापि नृप कुमारिक कय थिक। अये लोक! हरिक भकति हीन कामातुर पुरुषक देखह। जगतक माता जनकनन्दिनी, ताहेक इहा जानये नाहि। निरन्तरे हरि बोल हरि।

श्लोकः

जगाद जनको वाक्यं पश्यन्तव पश्यन्त्वेतद्धनुर्नृपाः।
इदं सज्यं करोति यः तस्यै सीताम् समर्पयम् ॥२०॥३६॥

सूत्रधार—जनक राजा राजसभाक स्वस्थ कय बोलल।

जनक—आहे राजासब! हामु सत्य वाणी कहैछि ता सुनह। सीताक विवाह निमित्त चिन्तिते ओहि महेशक धनु गगन हन्ते पड़ल। तदनन्तरे आकाशवाणी सुनलों ओहि धनुत जे गुण दिते पारय, ताहाके माथे कुसुम माला दिये सीता स्वामी बरब। इहा सत्य जानि, यत्न करह।

सूत्रधार—ओहि वाक्य सुनि, शतधनुनाम राजा परम आडम्बरे काछि गिया, पहिलेहि धनुक धरल। दसन कामुरि गुण दिते, चित्त हुया पड़ल। तदनन्तरे चन्द्रकेतु धनु धरिकहों, कथमकथमपि उल्लासि धनु सहिते पड़ल। ताहे देखिये राजा पुरंजय परम आटोपे धनु धरिकहों शरीरक बले लड़िवाक ना पारि उफरि पड़ल। तदनन्तर राजा कुमुदाक्ष कटि-वस्त्र काछिकहों, अधर कामुरि धनुक दोप दिया तुलि महाप्रयास पाइ विद्रोष करल। लाज होइ समाजत पड़ि हात-पाव आचारय।

श्लोकः

राममाह मुनिर्व्वत्स किन्निरीक्ष्यहवतिष्ठसि।
कौशल्यानन्दनोतिष्ठ त्वं सज्यं कुरु काम्मुकम् ॥२१॥३७॥

सूत्रधार—हे सामाजिक! राजासबक परम वीभत्स देखिये, मुनि रामक बोले।

कौशिक—हे कौशल्यानन्दन! तुहु कि निमित्त पेखि रहैछ? उठह, ओहि धनुत सत्वरे गुण लगाव।

श्रीराम—[ऋषिक प्रणाम कय] आहे मुनिराज! वालक, ओहि धनु वज्राधिक कठिन। इहात गुण दिते हामार सामर्थ्य कैसन होइ? तथापि तोहार आज्ञा पालि यत्न करव। जैं धनुत गुण दिते महाराजसवो नाहि पारल, इहात हामात कोन लाज।

सूत्रधार—ओहि बोलि रामचन्द्र पीत बसन काछनि काछि, लीलाये चलल।

राजासब—[विहसि बोलल] ओहि काहेक छवाल ? कि उपालम्भ भेलि ?

सूत्रधार—श्री रामचन्द्र अजगव धनुक बाम हाते धरिकहु, जैसे कुसुम मालौक उपरक खेपि पुनर्बार लुम्फि धरल। पेखि, राजासबक मुख मलिन भेलि।

श्लोकः

धृते धनुषि रामेण सीता शङ्कित मानसा।
अनन्तं कच्छपं पृथ्वीं याचित्वेदम् जगादसा ॥२२॥३८॥

सूत्रधार—हे सामाजिक लोक ! जेखन रामचन्द्र अजगव धनु धरल, सीता परम शंकित भावे चिन्तित भेलि।

सीता—हा हा हामार स्वामी परम सुकुमार, नवीन बयस। बज्राधिक कठिन महेशक धनु, इहात गुण दिते स्वामी जनु पारय नाहि। हा हा पिता कि दारूण कर्म कयलि ! [ओहि चिन्ति पृथिवीक कातर कय बोलल।] हे माता बसुमती ! तुहु थिर हुया रहव। हे पिता अनन्त ! तुहु भल्ल कय पृथिवी धरब। हे ईश्वर कुर्म्मराज ! तुहु पृथिवीक सन्नद्ध धरब। तारासबक प्रसादे स्वामी यदित धनुत गुण दिते पारय, तब आमि अगतिर गति हय।

सूत्रधार—ओहि बुलि सीता स्वामीक मुख निरेखि रहल।

श्लोकः

रामस्तु शङ्कितां सीतां निरीक्ष्य कृपया प्रभुः।
प्रसह्य सज्यमकरोल्लीलयाजगवं धनुः ॥२३॥३९॥

सूत्रधार—से कृपामय रामचन्द्र, सीताक सकरुण भाव पेखि तत्काले लीलाये धनुत गुण लगावल। से ईश्वर पुरुष रामचन्द्र हासि-हासि अप्रयासे कर्णमाने टानि धनुत टंकार करल। ठात्कार शब्दे, मध्य भागे धनु भाङि पचारो छिड़ल। जैसन बज्रपात भेल, तद्वत रामक महा महिमा देखि राजासब सचकित भेलह। सीता धनु-भंग देखि आनन्द मगन हुया जैसे श्रीरामक माथे कुसुम माला दिये, स्वामि बोलि बरल। ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—माहुर—परिताल

आनन्दे राज-नन्दिनी हासे। रामक पास चललि लय लासे॥
स्वामीक माला परिधाइ। करि परनाम पावे परि माइ॥
धरिकहु रमणी राम हासि तोले। स्वामीक कामिनी आँचले ढोले ॥१७॥४०॥

सूत्रधार—हे सामाजिक ! सीता रामक स्वामी भावे बरिये कर्पूर ताम्वुल जोगाइ, आनन्दे रहल। ताहे पेखि राजासव शोक कोपे मोहित हया धनु वाण धरिये, रामक परम दर्प कय गरजे।

राजासब –अये, काहेक छत्राल ? आः हामार कन्या ओहि लैया जाइ। हामुसव राजक जीवन धिक-धिक।

सूत्रधार—ओहि बोलि, धर मार रोल आन्दोलन बहुत कयल।

श्लोकः

श्रुत्वा सीता भवद्भीता भूपाल वीर भाषितम्।
रुरोद वेपुथमती शोचन्ती च पतिं प्रति।।२४।।४१।।

सूत्रधार –राजासबक परम आन्दोलन रोल सुनिये, राजनन्दनी भये परम आकुल भेलि। जानकी जैसे स्वामीक लागि बिलाप कय बोलल, ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

सीता--हा हा बिधि ! हामार कि कपाल मिलल। हरि-हरि रामस्वामी परम सुकुमार नवीन बयस, संगे सोदर मात्र सहाय, ओहि परम निकरुण दारुण राजासबक कैसे जुद्धे जितब ? हा हा दैव विधि ! कोन अपराधे हामाक बंचल।

सूत्रधार--ओहि बोलि जानकी जैसे स्वामीक लागि विलाप कयल, आहे सामाजिक लोक, ताहे देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—गौरी - विषम ताल

नाइ नाइ चेतन तनु नयने झुरे बारि।
बिलपति माइ पिउक लाइ तापे परि कुमारि।।
पुरब जनम पुराय परम पावलु पहु ओहि।
बंकिम बिधि हातक निधि हारे अभागिक मोहि।।
दुर्लभ बल्लभ लागिया आकुल करतु ए बरनारी।
हरि-हरि स्मरे श्वास फोकारे पहुक सुख नेहारि।।१८।।४२।।

श्लोकः

भीतां सीतां ततो रामः निरीक्ष्य कृपया प्रभुः।
प्राह प्रियां समाश्वास्य माभैः सीते स्थितेमयि।।२५।।४३।।

सूत्रधार—प्रियाक परम सन्ताप निरेखि, रामचन्द्र बाहु मेलि प्रियाक धरिकहु आश्वास कय बोलल।

श्रीराम—हे प्राणप्रिये ! तुहु काहेक भय करह ? ओहि राजासब हामार आगु कोन हय। जैसे सिहक आगु बालक हरिण। हामार वाण प्रहारे एहि क्षणे पलावब। तोहो आजु कौतुक देखह।

सूत्रधार—ओहि आश्वास करिये रामचन्द्र धनुक टंकार करिये राजासबक बोलल।

श्रीराम—अये पापी राजासब ! हामु धनु भंग कय जानकी पावलु। कि निमित्त इहात बिपक्ष आचरह ? जत सकति थिक, हामाक सकति बुझह।

सूत्रधार—रामक वाणी सुनि नृपसब परम आटोपे टंकार कय, वाण बरिखल। रामचन्द्र सोहि सरसब छेदिये राजासबक गावे-गावे वाण प्रहारि हृदय भेदल। काहु-काहु राजाक उरु कर काटि-काटि पेलावल। काहुक बाहु कन्ध छेदल। अपर नृपसब परम भये पलावल।

श्लोक:

निरीक्ष्य साक्षाद्रामस्य विजयं जानकीमुदा।
विवाहे विधिवद्वीरो राघवाय सुतामदात् ॥२६॥४४॥

सूत्रधार—तदनन्तर, रामचन्द्रक परम विक्रम देखिये, जनक राजाक मने अति आनन्द भेल। दूत पठाइ राजा दशरथक अति सत्वरे अनावल। राजा दशरथ पुत्रक विक्रम, सीताक प्राप्ति सुनिये, आसिकहु जनकक परम कौतुके आलिंगि धरल। जैसे नाचये लागल। राजाक जनक विवाहक सम्भार मिलावल। विश्वामित्र कुसुण्डि करिये, होम आम्भल।

श्लोक:

ऋषिनिरीक्ष्य सीतायाः रूपलावण्यमद्भुतम्।
पुलकाङ्गः पपातोर्व्याम् कामार्त्तो मूर्छितो यथा ॥२७॥४५॥

सूत्रधार—मुखचन्द्रिका करितें, सीताक भुवनमोहन रूप निरेखि ऋषि कामे आतुर भेलह। हातक स्रुवस्रुच खसि परल। शरीर कम्पि मुरछि परल। ताहे पेखि शिष्य गालबे प्रबोध बोलल।

गालव—हे गुरू ! तोहार कोन व्यवहार ? स्वस्थ हव।

श्लोक:

ततश्चेतनमालभ्य मुनिर्मन्त्रमुदीरयेत।
तदोद्वाहविपौ तस्मिन् उत्सवः सुमहानभूत ॥२८॥४६॥

सूत्रधार तदनन्तर मुनि चेतन लभिये, विष्णु-विष्णु स्मरि, हाते स्रुव धरि बिबाहक होम कराइते लागल। सोहि समये बर-कन्याक केश एक ठाम करिये पानी ढालिते ब्रह्मा-रुद्र-इत्यादि देवतासव जैसन आनन्द मिलावल, ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—सुहाइ—यति मान

रघुनाथ कौतुके करतु बिबाह। सुर पुर मिलल उत्साह॥
शम्भु स्वयम्भु गुण गावे। इन्द्र मृदंग रंगे बावे॥
बरिषे कुसुस सुर-रासा। पूरल सब मन कामा॥१९॥४७॥

सूत्रधार ऐसन परम मंगल आनन्दे सीताक बिबाह दिये, राजा जनक जत सर्वस्व पावल सब रामक यौतुक दिलह। दशरथ राजा को वहुत सम्मान कय अयोध्याक लागि बर-कन्याक पठावल।

श्लोकः

ततोतिकौतुकीरामः प्रियया सह सीतया।
ससोदरो मुदा भ्राजन् अयोध्याम्प्राय पुरीम॥२९॥४८॥

सूत्रधार—तदनन्तर प्रिया सीता, सोदर सहिते श्रीरामचन्द्र जैसे अयोध्या चलल, हे लोक, ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—भटियाली—यतिमान

करतु कौतुक चलतु रमया रमणी संगहि जाइ।
नील घन जैसे बिजुरि उज्जुरि कुंजर गमनी माइ॥
कनक कंकण झनके रनके ठमके कय लय लास।
पिउक देखि मुख आखि मुदि रहु लज्जित ईषत हास॥
मत्त मातंग संगे जैसन तरुणी करिनी आवे।
जय जय रवे चौदिशि उत्सव कृष्ण-किंकरे गावे॥२०॥४९॥

श्लोकः

ततः आगत्य तरसा भार्गवो भृकुटि मुखः।
स्कन्ध निधान कठिन कुठार रामंब्रवीत॥३०॥५०॥

सूत्रधार—ऐसन महोत्सवे रामचन्द्र सहिते चलैछे। तदनन्तर महेश गुरूक धनु भंग शब्द सुनिये, परम क्रोधे परशुराम प्रचण्ड मूर्ति हुया स्कन्धे कुठार धरिये, रह-रह बोलि रामचन्द्रक आगु बेढ़ल।

परशुराम—अये बेस्तविक[1] पुत्र ! मेरा गुरूक धनु भंग कय, तोहो काहा जाव ? परशुरामक कथा तोहो जानये नाहि ? हामु एकबिशंति बार भूमि भ्रमिये सब क्षत्रियर मुण्ड मारलों । से शोणिते कुठार मलिन भेल । अः आजु तोहाक कन्धरुधिरे पुनु निका करबो ।

सूत्रधार—ओहि बुलिब्राहु, कामुरि परम चटि चर्पटि करिये थिक ।

श्लोकः

तन्निशम्याभवद्भीतः भयाद्दशरथोनृपः ।
स्कन्धे च वसनं बद्धवा भार्गवस्यपदेऽपतत् ॥३१॥५१॥

सूत्रधार—परशुराम ऐसन क्रोध भावना पेखि, राजा दशरथ प्रान अन्तरिक्ष भेल । हा हा सर्वनाश भेल बोलि, गले कापड़ बान्धि, भार्गवक पावे पड़िये, अनेक कातर कयल । तवहु भार्गव क्रोधे बहुत बल्कय ।

दशरथ -हे प्रभु परशुराम ! हामार पुत्र रामचन्द्र बालकमति । इहाक दोस मरस गोसाइं । तोहारि चरनक दास भेलो । माथे खेर धरो । हामाक पुत्र दान देहु । जब नाहि क्षमा करब, तब पुत्रक छोड़ि हामाक माथा लेहु ।

सूत्रधार—हृदये मुष्टि हानि राजा दशरथ, रामचन्द्रक बान्धि बोलय लागल ।

दशरथ—हा हा पुत्र ! अन्तकक हाते पड़लि । तोहारि दरसन आज परिछेद भेल ।

सूत्रधार—ओहि बोलि, दशरथ वहुत बिलाप कयल ।

श्लोकः

विलोक्य भार्गवं भीता सीता वेपित-मानसा ।
ररोद पतिमालिङ्गम् हा हतास्मीति वादिनी ॥३२॥५२॥

सूत्रधार—तदनन्तरे, कालान्तक प्राय परशुरामक निरेखि, सीताक शरीर काम्पे ।

सीता—सकले गुणभाजन स्वामी हामार आजु काहेक देलहु, विधिक विडम्बना कि भेल ।

सूत्रधार—ओहि बुलि, स्वामीक आलिंगि धरिये जैसे बिलाप कयल, ताहे देखह-सुनह ।

गीत

राग–गौरी—ज्योति मान

हरि हरि रमणी करये पड़ि माइ । देखि परम पिउ जीव जैसे जाइ ॥
पावल कत पुण्य पहु हामि । हाते हरये बिहि नवनिधि स्वामी ॥
नीर झुरये फोकारये घन स्वासा । बंक बिधाता कयल सब नासा ॥२१॥५३॥

---

१. कुछ प्रतियों में पाठान्तर—'बेरटक ।'

श्लोकः

सन्तापं प्रेक्ष्य सीतायाः भक्तायाः भक्तवत्सलः।
प्रियां प्रोवाच परमां पाणिना मार्ज्जयन्मुखम् ॥३३॥५४॥

सूत्रधार—भक्ता सीताक ऐसन परम सन्ताप देखिये, श्रीरामचन्द्र हाते प्रियाक मुख मोचल। सप्रेम वाणी बुलि, आश्वास कयल।

श्रीराम—हे प्रिये! ओहि बनवासो ऋषिक दर्प देखिये तोहारि त्रास मिलल। ओहि हामाक आगु कोन पतंग। देखु, एहि क्षपो दुष्ट द्विजक दर्प चूर करब। हे प्राणप्रिये! आजु कौतुके देखह, ऋषिक मुण्ड मुण्डओं।

सूत्रधार—तदनन्तर, दशरथ दशने तृण धरिये, परशुरामक आगे पड़ि बोलल।

दशरथ—हे ऋषिराज! हामाक पुत्र दान देहु। तोहारि पावे धरैछि।

सूत्रधार—तथापि परशुराम, क्रोधे दशन चर्विये, राजाक तर्जिये, आपुन कुठारक धिक्कार कय बोलल।

परशुराम—अये कुठार! रेणुका माताक कण्ठ छेदिते तुहो पारल। आजु दशरथ कुमारक प्रति तोहो अति शांत भेलि। आः आजु तोहार धिक्कार, हामार धिक्कार थिक।

सूत्रधार—ओहि बोलि, कुठार तुलि, श्रीरामक निरेखि, बाहुत कामोर देलह। माथा झंकारि कुठार उर्द्ध क खेपिये पुनु लुम्फि धरिकहु, कुठार निरेखि, बाहुत कामोर देलह। शरीर काम्पे।

श्लोकः

विश्वामित्रस्तागत्य भार्गवं प्राह कोपतः।
अरे द्विजकुलाङ्गार? मत शिष्य हन्तुमिच्छसि ॥३४॥५५॥

कौशिक—अये दुष्ट द्विजाधम! हामार परम शिष्य रामचन्द्र, आहेक बधोद्यम तुहु भेलि। अये जत सकति थिक, आजु हामाक युद्ध देहु। तोहारि दर्प चूर करब।

सूत्रधार—परशुराम महाकोपे दण्ड धरल। विश्वामित्र दण्ड धरि धावल। दोहोर दण्ड प्रहारक चोटे चूर भेल। तदनन्तर चवड़ि धरिये, युद्ध कयल। प्रहारक चोटे दुहो चवड़ि छिड़ि परल। तननन्तर बाहु युद्ध कयल। दोहो दोहाक धरिये पड़ि बागरय। दोहो ऋषिर परिधान चर्म खसि पड़ल। विष्णुक अंश अजयवीर्य परशुराम, ताहेक पराक्रम सहये ना परि विश्वामित्र भंग मानि प्राण रक्षा कये पलावल। परशुराम पुनर्वार कुठार तुलि, श्रीरामक गर्जय।

श्लोकः

लक्ष्मणः प्रेक्ष्यतत् दर्पं राममाह सकोपतः।
आज्ञापय बधे चास्य दुर्ज्जनस्याततायिनः ॥३५॥५६॥

सूत्रधार—ऋषिक परम दर्प देखिये, लक्ष्मण कोपे वस्त्र काछिकहु, रामक प्रणाम कय बोलल।

लक्ष्मण—हे रघुनाथ ! ओहि आततायी दुष्ट द्विजक बधे कोन दोष थिक ? हामाक आज्ञा करह, आहेक प्राण छोड़ाओं।

सूत्रधार—ओहि बोलि, धनुक टंकारि ऋषिक समुख होइ, लक्ष्मण दशरथक बोलल।

लक्ष्मण—हे पिता ! ओहि क्षत्रिय-घातकी परम पातकीक कत कातर करैछे। सत्वर अन्तर हव। आहेर मुण्ड मारओं।

सूत्रधार—ताहे पेखि, राम हासि-हासि, लक्ष्मणक पाछु कय बोलल।

श्रीराम—[हासि-हासि] अये भाया ! तुहु वालक, रह रह। ओहि दुष्ट द्विजक हामु दण्ड करवों। तुहु सुखे युद्ध देखह।

श्लोकः

धनुष्टङ्कारमकरोत् भार्गवं भीषयन् प्रभुः।
तिष्ठ तिष्ठेतिं तम्प्राह नयाम्यद्य यमालयम् ॥३६॥५७॥

सूत्रधार—शारंग टंकार करिकहु, श्रीरामचन्द्र, परशुरामक समुखे हुया बोलल।

श्रीराम—अये दुष्ट द्विजाधम ! क्षत्रियसब मारि तोहो गरब करैछे। तोहार माता रेणुकाक काटिये, पाप आचरल। सोहि कथा कहिया हामाक भीति देखाव। रह-रह, आजु तुहु यमपुर देखब। जत सकति थिक, हामाक समुख हुया रह।

सूत्रधार—आहे सामाजिक ! श्रीरामक धनु टंकारे परशुरामक हृदय-बिदारल। परम तरासे सब शरीर काम्पे। हातक परशु खसि पड़ल। प्राणक कातरे जैसे पलावल, आहे लोक, ता देखह-सुनह।

गीत

राग—कानड़ा—परिताल

धावे धरि शारंग रघुनाथ। तरासे ऋषिक कम्पय पाव हात॥
परशु खसल दूर भेल राग। पड़ल दण्डवते रामक आगु॥
राखहु तोहारि अंश हामु राम। दशन खेर धरो करो परनाम ॥२२॥५८॥

सूत्रधार—परशुराम श्रीरामक आगे पड़िये, बहुत कातर कय बोलल।

परशुराम—हे प्रभु श्रीराम ! तोहो परम ईश्वर। हामु तोहारि से अंश। इहा ना जानि, दर्प कयलों। हामाक दोस मरस गोसाइं।

सूत्रधार— भार्गवक कातर देखि, लक्ष्मण हास्य कयल।

श्रीराम—[बिहसि बोल] हे भृगुपति राम ! हामार परम अमोघ वाण तोहारि बध निमित्त उद्यम भेल। इहाक सम्वरण करिते ना पारि।

सूत्रधार—ओहि बोलि, रामचन्द्र बाण आकर्ण पूरल। परशुराम, दसने खेर मुखे लैया तरासे, परि काम्पे, बोलल!

परशुराम—हे स्वामी! तोहार धर्मक पुत्र भेलो। हामाक प्राण-दान देहु।

श्रीराम—[बिहसि बोल] अये भार्गव! तुहु निर्भये रह। तोहार जीव राखलों, किन्तु हामार बाण व्यर्थ नोहे। तोहार स्वर्गपथ छेद करोहों।

सूत्रधार—ओहि बुलि, श्रीराम गगनक लागि बाण खेपल। परशुराम, श्रीरामक आलिंगि बोलल।

परशुराम—हे बाप! तोहारि प्रसादे आजु प्राण रहल। आः पुनर्बार उपजलु।

सूत्रधार—ओहि बुझि, परशुराम, श्रीरामक प्रणामि, तपोवन प्रवेसल।

श्लोकः

निर्ज्जत्य भार्गवं रामं प्रियया सह राघवः।
पुरीं अयोध्यामविशत्, मातृभिः सम्प्रवेशित ॥३७॥५९॥

सूत्रधार—हे सामाजिक! भार्गव रामक जितिये, श्रीरामचन्द्र प्रिया सहिते अयोध्यापुर प्रवेसल। रामक माता कौशल्या श्रीरामक विजय बात सुनिये, अनेक स्त्री-सब सहित परम मंगल गीत आनन्दे बाजना बजाइ, बर कन्याक हात एक ठाम करिकहु, महोत्सवे गृह प्रवेस करावल। आसने बैठाइ रामक सीताक दुर्वाक्षत सिंचारि आशीर्वाद कयकहो, परम उत्सुके कौशल्या आनन्दे नृत्य कयल! रामक ऐसन बिबाह महोत्सव सम्पूर्ण भेल!

श्लोकः

भृशं तुष्टमनारामः सम्प्राप्य परमा प्रियां।
तयाकुर्व्वन् काम केलि रेमे मणिमये गृहे ॥३८॥६०॥

सूत्रधार—त्रिभुवन मोहिनी पदुमिनी जानकी सीताक लभिकहु, श्री रामचन्द्र आनन्दे मगन हुया मनिमय रत्नमन्दिरे प्रवेसिये, सीताये सहित जैसन परम काम केलि कय रहल, ता देखह-सुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गती

राग—कल्णाण—खरमान

ए करु रमया रस केलि।
काँचोरे छोर फोर कुच चुचक, रति कौतुके करावलि ॥ध्रु०॥
नवधर धरिये अधर-मधु धंसल, लोचन मुदि बहु भाइ।
करत सुरत मत्त मातंग गामिनी, कामिनी यामिनी जाइ॥

चंचर चिकुर निकर कर कंकरण, झनकित रतनकु माला ।
श्रम-ज़ल-बिन्दु इन्दु मुह सोहे, मोहे पड़ल बर बाला ॥
परम रसिक गुरु सिरि शुकलध्वज, राजा नृपति प्रधान ।
जयतु जयतु नित्य ईश्वर कृष्णक केलि लीला रस जान ॥२३॥६१॥

सूत्रधार— ऐसन परम रसे केलि कय, सीताक मनोरथ पूरि रामचन्द्र अनुदिने आनन्द मन्दिरे रहल ।

मुक्तिमंगल भटिमा

जय जय ईश्वर राघव राम । पूरल जो जानकी मनकाम ॥
जग जन जीवन सोहि मुरारि । मुकुतिमंगल करतु तोहारि ॥
जोहि पालि पिता केरि आस । सीता सहित खपल बनवास ॥
साधल जय जो राकस मारि । सोहि करतु नित्य मुकुति तोहारि ॥
बालि घालि सुग्रीवक पाट । देलहु जो लये बानरक ठाठ ॥
बान्धल सेतु पयोधि के बारि । सोहि करतु नित्य मुकुति तोहारि ॥
ठाटे बेढ़ल चौदिक लंका । राकस लोक मिलावल शंका ॥
छेदल जो रावरण केरि माथ । मुकुति करतु सोहि रघुनाथ ॥
आवल संगे बानरक ठाठ । राजा भेलि अयोध्याक पाट ॥
जो जानकी मन पुरल मुरारि । मुकुति मंगल करतु तोहारि ॥
रामक परम भकति रस जाना । श्री शुक्लध्वज नृपति प्रधाना ॥
रामक विजय जो करावत नाट । मिलहु ताहेक बैकुण्ठक बाट ॥
रामक चरण शरण लेहु जानि । सब अपराध मरख तोहो स्वामि ॥
कृष्ण-किंकर शंकर बोल । कर नर सब अब हरि हरि रोल ॥२४॥६२॥

श्लोकः

श्रीगोपालपदछत्रच्छायालालसमानसः ।
श्री शुक्लध्वज नृपश्रेष्ठः करयामास नाटकम् ॥३९॥६३॥

विन्दु रेन्ध्र वेद चन्द्र शाके शंकर संज्ञके ।
श्री रामविजय नाम नाटकं विदधेऽधुना ॥४०॥६४॥

श्रीरामविजयं नाम नाटकं पूर्णताङ्गतम् ।
श्रीकृष्ण पापपद्मस्य प्रसादेन सुनिश्चितम् ॥४१॥६५॥

॥ इति राम-विजय नाट्य ॥

सम्पादक की कलम

और यह अंक — शंकरदेव के नाटक— संयुक्तांक है। इसमें छह महीनों के अंक (७-१२) एक साथ ही जा रहे हैं। इसके साथ ही 'प्राच्य-भारती' का एक वर्ष पूरा होता है। ग्राहक बन्धुओं से अनुरोध है कि अगले वर्ष में ग्राहकत्व को जारी रखने के लिए वे पुनः वार्षिक सहयोग राशि दस रुपये (१०·००) भेज कर योग्य सहयोग प्रदान करें।

अगले वर्ष से प्राच्य-भारती' के स्वरूप और व्यवस्था के विषय में कतिपय परिवर्त्तन किये जायेंगे, जिनका समुचित विवरण अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

इस संयुक्तांक में श्रीमन्त शंकरदेव के सभी नाटकों का देवनागरी लिपि में इसी उद्देश्य से लिप्यान्तर और सम्पादन किया गया है जिसमें हिन्दी पाठक ब्रजावली भाषा के इन नाटकों का मर्म स्वयं ग्रहण करें एवं यह विचार कर सकें कि यह ब्रजभाषा के कितना निकट है।

कतिपय इन्हीं शब्दों के साथ यह संयुक्तांक आपके हाथों में समर्पित है।

—कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध'

शंकरदेव तिथि १९७५ ई० स०

प्राच्य भारती के लिए बासुदेव गोस्वामी द्वारा प्राच्य भारती कार्यालय
फैन्सी बाजार, गौहाटी-१ से प्रकाशित एवं मुद्रित ।
सम्पादक : डॉ कृष्णनारायण प्रसाद 'मागध'